

RNI नं. : 7387/63

मुद्रण तिथि : 15-16 सितंबर 2024

डाक प्रेषण तिथि : 15-17 सितंबर 2024

ISSN : 2456-611X

वर्ष : 62

अंक : 11

मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 68

डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2024-26

Office Posted at R.M.S., Bikaner



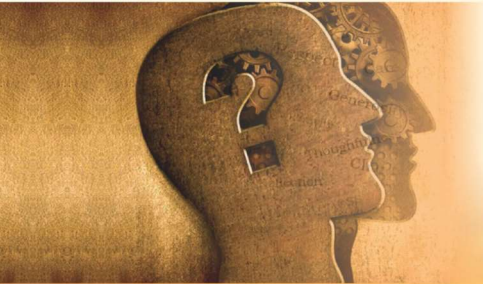
राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणापासक

धार्मिक

पाक्षिक



हम ज्यादा
नजदीक
किसके ?



सुनहरी कलम से....

जैन पराम
चितन पराम

IMPOSSIBLE
आत्म-अविश्वास
घातक



”

दुनिया तुम्हारे पर **विश्वास** करे या न करे,
तुम अपने पर कभी **अविश्वासी** मत होना।
जो अपनी नजर में गिर जाता है उसका उठ पाना
दुरुह है। अपना **आत्मविश्वास** कायम रखो।

”

गुरुभक्ति में यदि पूरी जिंदगी भी लग जाए
तो सौदा सस्ता है।

”

मुखरता से भाषा का गांभीर्य समाप्त हो जाता है।

|| -परम षूय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. ||

॥ आगमवाणी ॥

तवस्स मूलं धिती।

-त्रिशीथचूर्णि (84)

तप का मूल धृति अर्थात् धैर्य है।

Penance is rooted in patience.

तवेण परिसुज्झई।

-उत्तराध्ययन (28/35)

तपस्या से आत्मा पवित्र होती है।

The soul is purified by penance.

तदेव हि तपः कार्यं, दुर्ध्यानं यत्र नो भवेत्।

येन योगा न हीयन्ते, क्षीयन्ते नेन्द्रियाणि च॥

-तपोष्क

तप वैसा ही करना चाहिए, जिसमें दुर्ध्यान न हो, योगों की हानि न हो और इंद्रियाँ क्षीण न हों।

The penance must be such that does not harm the yoga (body, mind and speech), that does not unduly weaken the senses and that does not result in impious (angered and despondent) contemplation.

नन्नत्थ निज्जरट्टयाए तवमहिट्टेज्जा।

-दशवैकालिक (9/4)

केवल कर्मनिर्जरा के लिए तपस्या करनी चाहिए। इहलोक-परलोक व यश-कीर्ति के लिए नहीं।

The penance must be observed for karmic separation only and not for fame and glory in this world and the next.

सीसं जहा सरीरस्स, जहा मूलं दुमस्स च।

सत्त्वस्स साधुधम्मस्स, तहा झाणं विधीयते॥ -इस्सिभासियाइं (22/13)

जैसे मनुष्य शरीर में सिर और वृक्ष में उसकी जड़ उत्कृष्ट या मुख्य है, वैसे ही साधु के समस्त धर्मों का मूल ध्यान है।

As the head is for the body and the roots are for the tree, so the meditation is (most important) amongst all the monastic duties.

थिरकयजोगाणं पुण, मुणीण झाणे सुनिच्चलमणाणं।

गामम्मि जणाइण्णे, सुण्णे ण्णे व ण विसेसो॥

-ध्यानशतक (36)

जिन्होंने अपने योग अर्थात् मन-वचन-काय को स्थिर कर लिया है और जिनका ध्यान में चित्त पूरी तरह निश्चल हो गया है, उन मुनियों के ध्यान के लिए घनी आबादी के ग्राम अथवा शून्य अरण्य में कोई अंतर नहीं रह जाता।

For the purpose of meditating there is no difference between the populated localities and the unpopulated jungle for those who have stabilised their body, mind and speech and achieved the unwavering concentration of their intellect.

साभार- प्राकृत मुक्तावली





राम चमकते भानु समाना

अनुक्रमणिका

धर्मदेशना

08 आत्मोद्धार

-आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा.

11 आत्म-धर्म

-आचार्य श्री नानालाल जी म.सा.

16 आत्मशोधन की प्रक्रिया...

-आचार्य श्री रामलाल जी म.सा.

ज्ञान सार

21 श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला

-कंचन कांकरिया

23 श्रीमद् उत्तराध्ययनसूत्र

-सरिता बैंगानी

विविध

29 बालमन में उपजे ज्ञान

-मोनिका जय ओस्तवाल

44 भीलवाड़ा चातुर्मास समाचार

-महेश नाहटा

संस्कार सौरभ

25 धर्ममूर्ति आनंद कुमारी

-संकलित

32 आत्मयुद्ध से मानवीय चेतना...

-डॉ. आभाकिरण गाँधी

34 परिवर्तन अर्थात् बदलाव

-सुरेश बोरदिया

36 Sole Searching

-Romila

37 क्षमा वीरस्य भूषणम्

-प्रो. सुमेरचंद जैन

39 महत्तम निर्जरा

-तृप्ति सांखला

41 घटती मानवता...

-भाविन जैन 'सजग'

भक्ति रस

38 मिले राम से आकार

-गगन दक

42 महावीरसम राम महान

-गणेश डूंगरवाल

43 सच्चा रिश्ता गुरुभक्ति का

-डॉ. रश्मि जैन

IMPOSSIBLE

आत्म-अविश्वास

घातक

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

आत्म-सुधार के क्षेत्र में सबसे बाधक तत्त्व है **आत्म-अविश्वास**। कई व्यक्ति विश्वास ही नहीं कर पाते कि हमारे में बदलाव हो सकता है, हम अपनी आदतों को सुधार सकते हैं। उन्हें अपने भूत पर दृष्टि डालनी चाहिए। जब वे बचपन में थे, वे किशोर व युवा बने, क्या उन-उन अवस्थाओं में उनमें कोई बदलाव नहीं आया? शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जिसमें रस्तीभर भी परिवर्तन न आया हो। सामान्यतया बदलाव आता ही है। जैसे-जैसे अनुभव बढ़ता है, वैसे-वैसे सुधार भी होते जाते हैं। कुछ सुधार स्वयं होते हैं, कुछ परिस्थितियों से भी हो जाते हैं, वे आत्म संतुष्टिकारक नहीं होते। किंतु जो आत्म-चिंतन पूर्वक प्रबल इच्छा शक्ति से लबरेज हो, अपना बदलाव करने को उद्यत होता है, वह कम समय में बहुत अधिक स्वयं में होने वाले परिवर्तन का अनुभव कर सकता है। संशय में पड़ा रहने वाला व्यापारी विशेष लाभ हासिल नहीं कर पाता। संशय में बने रहने वाला सफलता के किनारों का स्पर्श नहीं कर पाता। संशयशील व्यक्ति स्वतः लड़खड़ाता-भटकता रहता है। वह शरीर से भटके या नहीं, किंतु मन से डोलायमान बना रहता है। दो कदम आगे बढ़ाता है तो वापस दो कदम पीछे खिसकता रहता है। अतः वह वहीं का वहीं अटका रह जाता है। उसको वहाँ अटकाए रखने वाला उसका **आत्म-अविश्वास** ही मुख्य है।

व्यक्ति को चाहिए कि वह आत्म-सुधार के कार्य में पूर्ण विश्वास रखे। यदि कभी सफल न भी हो तो उसे यह नहीं विचारना चाहिए कि सफल हुआ ही नहीं जा सकता। हो सकता है हमारे प्रयत्न में थोड़ी कमी रही हो। ऐसा भी हो सकता है कि हम ऊपर से विश्वास झलकाते रहे हों, किंतु अंतर में कुछ अनिश्चय जैसा बना रहता हो, **'कर तो रहा हूँ, होगा या नहीं'** इस प्रकार के विचार बनते रहे हों। इस प्रकार के विचारों से हमारी सोच हमारे लिए ही अस्पष्ट बनी रहती है। परिणामस्वरूप उस पर जैसा चाहिए सकारात्मक गमन द्रुत गति से नहीं हो पाता। अतः उचित है कि हम अपने विचारों को स्पष्ट करें। क्या-क्या सुधार करना है, उसको नोंद लें। उन पर कैसे कार्य करना है, उसे निर्धारित करें एवं सफलता की राह पर आगे बढ़ चले।

कार्तिक कृष्ण 12, रविवार, 08-11-2015

साभार- ब्रह्माक्षर



IM POSSIBLE

LACK OF SELF-CONFIDENCE IS LETHAL

-Param Pujya Acharya Pravara 1008 Shri Ramlal Ji M.Sa.

In the domain of self-improvement, the most lethal element is *lack of self-confidence*. Many persons just cannot bring themselves to believe that they can change, that they can reform their habits. They should scan their past, their childhood. They became adolescents and then entered their youth—did they not experience any change in those states? There will hardly be a person who would not have undergone a little bit of change at least. Generally, change does occur. And improvements do keep happening as we gain in experience.

Now some improvements take place of their own accord, some come about due to circumstances—these do not make for self-satisfaction though; however, one who is awash with tremendous will-power, on the back of self-introspection, and is bent upon transforming himself, will experience immense changes within in a short space of time. Trapped in self-doubt, he can hardly make it to the shores of success. A trader steeped in doubt cannot post any significant gains. One given to doubt will find himself faltering and straying. He may not stray physically, but mentally he is wavering all the while. He keeps moving two steps ahead, and retreating two steps over again. As such, he is stuck where he is. And mainly, it is his lack of self-confidence that keeps him glued to where he is.

A person ought to have full faith in his efforts at self-improvement. Should he encounter failure sometimes, he must on no count entertain the thought that success will ever elude him. It is quite likely that efforts on his part may be wanting. It is also possible that some want of determination might be lurking inwardly, although he may make a show of great determination on the outside. Or his mind may be assailed with thoughts like, *'I am at it, but will I make it, or won't I'*. These kinds of cogitations only serve to render our own thinking unclear. As a consequence, the current of positivity does not flow through the mind with the desired rapidity. Hence, it is only appropriate that we achieve clarity of thought. Make a note of what improvements need to be brought about. And having decided how efforts might be trained towards them, march ahead down the path of success.

Sunday, 08-11-2015

Courtesy- Brahmakshar 

हम ज्यादा नजदीक किसके ?



सुनहरी कलम से...

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के श्रीमुख से प्रवाहित वचनावलियाँ जन-जन के लिए सदैव ही परिवर्तनकारी सिद्ध होती हैं। इस तथ्य में कोई अतिशयोक्ति नहीं है। आचार्य भगवन् फरमाते हैं कि हम जिस वृत्ति के ज्यादा नजदीक हैं वही वृत्ति हमारा स्वभाव बन जाती है और अनायास ही प्रतिकूल परिस्थितियों में वह वृत्ति छलक ही जाती है। मानवीय गुणों के साथ-साथ दुर्गुण भी हवा में धूल की भाँति, फूल में काँटों की भाँति और शरीर में रोग की भाँति कदम से कदम मिलाकर चलते हैं तथा ये दुर्गुण कब हमारे मानवीय गुणों पर चढ़ाई कर देते हैं, यह हमें पता ही नहीं चलता।

परम पूज्य आचार्य प्रवर ने फरमाया है कि यदि हम अच्छी वृत्तियों के करीब रहेंगे तो दुर्गुणों को हमारे चित्त में, जीवन में, व्यवहार में स्थान नहीं मिलेगा। दुर्गुण इसलिए अपना स्थान बना लेते हैं क्योंकि हमने अभी तक मानवीय गुणों की शुभ प्रवृत्तियों की लक्ष्मण रेखा नहीं खींची। शुभ प्रवृत्ति की लक्ष्मण रेखा अर्थात् व्रत-प्रत्याख्यान ग्रहण करना।

सूक्ष्म जगत् में भावधाराएँ आ रही हैं और उनसे मन का संयोग बनने के कारण हम जिन 18 पापस्थान में पड़ रहे हैं उसी का नतीजा है कि वर्तमान में हम गर्त में जा रहे हैं। यदि व्रत ग्रहण किया होता तो क्षमा, करुणा, अहिंसा, मानवता के नजदीक रहते, परंतु इसके विपरीत स्थिति बनने पर हमारी नजदीकियाँ कहाँ बढ़ जाती हैं यह बताने की आवश्यकता नहीं है।

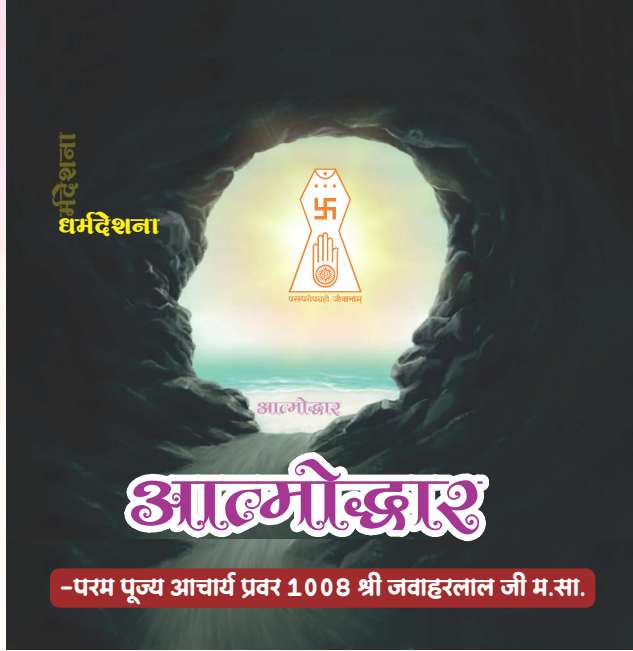
व्रत-प्रत्याख्यान बंधन नहीं हैं। ये तो मर्यादाएँ हैं, जिनसे हम पहाड़ जितने पापों को राई जितना बना सकते हैं। यदि मर्यादा नहीं की गई तो हम स्वयं को ऐसे गर्त में धकेल देंगे जहाँ से पुनः लौटना असंभव जैसा होगा। व्रत ग्रहण करने से हमारा चित्त शुभ प्रवृत्तियों की ओर आकृष्ट होता है।

हाल ही में क्षमापना पर्व हमारे समक्ष उपस्थित हुआ था। हम विश्लेषण करें कि क्या हम 24 घंटे भी प्रतिकूल परिस्थिति में मृदुता, सरलता, करुणा और क्षमा के दायरे में रहे या इस महान पर्वधिराज पर्व के दिन भी हमारी नजदीकी राग-द्वेष या क्रोधादि के साथ रही।

परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर के संयमी जीवन के 50 वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। धन्य-धन्य हैं ऐसे महापुरुष, जिन्होंने 50 वर्ष में एक क्षण भी संयम के साथ समझौता नहीं किया और धन्य है ऐसा श्रीसंघ, जिसे ऐसे संयम के सजग प्रहरी का वरदहस्त प्राप्त हुआ। ऐसे आचार्य भगवन् के सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव 'महत्तम महोत्सव' में हम सभी भेंट स्वरूप व्रतधारी श्रावक समाज की अवधारणा को प्रत्यक्ष में प्रकट करें। महत्तम महोत्सव के 9 प्रकल्पों में से एक प्रकल्प व्रत-विवेक है, जिसमें 'श्रावक से सुश्रावक' बनने का महासप्ताह 21 सितंबर 2024 से प्रारंभ हो रहा है। इस सप्ताह में अपनी भागीदारी निभाकर व्रतधारी बनें, इसी शुभभावना के साथ...।

— सह-संपादिका 🌸🌸🌸

जिन नास्तिकों ने शरीर के साथ ही आत्मा का नाश मान रखा है, उन नास्तिकों के लिए यह उपदेश नहीं है। यह उपदेश आस्तिकों के लिए है। आस्तिक तो इस शरीर को वस्त्र के समान समझते हैं। वस्त्र के बदल जाने से जैसे पुरुष को नहीं बदला जाता,



नहीं रखते? इस दुरात्मा ने विषय, कषाय, दुराचरण और भोग के वश होकर एक-एक योनि में अनंत-अनंत बार चक्कर लगाए हैं। इसने अपने को दुःसह दुःखों का पात्र बनाया है। फिर इससे ज्यादा हानि करने वाला दूसरा कौन है?

उसी प्रकार शरीर के बदलने पर आत्मा नहीं बदलती। सिर काटने वाला वैरी अनित्य शरीर का ही नाश करता है, नित्य आत्मा का नहीं। सिर काटने वाले वैरी से अगर द्वेष न किया जाए तो वह कुछ भी हानि नहीं पहुँचा सकता। यही नहीं बल्कि वह आत्मा की मुक्ति में उसी प्रकार सहायक बन जाता है जैसे गजसुकुमाल मुनि के लिए सोमिल ब्राह्मण सहायक बना था। अतएव तात्त्विक दृष्टि (निश्चयनय) से विचार किया जाए तो दूसरा कोई हमारा सिर नहीं काट सकता। हमारा सिर हम स्वयं ही काट सकते हैं। हमने बुरे कर्म किए होंगे, इसी कारण कोई हमारा सिर काट सकता है। बुरे कर्म न किए हों तो लाख प्रयत्न करने पर भी कोई हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता।

जिसे यह ज्ञान हो जाएगा वह किसी दूसरे से लड़ाई नहीं करेगा, वह तो अपनी आत्मा के साथ जूझेगा। वह कहेगा—“हे आत्मन्! तू अब विज्ञानघन हो जा। तू अपने विज्ञानघन स्वभाव को न समझने के कारण दुःखी हो रहा है।”

अपना सिर काटने वाले को तो छोड़िए, कई पीढ़ी के पूर्वज का सिर काटने वाले से भी लोग बोलना पसंद नहीं करते। आप लोग जब एक पूर्वज का सिर काटने वाले से भी मेल नहीं रखना चाहते और दुश्मनी रखते हैं तो ज्ञानीजन कहते हैं कि अपने दुरात्मा से वैर क्यों

हमारी आत्मा एक तरह से हमारी मित्र भी है और दूसरी तरह से शत्रु भी है। ऐसी स्थिति में हमारा कर्तव्य है कि हम मित्र आत्मा के साथ भेंट करें और शत्रु आत्मा से वैर करें। शत्रु आत्मा हमें अनादिकाल से ऐसे घोर कष्टों में डाले हुए है कि जिसका वर्णन कर सकना भी असंभव है। इस दुरात्मा ने हमारा जितना अहित किया है उतना अहित किसी भी दूसरे वैरी ने नहीं किया। इस दुरात्मा ने ही दूसरे वैरी पैदा किए हैं। अगर मैंने इसे दूर कर दिया तो फिर कोई वैरी ही नहीं रह जाएगा। यह शिक्षा सभी मतों शास्त्रों में मौजूद है। गीता भी कहती है—

उद्धवेदात्मनाऽऽमानं नात्मानमवकादयेत्।

अपनी आत्मा से आत्मा का उद्धार करो। आत्मा से ही आत्मा का उद्धार होगा। जब तक तुम स्वयं तैयार नहीं होओगे, कोई भी तुम्हें नहीं तार सकता। क्योंकि डरपोक या कायरों को न तो किसी की सहायता मिली है और न ही मिलेगी। श्री आचारांगसूत्र में भी कहा है—

पुत्रिका। तुममेव तुमं मितं किं

बहिया मितमिच्छसि।

अर्थात् अरे नर! तेरा असली मित्र तू स्वयं है। बाहरी मित्र की इच्छा क्यों करता है? भारतीयों ने आध्यात्मिक उन्नति खूब की। बहुतों ने समझ लिया कि धर्म के लिए

हमें मेहनत भी न करनी पड़े और ईश्वर हमें सीधा मोक्ष भी भेज दे। यह गलत समझ हानि का कारण बनी। मेहनत से बचने वालों ने धर्म और ईश्वर को समझा ही नहीं है। अगर ईश्वर बिना परिश्रम किए ही तारता होता तो वह दयालु होने के कारण किसी के कहने की राह ही न देखता। अगर वह स्वयं ही सबका उद्धार करता है तो किसी जीव को दुःखी क्यों रहने देता है? क्या वह भी आलसी है? वास्तव में ईश्वर तारणहार तो है, पर जब तुम तिरने के लिए तैयार होओगे तभी वह सहायता करेगा। इस बात को स्पष्ट करते हुए आचार्य कहते हैं—

त्वं तावको जिम) कथं भाविनां ए तव,

त्वामुद्धहन्ति दृढेयेन यदुतवन्ताः

यद्वा हतिव्तवति यजलमेश नून-

मन्तर्गतव्य मन्ताः ऋ किलानुभातः

—कल्याणमंदिर

तू जगत् का उद्धार करने वाला नहीं है। अगर तू उद्धार करने वाला होता तो संसार दुःखी ही न रहता और न मुझे संसार के दुःख भोगने पड़ते। अतएव सिवाय इसके कि तू तारक नहीं है, और क्या कहूँ? मगर एक हिसाब से तू तारक भी है। जब कोई तुझे हृदय में धारण करता है तो तू उसे तार देता है। इस प्रकार तू तारक है भी और नहीं भी है।

आचार्य कहते हैं—हे प्रभो! तू वायु के समान है और मैं मशक के समान। अगर मैं तुझे हृदय में धारण कर लूँ तो तू बिना तारे नहीं रहेगा। अगर तुझे हृदय में धारण न करूँ और तेरे बदले विषय-कषाय आदि पत्थर भर लूँ तो कैसे तारेगा? फिर तेरा क्या दोष है?

वायु मशक को तिराने वाली है, लेकिन वह कहती है कि मुझे अपने भीतर भरो तो मैं तुझे तारूँगी, अन्यथा मेरे भरोसे मत रहना। इसी तरह परमात्मा कहता है मुझे हृदय में धारण कर लो तो मैं संसार सागर के जल में तुम्हें डूबने नहीं दूँगा। अगर ऐसा न किया तो मैं क्या कर सकता हूँ?

मैं अभी कह चुका हूँ कि आत्मा से आत्मा का उद्धार करो। आत्मा से आत्मा का उद्धार किस प्रकार करना चाहिए, यही बात मैं थोड़े में कहता हूँ। अगर आपको अपना उद्धार करना है तो ध्यानपूर्वक मेरी बात सुनो।

अपना उद्धार करना शुरू कर दो। मैं जो मार्ग बतला रहा हूँ उस मार्ग से बड़े से बड़ा विद्वान् भी चल सकता है और बालक भी चल सकता है। पंडित व बालक दोनों के लिए यह मार्ग सुगम है। इस मार्ग का अवलंबन लेंगे तो आपका काम सिद्ध हो जाएगा। यह मार्ग है—

तो सुमरण विन अणि कलियुग में,

अवर ने कोई आधारो।

मैं वारी जाऊँ तो सुमरण पर,

दिन-दिन प्रीति वधारो।

पद्मप्रभु पावन नाम तिहारो,

पतित उधारन हारो। पद्म।।

परम धरम को मरम महारस,

सो तुम नाम उचारो।।

या सम मंत्र नहीं कोऊ दूजो,

त्रिभुवन मोहनगारो।। पद्म.।।

इस प्रकार का प्रयास करो और इस आत्मा को समझा लो कि हे आत्मा! तू इस सर्वव्यापक परमात्मा को छोड़कर दुरात्मा मत बन। तू उस परमात्मा का ध्यान आठों प्रहर कर और उसका जाप चलने दे। उसके जप में आठों प्रहर रहने से तेरे पास पाप भटकेगा ही नहीं।

मैं तो संत-सतियों, श्रावक-श्राविकाओं से कहता हूँ कि जो काम परमात्मा की आज्ञा में है उनके लिए तो कुछ कहना ही नहीं है, लेकिन आज्ञा-बाहर के काम जैसे ही तुम्हारे सामने आएँ वैसे ही तुम परमात्मा की शरण में चले जाओ। वैरी के सामने आते ही शस्त्र छोड़ देना कायरता है। काम, क्रोध आदि ही तुम्हारे असली वैरी हैं। ये जब तुम्हारे पास आएँ तब तुम परमात्मा से प्रार्थना करो—हे प्रभो! इनसे हमें बचाओ। ऐसा करने से वे वैरी तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेंगे।

ईश्वर को अपने हृदय में विराजमान करो।
जब तक शरीर में प्राण है तब तक जैसे निरंतर
श्वास चलता रहता है, उसी प्रकार परमात्मा
का ध्यान भी चलता रहना चाहिए।



मगर कठिनाई यह है कि ऐसे विकट प्रसंग पर लोग परमात्मा को भूल जाते हैं और इसी कारण परमात्मा उनकी रक्षा नहीं कर सकता।

**जो रूठे उसको रूठन दे, पर तू मत रूठे मन बेटा।
एक नारायण नहीं रूठे तो सब के काट लूँ चोटी-पटा।**

आत्मा का मूल गुण चेतना या बुद्धि है। यह गुण आत्मा से अलग नहीं हो सकता, क्योंकि इसके अलग हो जाने का अर्थ है कि अनात्मा यानी आत्मा ही न रहे और ऐसा होता नहीं। आत्मा चेतनारूपी गुण से रहित नहीं बन सकती है। अब आत्मा के इस रूप की दृष्टि परमात्मस्वरूप की दृष्टि से जोड़ दी जाए तो यह आत्मा, जो अनादिकाल से पर-पदार्थों के साथ रमण कर रही है, विनश्वरता से अनश्वरता की ओर गति करने लगेगी। हमारी इस दृष्टि की

- परम पूज्य
आचार्य प्रवर 1008
श्री नानालाल जी म.सा.

इस उक्ति का अर्थ पलट दिया जाए तो बात दूसरी है। नहीं तो यह समझ लो कि जो रूठता है उसे रूठने दो, तू मत रूठ। जिस मशक ने वायु को अपने भीतर भली-भाँति भर लिया है, उस मशक को कोई भी तूफान नहीं डुबो सकता। इसी प्रकार हे आत्मा! काम, क्रोध आदि का कैसा ही तूफान आए तू ईश्वर की शरण मत छोड़।

मित्रो! आत्मा को अमृतमयी बनाओ। यह मत समझो कि माला हाथ में ले लेने से ईश्वर का भजन हो जाएगा। ईश्वर को अपने हृदय में विराजमान करो। जब तक शरीर में प्राण है तब तक जैसे निरंतर श्वास चलता रहता है, उसी प्रकार परमात्मा का ध्यान भी चलता रहना चाहिए। ईश्वर को प्राप्त करने के लिए अपथ्य और तामसिक भोजन तथा खोटी संगति को त्यागकर शुद्ध अंतःकरण से उसका भजन करोगे तो उसे प्राप्त करने की सिद्धि भी अवश्य मिलेगी।

भाइयो! यह समय अपूर्व है। जो अवसर मिला है वह बार-बार नहीं मिलेगा। इसे परमात्मा के ध्यान में लगाओ। परमात्मा के ध्यान से तुम्हें सम्मति प्राप्त होगी। तुम्हारे कुकर्म छूट जाएँगे और तुम्हारे लौकिक व्यवहार में कोई बाधा नहीं आएगी।

साभार- श्री जवाहर किरणावली-12
(बीकानेर-मौरवी-जामनगर के व्याख्यान) ♥♥♥♥

विमुखता का मुख्य कारण आज का विज्ञान भी है, जो केवल भौतिकता से संबंधित है। इसकी प्रगति ने आज के युग को भौतिकता के रंग में अधिकांशतः ढालने का प्रयास किया है और इसी भौतिकता-प्रधान वातावरण से प्रभावित होकर आज का मानव अपनी मूल-शक्ति एवं अपने मूल-स्वरूप को भुला रहा है। वह बाह्य साधनों के ही सहारे से ऊँची उन्नति करना चाहता है, किंतु अपने ही अंतर् में झाँकने और उसे नापने-तौलने का अभ्यास उसका बहुत घट गया है।

आत्म-धर्म

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

धरम जिनेश्वर मुझ हितडे बको, प्यावा प्राण समान।
कडहूँ न बिककँ हो चितकँ नही, कदा अवहंजित ध्यान...।।

इस प्रार्थना को भक्तजन कभी-कभी बड़ी मस्ती से गाते हैं और प्रभु को यह आमंत्रण देते हैं कि धर्म जिनेश्वर आप मेरे हृदय में बसो। हृदय का तात्पर्य आप द्रव्य मन तक ही न समझें। भाव मन से भी उसका संबंध है, क्योंकि द्रव्य मन तो सारे शरीर में व्याप्त है, पर उसका संचालन भाव मन से होता है। भाव मन आत्मा की शक्ति है। उस शक्ति में अनेक तरह की विकृतियाँ हैं। अनादिकाल से आत्मा इन पर-पदार्थों के साथ रमण कर रही है। ये जितने भौतिक तत्त्व दिख रहे हैं उनको आत्मा अपना मानकर चल रही है और उन तत्त्वों के पीछे अपनी समग्र शक्तियों को लगा रही है। उसके परिणामस्वरूप भौतिक तत्त्व के संस्कार, जिन्हें हम कर्म कह सकते हैं, आत्मा के साथ संबद्ध हो जाते हैं।

शास्त्रीय परिभाषा से कर्म संज्ञा एक प्रकार के पुद्गल की ली गई है। वे कर्म भौतिक तत्त्वों के बने हुए हैं। आत्मा के असंख्य प्रदेशों पर जब उस सूक्ष्म कर्मरज का आवरण आ जाता है तो आत्मा की समग्र शक्तियाँ आच्छादित हो जाती हैं, परंतु उनमें से कुछ न कुछ पुरुषार्थ रूप आत्मिक प्रकाश बाहर आता ही रहता है। इसे एक उदाहरण द्वारा और स्पष्ट कर लें।

एक हजार पावर का बल्ब प्रकाशयुक्त है। वह किसी स्थल पर पड़ा हुआ हो और उसके ऊपर एक लाल कपड़ा ढक दिया जाए। वह लाल कपड़ा ढकने से बल्ब के प्रकाश की शक्ति का हनन तो नहीं होगा। वह शक्ति नष्ट तो नहीं होगी, लेकिन कपड़े के आवरण से

दब जाएगी। कपड़े में से छनकर कुछ प्रकाश की शक्ति बाहर आएगी। उस लाल कपड़े से छनकर जो रोशनी बाहर आ रही है वह दीवार पर गिर रही है। मान लीजिए वह दीवार श्वेत वर्ण की है, किंतु उस पर रोशनी की किरण गिर रही है तो वह दीवार कैसी दिखेगी? आपने कभी अनुभव किया होगा! लाल दिखेगी। क्या प्रकाश की किरणें लाल हैं? प्रकाश की किरणें मूल में तो श्वेत हैं, लेकिन उस लाल कपड़े के आवरण से लाल-लाल दिखने लगीं और जिस किसी पदार्थ पर पड़ती हैं तो लालिमा ही उपस्थित करती हैं। यह एकदेशीय उदाहरण है।

सूर्यातिशायि महिमाऽकि मुनीन्द्रलोके

इस उदाहरण के माध्यम से हमें उस आवृत्त आत्मशक्ति को समझना है। हमारी आत्मा की शक्ति हजारों पावर के बल्ब से भी बढ़कर है। उसके पावर का कोई नाप नहीं कर सकता है। अनेक सूर्यों का प्रकाश भी पूर्ण विकसित आत्मा के प्रकाश के तुल्य नहीं हो सकता। जैसा कि मानतुंगाचार्य प्रभु ऋषभदेव की स्तुति करते हुए कहते हैं—‘सूर्यातिशायि महिमाऽकि मुनीन्द्रलोके’ हे प्रभो! आपकी महिमा सूर्यातिशायि है अर्थात् सूर्य के साथ भी आपके प्रकाश की तुलना नहीं की जा सकती। क्योंकि सूर्य के प्रकाश में ताप है, उष्णता है और वह उष्णता ग्रीष्म ऋतु में मनुष्य को तंग कर देती है, लेकिन आपके प्रकाश में वह उष्णता नहीं है। सूर्य का प्रकाश सीमित है, लेकिन आपका प्रकाश असीम है।

वह आत्मा सर्वत्र है। वह आत्मा यहाँ भी है। यहाँ पर भी जितने भाई-बहनें बैठे हुए हैं, उन सब में वह शक्ति है, लेकिन अंतर यह पड़ रहा है कि उस शक्ति के ऊपर लाल वर्ण के कपड़े की तरह मोह की लालिमा छाई हुई है। हमारी आत्मा पर मोह का रंग इतना गहरा चढ़ा हुआ है कि वे किरणें उस मोह रूपी कपड़े में से फूटकर बाहर तो आती हैं, लेकिन मोह की जाति के द्रव्यों से उसी रंग की दिखती हैं।

उस असमर्थता को दूर करने के लिए भगवान का अवलंबन लेते हैं और भगवान को याद करते हैं कि भगवान जैसा हमारा इस मोह के कपड़े से रहित निखालिस स्वरूप है, वह निखालिस स्वरूप मेरे हृदय का बन जाए अर्थात् मेरा भाव मन भी उस मोह की लालिमा से दूर हो जाए। इस दृष्टि से मैं आपको अपने हृदय में बसाना चाहता हूँ।

कवि कह रहा है कि धरम जिनेश्वर मुझ हिवड़े बसो, प्यारा प्राण समान। प्राण के समान मेरे हृदय में बसो। प्राण आपको कितने प्यारे हैं? प्राण आप जानते हैं? शास्त्रीय दृष्टि से यदि आप इस जीवन के स्वरूप को समझें और इसका निर्णय करें तो प्राण का भी कुछ ज्ञान हो जाए।

बूँद-बूँद से सागर भरता

जो शास्त्रीय थोकड़ों का ज्ञान रखते हैं और शास्त्र का वाचन करते हैं उनको तो मालूम है कि प्राण कितने हैं। दस प्राण हैं, किंतु अधिकांश व्यक्ति इन विषयों को नहीं जानते हैं। मैं समझता हूँ कि जयपुर के अंदर मोहनलाल जी मूथा का जो संयोग मिला है वह बहुत ही अच्छा सुयोग है। वे बहुत से थोकड़े जानते हैं और उनमें सिखाने की लगन भी है, लेकिन सीखने वालों की कुछ कमी है। यहाँ का युवक वर्ग धर्म-ध्यान में तो रुचि रखता है, लेकिन अस्थायी रूप से अमुक टाइम में तो कुछ धर्मारोधन किया और फिर चला जाता है जवाहरात का व्यापार करने के लिए। वह भी उनके जीवन के साथ

संबंधित है, लेकिन जितने समय आते हैं उस अवधि के अंदर भी यदि एक-एक बोल भी लें तो एक-एक बोल करते हुए भी कई बोल संग्रहित हो सकते हैं और धीरे-धीरे जीवन के वास्तविक स्वरूप को भी समझ सकते हैं। लेकिन यह प्रयास बहुत कम देखने में आ रहा है।

कुछ युवक थोड़ा-सा धर्म कार्य करते हैं, लेकिन नियमित रूप से जो जीवन बना रखा है उतना-सा करके वे इस कार्य की इतिश्री समझ लेते हैं कि हमने तो कर लिया है और उससे ही तुष्टि पा लेते हैं। तुष्टि पा लेने से ही काम चलने वाला नहीं है। यदि हमें प्रभु को हृदय में बसाना है तो प्राणों को समझना होगा। हमारे दस प्राण हैं उनको हम कभी भूलते हैं क्या? उठते-बैठते अपने प्राणों को याद रखते हैं। बड़े रूप से श्रवण बल प्राण अर्थात् जो श्रवण करने की शक्ति है वह प्राण है। चक्षु बल प्राण अर्थात् चक्षुओं के अंदर जो देखने की शक्ति है वह प्राण है। नाक की जो सूँघने की शक्ति है वह प्राण है। जीभ की चखने की शक्ति प्राण है, स्पर्श की शक्ति स्पर्श बल प्राण है। आप जिस मन के लिए संकेत करना चाहते हैं वह प्राण है। वाचिक शक्ति भी प्राण है। इसी प्रकार काया है, श्वासोच्छ्वास है एवं आयुष्य प्राण है।

इन दस प्राण में आप जीवन की आशा को लेकर चल रहे हैं। इसको कभी भी आप याद नहीं करते हैं। कोई हाथ में माला लेकर 'प्राण-प्राण' की माला फेरता नजर नहीं आता है। क्या कोई फेरता है? नहीं। फिर भी इन प्राणों को भूलते हैं क्या? मैं समझता हूँ कि प्राण प्रत्येक को प्यारे हैं। आप उनको याद नहीं करते हैं लेकिन फिर भी उनको भूलते नहीं हैं। रात-दिन उनका ध्यान रखते हैं। नींद में अनायास यदि कोई चींटी काटती है तो प्रगाढ़ निद्रा वालों की बात छोड़ दें, बाकी जो थोड़ा-सा भी जागृत है वह चींटी को हटा देगा और नींद में ही खुजला लेगा। शरीर की चेष्टाएँ करके उसको ठीक तरह से कर लेगा। स्वप्न में भी और सोते हुए भी अपने प्राणों का ध्यान रखते हैं।

जैसे उन प्राणों का ध्यान इनसान को है उसी तरह से परमात्मा के शिव स्वरूप का ध्यान करना है ताकि मन से राग की स्थिति हट जाए और जब राग दूर हो गया तो हम वीतराग बन सकते हैं। उस दशा को प्राप्त करने के लिए भगवान के मार्ग पर चलते हुए भगवान धर्मनाथ को याद करते हैं। उनके अंदर जो प्रकाश शक्ति है वह अखंड शक्ति है, अजर-अमर शक्ति है, उनकी मृत्यु कभी नहीं होती है। वह स्वयं एक स्थायी शक्ति है। उस स्थायी शक्ति के प्रकाश को अपने हृदय में स्थान दें और उनको आमंत्रण देकर बिठा दें तो हमारी शक्ति भी स्थायी रूप में परिणत हो सकती है, लेकिन इस स्थायी शक्ति को समझने में कभी कुछ बाधाक तत्त्व सामने आते हैं और वे बाधाक तत्त्व किनकी ओर से आते हैं? जो अधूरे व्यक्ति हैं, अपूर्ण व्यक्ति हैं, जिन्होंने जीवन के स्वरूप को समग्र रूप से नहीं समझा। उन्होंने केवल अपनी बुद्धि से कुछ सिद्धांत बनाकर जन साधारण के सामने रख दिए। वे कहते हैं, देखो भाई, जीवन तो है लेकिन जीवन को क्षणिक समझो। वह क्षण-क्षण नष्ट होने वाला है। उन्होंने जीवन की परिभाषा यह कर दी कि यह जीवन प्रति क्षण नष्ट होने वाला है और प्रति क्षण नष्ट हो रहा है।

यदि यह मान लिया जाए तो जीवन की परिभाषा ही कौन समझे और किं जीवनम्? यह जीवन क्या है? इस प्रश्न का हल भी कौन करेगा? प्रश्न करने में पहले समय लगेगा। पहले समय में प्रश्न किया और दूसरे समय में वह स्वयं प्रश्न करने वाला तो रहा नहीं क्योंकि क्षण-क्षण नष्ट हो रहा है तो प्रश्न करने वाला तो पहले समय में ही नष्ट हो गया। दूसरे समय में उत्तर आया तो उत्तर पाने वाला कोई दूसरा व्यक्ति पैदा हो गया और वह उत्तर देते हुए तीसरा हो गया, तो इस तरह से न जीवन की परिभाषा बनती है और न जीवन ही रह पाता है। अतः यह जीवन क्षण-क्षण नष्ट होने वाला नहीं है। जो साधारण जनता को बड़े रूप में यह बतलाया जाता है कि यह तुम्हारा जो शरीर है वह क्षण-क्षण नष्ट हो रहा है, लेकिन सोचना यह है कि शरीर मात्र जीवन नहीं है। जीवन कुछ और है।

जीवन की शक्ति सम्यक् निर्णायक शक्ति है। वह शक्ति क्षण-क्षण नष्ट नहीं होगी। क्योंकि जो शक्ति पहले क्षण में मौजूद थी, वही शक्ति दूसरे-तीसरे समय में मौजूद रहेगी तो वह दूसरे समयों में कार्य का निर्णय कर पाएगी।

आप क्षणिक नहीं, नित्य हैं

बाहरी निर्णायक के रूप में निर्णय (फैसले) करने वाले न्यायाधीश होते हैं। वे न्यायाधीश पूर्व में जैसे थे वैसे ही आज हैं। न्यायाधीश की निर्णायक शक्ति जो कि पाँच वर्ष पहले थी वही निर्णायक शक्ति आज है। आप यदि उदाहरण के रूप में बालक की आत्मा की शक्ति को लेकर निर्णायक शक्ति का निर्णय करेंगे तो जो निर्णायक शक्ति पाँच वर्ष पहले थी, वही निर्णायक शक्ति पाँच वर्ष बाद भी है, बल्कि और परिपक्व हो गई है। आप उस न्यायाधीश को छोड़िए। आपने अपने इस जीवन में बचपन की अवस्था में जिस समय होश सँभाला उस समय आपके सामने कोई ऐसा आकर्षण या कोई ऐसी स्थिति अथवा तत्त्व आया कि जिसको आपने अच्छी तरह से निर्णय करके मस्तिष्क में बैठा लिया तो बचपन में आपने जो निर्णय करके अपने मस्तिष्क में लिया, आपकी वह निर्णायक शक्ति जितनी बचपन में थी, युवावस्था में उससे अधिक आई कि नहीं?

शरीर के अवयव क्षीण हो सकते हैं। बचपन का शरीर जवानी में नहीं रहेगा और जवानी का शरीर वृद्धावस्था में नहीं रहेगा। निर्णायक शक्ति परिवर्तित हो जाती है, लेकिन नष्ट नहीं होती।

आप दस वर्ष पहले इस स्थान पर मिले थे और फिर मिले तो याद आ गया कि अरे यह वही है। तो यह जो निर्णायक तत्त्व है, उस तत्त्व को दुनिया भूल रही है। उस तत्त्व का प्रतिपादन करने में ऐसी विचारधारा काम कर रही है, जो इस आत्म तत्त्व, आंतरिक तत्त्व को क्षण-क्षण मिटने वाला घोषित कर रहा है, किंतु क्षणवाद सर्वथा मानने योग्य नहीं है। ऐसे प्रसंग भी आते हैं जिनमें इस क्षणिकवाद का समुचित उत्तर दिया गया है। उत्तर

किस ढंग से दिया गया है इसका भी एक रोचक प्रसंग है।

एक व्यक्ति कर्जा लेने की दृष्टि से सेठजी के पास पहुँचा। वहाँ से दस हजार रुपए का कर्जा लिया और अपने कार्य को आगे बढ़ाया। उसने सोचा कि अब इस दस हजार के कर्ज को चुकाने में कितना कष्ट का अनुभव करना पड़ेगा। क्या ही अच्छा हो, दस हजार के कर्जे को दबाकर बैठ जाऊँ, लेकिन ऐसे दबा नहीं सकेंगे। ऐसे दबाने के लिए जाऊँगा तो लोग कहेंगे कि यह बेईमान है। अनैतिक जीवन वाला है। दूसरे तरीके से पेश आऊँगा तो लोग कहेंगे कि यह झूठ बोलता है। मुझे दस हजार को दबाने के लिए धार्मिक तरीका अपना लेना चाहिए।

उसकी दृष्टि दौड़ी और वह सोचने लगा कि कौन से धर्म के अंदर ऐसा तरीका है, जिस तरीके से मैं दस हजार को हजम कर जाऊँ। सोचते-सोचते उसका मस्तिष्क वहाँ क्षणिकवाद के सिद्धांत की ओर घूम गया और यह सिद्धांत उसने मस्तिष्क में जमा लिया कि क्षण-क्षण आत्मा नष्ट होती है। इस बात को लेकर उसने सारा प्लान बना लिया। अब वह सेठ रुपया माँगने के लिए आया तो सीधा-सा उत्तर दे दिया कि भाई तुम्हारे रुपए मैंने नहीं लिए। लेने वाला तो उसी समय मर गया। यह संसार तो क्षण-क्षण नष्ट हो रहा है, हमारा सिद्धांत तो यही है। रुपयों को हजम करने का उसने सुंदर तरीका ढूँढ़ लिया। सेठ ने पूछा कि भाई दस हजार रुपया लौटाओ। उसने झट से उत्तर दिया कि आप किस में माँगते हैं दस हजार रुपए? सेठ ने कहा कि आप में। मुझे आपने कब दिए? भाई, आपको दिए और अमुक तिथि को दिए। आपने लिखा-पढ़ी भी करवाई और आपके हस्ताक्षर मौजूद हैं।

उसने कहा कि वह मेरे हस्ताक्षर हैं ही नहीं। मैंने जो धर्म सिद्धांत सीखा है उसके अनुसार हमारी आत्मा और हमारा जीवन क्षण-क्षण नष्ट होता है। जिस समय हस्ताक्षर किए थे वह आत्मा तथा वह जीवन तो अब रहा नहीं। उतने समय में तो न मालूम कितने जीवन और पैदा



हो गए। इस सिद्धांत के अनुसार मैंने हस्ताक्षर नहीं किए और इसी सिद्धांत की दृष्टि से मैं कह रहा हूँ। सेठ हैरान हुआ। क्या करना चाहिए? उसने वकील के माध्यम से दावा कर दिया। न्यायाधीश के सामने निर्णायक शक्ति का प्रश्न आया। न्यायाधीश ने जब उसे पेशी पर बुलाया और कहा कि ये तुम्हारे हस्ताक्षर हैं और हस्ताक्षर के बारे में ऐसा है कि पाँच सौ साल या पाँच हजार वर्ष पूर्व के हस्ताक्षर भी वैज्ञानिक तरीके से पहचाने जा सकते हैं। ये हस्ताक्षर कैसे झुठलाए जा सकते हैं। क्या ये आपके हस्ताक्षर नहीं हैं? उसने कहा कि नहीं। क्योंकि उस समय जो हस्ताक्षर करने वाली आत्मा थी वह तो मर चुकी है और इसलिए अब कर्जा चुकाने की आवश्यकता नहीं है।

उसने न्यायाधीश के दिमाग में भी इस तरह से बात जमाने का प्रयास किया, लेकिन न्यायाधीश की बुद्धि निर्णायक थी। वह तटस्थ दृष्टि से निर्णय करने में सक्षम था। उसने कहा कि आपने जो कुछ कहा वह बहुत ठीक। मैं समझा कि आपका सिद्धांत क्षणिकवाद का है। क्षण-क्षण तत्त्व नष्ट होने वाला है। आप यही बात कह रहे हैं। हाँ, यही बात है तो बहुत अच्छी बात है। मैं उसी बात से निर्णय देता हूँ कि जिस समय कर्जा लिया उसी समय आपकी आत्मा तो नष्ट हो गई। अतः अमुक नंबर की

हवेली पर सरकारी कब्जा कर लिया जाए और उसको नीलामी में बेचकर इस सेठ का कर्जा चुका दिया जाए। जब ये शब्द आए तो वह कहने लगा कि साहब वह हवेली तो मेरी है। आप हवेली पर अधिकार कैसे कर सकते हैं, क्योंकि हवेली का मालिक मौजूद है।

इस पर न्यायाधीश ने कहा—“अरे भाई! तुम्हारी हवेली कहाँ से आई! तुम तो प्रथम समय में ही मर गए। यह हवेली तो कितने वर्ष पहले बनी थी। अतः जो इसको बनाने वाला था वह तो कभी का मर गया। फिर हवेली आपकी कैसे रह गई? आपके सिद्धांत के अनुसार एक क्षण पहले आप दूसरे थे तथा ये तीसरे और फिर चौथे हो रहे हैं। अतः स्पष्ट है कि इस क्षणिकवाद के सिद्धांत के अनुसार यह हवेली आपकी नहीं है। यह तो अब सरकार की होगी। नीलामी के बाद कर्जा चुकाया जाएगा। अब उस क्षणिकवादी ने सोचा कि दस हजार के पीछे पचास हजार की हवेली जा रही है तो कहने लगा कि नहीं ऐसा निर्णय मत करिए। मैं अपनी गलती स्वीकार

करता हूँ। मैंने कर्जा लिया और हस्ताक्षर भी मैंने ही किए। ये मेरे ही हस्ताक्षर हैं। मैं क्षणिकवादी नहीं हूँ। मैं दस हजार रुपए देने को तैयार हूँ। पचास हजार की हवेली नीलाम कर सरकार के अधीन मत कराइए।

बंधुओ! क्षणिकवाद के सिद्धांत के रूप में ऐसे अनेक उदाहरण आते हैं। यदि इस सिद्धांत को मान लें तो जीवन के प्रत्येक क्षण की गतिविधि में अटकाव आ सकते हैं। अतः ऐसे सिद्धांत का संरक्षण निर्णायक शक्ति के लिए हितावह नहीं है। ऐसे सिद्धांत से जीवन का निर्णय नहीं हो पाता। जीवन को हम समझ नहीं सकते। इसलिए जीवन को समझने के लिए इस प्रकार के निरन्वय क्षणिकवाद से नहीं चल सकते। सही निर्णायक शक्ति के लिए सान्वय क्षणिकवाद के साथ ही चल सकते हैं। उस शक्ति के अनुसार ही मनुष्य अनुसंधान करता है और तभी जाकर वर्तमान जीवन में विशुद्धता और भावी जीवन में उज्ज्वलता आ सकती है।

साभार- नानेशवाणी-18 (किं जीवनम्) 🌸🌸🌸

रचनाएँ आमंत्रित

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के प्रत्येक माह के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। आगामी धार्मिक अंक 'महत्तम आनंद' व 'महत्तम भाव' पर आधारित रहेगा।



सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। इन विषयों पर आलेख के साथ-साथ आप अपने अनुभव एवं संस्मरण भी भिजवा सकते हैं। यदि आपके पास श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नंबर हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय संदर्भित आपकी रचनाएँ – लेख, कविता, भजन, कहानी आदि हिंदी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं।

उपर्युक्त विषय के अतिरिक्त अन्य विषयों पर भी आपकी रचनाएँ, संस्मरण, कविताएँ, लेख, कहानियाँ या अन्य कोई ऐसी विषयवस्तु जो सर्वजन हिताय प्रकाशित की जा सकती हो तो इन रचनाओं का भी सहर्ष स्वागत है। आप अपनी रचनाएँ दिए गए मोबाइल व वॉट्सएप्प नंबर या ईमेल द्वारा भी भेज सकते हैं।

-श्रमणोपासक टीम



9314055390



news@sadhumargi.com



आत्मशोधन की प्रक्रिया का स्वरूप

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

कंभव देव ते धुक् केव केव वे...
तवं मे अप्पा दंतो...

चरम तीर्थेश प्रभु महावीर ने भव्य आत्माओं को प्रबोध देते हुए कहा था कि तुम्हें सुखी होना है, इस लोक में ही नहीं, परलोक में भी। इसलिए अपनी आत्मा का दमन करो।

जहाँ दमन की बात होती है वहाँ अपेक्षित होता है कि सामने वाले को दबा दिया जाए, पर यह मनोविज्ञान की दृष्टि से सफल तरीका नहीं है। मनोवैज्ञानिक फ्रॉयड का कहना है कि यदि वृत्तियों को, प्रवृत्तियों को दबाते चले गए तो उनमें एक दिन उफान आएगा। नीचे आग सुलग रही हो और ऊपर रखे बर्तन को मजबूती से ढक दिया जाए तो भीतर बन रही भाप का दबाव बढ़ता चला जाएगा और यदि उसे निकलने का मार्ग नहीं मिला तो वह भाप उस बर्तन को फोड़ सकती है या विस्फोट कर सकती है। इसीलिए ऊपर से बंधन कस दिया तो यह दमन की उचित प्रक्रिया नहीं होगी। इसके लिए प्रभु कहते हैं—

‘तवं मे अप्पा दंतो, कंजमेण तवेण थ।’

आत्मा का श्रेष्ठ दमन वही है, जो संयम और तप द्वारा किया जाए। संयम और तप द्वारा कैसे किया जाए यह तनिक गहराई से समझने की बात है। अतः पहले यह

उप अर्थात् समीप,
वास अर्थात् वसनम्।
जिससे समीप निवास हो जाए
वह है ‘उपवास’।

समझें कि संयम और तप हम किसे मानते हैं? उपवास कर लिया, आर्यंबिल, बेला, तेला, मासखमण कर लिया, तो क्या हो गया तप? उपवास कर लेना—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं का त्याग कर देना अथवा सेवन नहीं करना, इतने मात्र से तप नहीं होगा, भले ही इससे मन की संतुष्टि हो जाए। मनुस्मृति कहती है—भोजन त्याग कर दें, परंतु आत्मा के समीप न पहुँचे तो वह लंघन है। चिंतन करें तो स्पष्ट हो जाएगा कि वह उपवास नहीं है। उप- समीप, वास- वसनम्, जिससे समीप निवास हो जाए वह है ‘उपवास’। समीप निवास कैसे हो? किसके हो? यह भी समझने की बात है। अभी हमारा निवास राग-द्वेष, काम-क्रोध के नजदीक है। यदि कोई विपरीत स्थिति उत्पन्न हो तो काम-क्रोध पहले आएँगे या क्षमा? मृदुता, सरलता पहले उभरेंगी? कौन आएँगे? निश्चय ही वे ही आएँगे जिनके हम नजदीक हैं। इसे यों समझें। यदि आप आतंकवादियों के निकट बैठे हैं

**यदि वृत्तियों को,
प्रवृत्तियों को दबाते चले गए
तो उनमें एक दिन
उफान आएगा।**

तो बचाव के लिए आप उन्हें ही कॉल करेंगे। यदि धर्मिष्ठ के नजदीक हैं तो आपत्ति में धर्मिष्ठ का स्मरण करेंगे। आपने अंतगडसूत्र का वाचन किया होगा, जहाँ कृष्ण वासुदेव के देव को स्मरण का प्रसंग है तो आप समझ जाएँगे कि स्मरण कैसे किया जाता है। यह ढोल-ढमाके बजाकर नहीं किया जाता। क्या देव सोए हैं, जो ढोल-ढमाके की आवाज से उन्हें जगाने की आवश्यकता पड़े? सात्त्विक भावों से कृष्ण वासुदेव ने आराधना की थी। वे केवल लंघन करके नहीं बैठे थे। पौषधोपवास के रूप में उन्होंने पौषधोपवास स्वीकार किया हो, यह भी मैं नहीं कह रहा हूँ। उन्होंने तीन दिन देव-स्मरण में व्यतीत किए। स्मरण अंतर्मन में था, इसलिए देव आ गया। आज भी व्यक्ति चाहते हैं कि देव आएँ, मनोकामना पूर्ण कर दें, लेकिन कहीं ऐसा तो नहीं कि देव आ जाए तो घबरा कर भागने लगें? देव पूछ ले क्या चाहिए तो घिग्घी बंध जाए। तब हम सोचें कि हम तप कैसे रहे हैं? आत्मा से नजदीकी बनी या नहीं? आत्मा की निकटता के लिए तप है, संयम है। दमन की तैयारी हो तो ऐसा नहीं कि पाखंड में लिप्त हो जाएँ और वैसा करने लगें जैसा दूसरे लोग करते हैं। यह नहीं कि देखा-देखी पंचाग्नि तप कर लिया। पैर से वृक्ष पर लटक गए और समझा हमने दमन कर लिया। विचार करें कि मुँह से बोलूँगा तो झगड़ा हो जाएगा, इसलिए मुँह की सिलाई कर लूँ तो इतने मात्र से मौन तो हो सकता है, पर क्या मन की वृत्तियाँ-प्रवृत्तियाँ भी शांत हो सकती हैं? जब तक वृत्तियों-प्रवृत्तियों को जान न लें, उनका ज्ञान न कर लें और संपूर्णतः उनका निरोध न कर लें, तब तक उन्हें मात्र रोक लेने से कोई लाभ नहीं। वह दमन भी नहीं है। आज विविध क्षेत्रों से भाइयों की यह शिकायत आती है कि महाराज! मैं

परेशान हूँ। एक भाई कहने लगा—गुरुदेव! मैं परेशान हूँ, हालाँकि सब कुछ ठीक है। पुत्र, पत्नी, पुत्रवधू सब कहने में हैं, हिलमिलकर रहते हैं। कहीं कोई झमेला नहीं है, सभी एक होकर चल रहे हैं। तब परेशानी का कारण यही है कि कहीं पुण्यवानी में कुछ कमी है। पुण्यवानी है तब तक तो सब ठीक रहता है। नहीं तो..., इस बार आए तो एक रसोई में गोचरी की। साल-दो साल बाद आए तो तीसरी मंजिल पर चढ़ना पड़े। आखिर क्यों चढ़ना पड़े? क्या नीचे की रसोई ऊपर चली गई? नहीं, नीचे की तो ऊपर नहीं गई, पर उसका कुछ भाग ऊपर चला गया। ऐसा क्यों होता है? उसका भी कारण है। जहाँ पुण्यवानी का योग होता है, उस घर में संपत्ति भी वास करती है। संपत्ति का तात्पर्य ही है— साम्य बना रहे। धन बढ़ा, परंतु साम्यभाव अथवा प्रेमभाव नहीं रहा तो वह धन विपत्ति लाने वाला भी बन जाता है। संसार का अनुभव बताता है कि पैसा भी फितूर सिखाता है, दीवारें खड़ी करता है। पैसा नहीं तो झगड़ा कहाँ से होगा? कभी बिना पैसे भी झगड़े हो जाते हैं, यह अलग बात है। अस्तु ये सारी स्थितियाँ नहीं हैं, उसके बावजूद परेशानी क्यों? उस भाई ने बताया मैं चाहता हूँ कि हिंसा न करूँ, गलत प्रवृत्तियों में न पडूँ, फिर भी अनुचित कर बैठता हूँ। सारे संकल्प-विचार भूलकर गलत कार्य कर बैठता हूँ।

उस भाई ने ठीक कहा था। ऐसा बहुत बार होता है कि आपके न चाहने पर भी बहुत से काम बेमन हो जाते हैं। भले आप कहें या न कहें, मन कहता है— मैं ईमानदारी से रहूँ, किसी से बेवजह पाँच पैसे भी न लूँ, पर उलटा हो जाता है। हिसाब-किताब करते समय दूसरी स्थितियाँ बन जाती हैं। आपकी क्या कहें, बड़े-बड़े योगियों के पैर खिसक जाते हैं, खिसक रहे हैं। सत्य तो यह है कि दीवार से ईंट खिसके उससे पहले मन खिसक रहा है। सारा दायित्व मन पर होता है, पर यह मन बेचारा भटकता रहता है। बेचारा करे भी क्या, उस पर दो तरफा मार पड़ती है। पहली मार तो स्थूल जगत् की पड़ती है। हम स्थूल में जीते हैं। व्यक्ति देखता है - शरीर

अव्रत का झरना

मन के संकल्पों को तोड़ता है।

तो कुछ नहीं कर रहा है, मन ही कह रहा है। हम दुर्भावनाग्रस्त होकर मन तक पहुँचते हैं। सोचते हैं—यह बदमाश है, गलत कार्य करवाता है, शांति से बैठने नहीं देता, कभी किसी से लड़ाता है तो कभी किसी से। पर तनिक विचार करें कि क्या हमने कभी मन से पूछा कि भाई! तेरी मेरे से क्या दुश्मनी है जो तू मुझे इधर-उधर भटकाता है, गलत काम कराता है? नहीं पूछा। यह ऊपर का प्रहार था। दूसरी तरफ सूक्ष्म जगत् है। हम सूक्ष्म में अभी पहुँचे नहीं हैं, पर ध्यान में रखिए कि मन के कारण परेशानी नहीं है। मन ने तो हमें बचा लिया है। कहा जाता है कि हिमाचल से गंगा किलोल करती हुई निकली। मृत्युलोक के मनुष्यों ने देखा कि इस तरह गंगा आई तो त्राहि-त्राहि मच जाएगी, भीषण विनाश हो जाएगा। उन्होंने शंकर की उपासना की। शंकर ने अपनी जटा खोलकर गंगा को केशों में बंद कर लिया। ऐसा कहा जाता है। इस दृष्टांत से मन की क्षमता की बात समझने की कोशिश करें। शंकर की क्षमता थी कि उन्होंने गंगा की उच्छृंखलता अथवा उसकी उछल-कूद को नियंत्रित कर उसे एक अनुशासित धारा में परिवर्तित कर प्रवाहित किया। यही स्थिति हमारे मन की भी है। सूक्ष्म जगत् से गंगा की तरह कितनी धाराएँ और झरने बहते हुए मन तक पहुँचते हैं, इसका अनुभव किया कभी? मन के दरवाजे से पीछे क्या-क्या छुपा है, यह जानने की कोशिश की कभी? इनमें से एक दुर्वृत्ति है— अव्रत की। अव्रत अर्थात् व्रत-प्रत्याख्यान नहीं करना। यह वृत्ति उपजकर मन पर गिरती है और मन में आकांक्षाएँ उठने लगती हैं। यदि नीचे आग जल रही हो और ऊपर कड़ाही में तेल या पानी उबल रहा हो तो उस उबलते हुए तेल या पानी में कोई अपना मुँह देखना चाहे तो देख सकेगा क्या? नहीं। किंतु यदि तेल या पानी यूँ ही पड़ा है तो उसमें कोई चाहे तो मुँह देख सकता है। इसी स्थिति को मन की परत में

देखा जा सकता है, पर यदि अव्रत का उद्वेलन है और आकांक्षाएँ जागृत हैं तो व्यक्ति उनमें उलझ जाता है। वह यह जान ही नहीं पाता कि उद्वेलन की वे तरंगें कहाँ से उठी हैं। इसे यों भी समझें। पानी की धार लगातार गिर रही है, नीचे शिलाखंड है तो निश्चित मानिए कि उसका सतत प्रहार और वेग उस शिलाखंड को भी तोड़ सकता है। इसी प्रकार अव्रत का झरना मन के संकल्पों को तोड़ता है, क्योंकि वे मजबूत नहीं होते हैं। ईंटों की दीवार में यदि सीमेंट या चूना नहीं लगाया गया तो उनके गिर जाने का खतरा रहता है, परंतु यदि दीवार की ईंटों को सीमेंट या चूने द्वारा मजबूती से जोड़ दिया जाए तो खतरा नहीं रहता। यदि गारे या मिट्टी-गोबर की दीवार चुनते जाओ तो न पक्का बाँध बँध जाएगा, न पक्की दीवार। जरूरी है कि निर्माण को सीमेंट से मजबूत किया जाए।

आज एक मानसिकता चल पड़ी है कि त्याग, प्रत्याख्यान से कौन बँधे, खुले रहना चाहते हैं। कितने ही भाई कहते हैं कि हमारा मन मजबूत है तो त्याग की क्या जरूरत? अब जरा सोचिए कि एक सज्जन हैं, जो सामायिक में बैठे हैं और एक अन्य सज्जन खुले हैं। अचानक समाचार आए कि शीघ्र ही तुम्हें भींडर बुलाया गया है तो जो सामायिक में है वह तो बैठा रहेगा, पर जो सामायिक में नहीं है, उसका संकल्प टूटेगा या नहीं? व्याख्यान में चाहे कितना ही आनंद आ रहा हो, पर बुलावा आया तो वह झट खाना हो जाएगा। महाराज तो व्याख्यान सुनाएँगे ही, परंतु ये नियम तो है नहीं कि सामायिक वाले ही भीतर प्रवेश कर सकते हैं। वैसा हो जाए तो अच्छा है, तब जिन्हें व्याख्यान सुनना होगा वे ही आएँगे। जिन्हें नहीं सुनना है वो नहीं आएँगे। ऐसे लोग भले दस ही रह जाएँ, पर वे दस भी हैं तो अच्छे। कम से कम उनका तो मन को दृढ़ बनाने का संकल्प बनेगा। अव्रत के झरने को यदि रोका नहीं तो कितना ही पानी आता रहेगा, मन स्थिर नहीं रहेगा, उसमें चंचलता बनी रहेगी। कवि आनंदघन जी प्रार्थना की कड़ियों में कह रहे हैं—

**भय चंचलता हो जे परिणाम नी वे,
द्वेष आवीचक भाव,
व्रेद प्रवृत्ति ओ कवता थाकिये वे,
दोष ऋबोध लव्वाय...।**

भाई शिकायत करता है कि मन चंचल है। कवि कहते हैं कि यही सबसे बड़ा भय है। लोग कहते हैं कि प्रतिष्ठा का भय है, धन का भय है, पर मूल भय है—परिणाम की चंचलता। भय का कारण मन के पीछे आ रहा अव्रत व प्रमाद का झरना है। ऊपर आँखें खुली हैं, पर भीतर आप सोए हैं। कैसे सोए हैं, मालूम है? मेरी बात सुन रहे हैं, पर कैसे सुन रहे हैं? एक कान से सुन रहे हैं और दूसरे कान से निकाल रहे हैं या उसकी अंतर् में पैठ करा रहे हैं? भीतर यदि अर्गला लगी है तो प्रवेश नहीं होगा। अर्गला लगाकर बैठे हैं तो समझ लीजिए कि सोए हैं। कषाय का झरना भी बह रहा है। ये झरने मन पर गिरते हैं। मन क्या करे? हम मन को थपेड़ते हैं, वैसे ही जैसे फुटबॉल को एक खिलाड़ी एक ओर से ठोकर लगाता है तो दूसरी ओर दूसरा खिलाड़ी ठोकर लगाता है। स्थूल और सूक्ष्म की ऐसी ठोकड़ों से मन जर्जरित हो रहा है। ऐसी दशा में चाहें कि मन सध जाए, हमारे नियंत्रण में आ जाए तो आ जाएगा क्या? भगवान महावीर ने कहा— **‘वक्ं मे अप्पा दंतो, ऋंजमेण तवेण य।’** क्यों कहा संयम-तप से दमन करना श्रेष्ठ है? बताना चाहते थे कि पीछे आने वाले झरने अथवा तूफान को रोकने की क्षमता केवल संयम और तप में है, अन्य किसी तरीके से उसे रोका जा सकना संभव नहीं है। शास्त्रों में बताया गया है कि लवण समुद्र से सैकड़ों लहरें उठ रही हैं, जिन्हें हजारों देव दबाते हैं। पूछा गया कि देवों के दबाने से पानी रुक जाता है क्या? उत्तर मिला—नहीं। पूछा गया कि फिर क्या कारण है कि लवण समुद्र का पानी जंबूद्वीप में प्रवेश नहीं कर पाता? तो कहा गया कि जब तक तीर्थंकर भावितात्मा अणगार संयम तप की स्थिति से चल रहे हैं, तब तक जंबूद्वीप में उस पानी का प्रवेश नहीं होगा। द्वारिका के संबंध में बताया जाता है कि जब तक

आर्यबिल तप होता रहा, उसका दहन नहीं हुआ। मंत्रीजी कह रहे थे कि हमारे यहाँ 30 वर्ष से निरंतर आर्यबिल चल रहा है और उसका साक्षात् प्रभाव यह दिखा कि तूफान में एक बार छह इंच मोटी शिलाएँ तक उड़ गईं, पर झंगला के निवासियों को खरोंच तक भी नहीं आई। तप का इस प्रकार साक्षात् प्रभाव दिखाई देता है, फिर भी दुर्बुद्धि अव्रत में आनंद मानता है।

मनुष्य त्याग-प्रत्याख्यान से घबराता है। सोचता है कि यह बंधन है, परंतु वास्तव में ये बंधन नहीं हैं, अपितु मन की मुक्ति है। सत्य तो यह है कि अव्रत बंधन है। अव्रत से हम जकड़े हैं और स्वयं को बचा नहीं पा रहे हैं, किंतु सारा दोष मन पर डाल रहे हैं। मन बेचारा क्या करेगा? सूक्ष्म जगत् से जो भावधाराएँ आ रही हैं, वे यदि आती रहेंगी और फिर उनसे मन का योग बनेगा तो उनमें भी अशुभ परिणति होगी। शराबी की संगत में कुछ दिन रहें तो एक दिन पैर थिरकने लगेंगे। यदि नृत्य करने वाला भी मौजूद है तो तबले पर थपकी लगते ही उसके पैर थिरकेंगे। वैसे ही हमारे मन की दशा है। मन को संयम-तप से नियंत्रित नहीं किया तो तबले की थाप पर थिरकने लगेगा। हम चाहते हैं हमारा मन हम चाहें वैसे हो, परंतु देखना यह होगा कि हमारी संगति किसके साथ है। यदि संगति शराबी की है तो बोटल दिखी नहीं कि वह बहकने लगेगा। लेकिन हम समझते कहाँ हैं! कषाय, प्रमाद और अव्रत की धाराओं को समझना चाहते भी नहीं हैं। ये प्रमुख धाराएँ हैं। यद्यपि इनके साथ जीने वाली अनेक अन्य धाराएँ भी हैं, लेकिन जब तक सूक्ष्म जगत् को जान न लें, इन पर नियंत्रण नहीं कर लें, तब तक मन चंचल परिणामों से रहित नहीं होगा। चंचलता दूर करनी है तो व्रत-प्रत्याख्यान से उन झरनों को रोकना होगा।

**चेतन चेतो रे दस बोल जगत् में
मुश्किल मिलिया रे।**

**चतुर्गति में गेद दड़ी न्युं गोता बहुला खाया रे।
दुर्लभ पायो मिनख जमारी गुरु समझाया रे।**

**रोगी शरीर पर कोई सजावट
सुंदर नहीं लग सकती।
असली सुंदरता तो
मन, बुद्धि, विचारों और
भावनाओं की होती है।**

जब हम चेत जाएँगे तो अपार आनंद होगा, हर्ष होगा। अतः मन को सबल बनाएँ और अव्रत को रोकने का प्रयत्न करें। अब तो व्रत से हथलेवा जोड़ लो, कुँवारपना मत रखो अन्यथा इतनी उमर आ गई। कोई 30-40 वर्ष की उम्र में आ गया फिर भी शादी नहीं हुई और यदि समाज कुछ अनुचित सोचे तो फिर क्या करोगे? वैसे तो कोई कमी नहीं दिखती, गठीला शरीर

है, फिर भी न साधु बना, न गृहस्थी बसाई। लोग सोचेंगे शायद अनुचित संबंध में होगा। यदि इतनी बड़ी उम्र होने के बाद व्रत से हथलेवा नहीं जोड़ा तो फिर संदिग्ध स्थिति से बच नहीं पाओगे। अहिंसा अणुव्रत की पालना इसी दिशा में प्रयास है और यदि थोड़ा-सा ख्याल व विवेक रखें तो इसकी साधना कठिन नहीं होगी। व्रत-आराधना से मन में मजबूती आती है। एक व्रत की आराधना से भी वह झरना रुक सकता है। उसके बाद अन्य झरने भी रुकेंगे। मन में मजबूती आई तो भावों में विशुद्धि आएगी और यदि विधिपूर्वक ऐसा करते रहेंगे तो संयम-तप से श्रेष्ठ दमन भी संभव होगा। फिर प्रभु की अवस्था से साक्षात्कार कर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, निरंजन, निराकार स्वरूप प्राप्त कर पाएँगे।

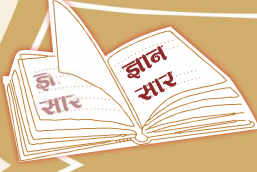
साभार- श्री राम उवाच-5 (मानवता की खोज) ❤️❤️❤️

ज्ञान से खिलता जीवन

प्रश्नोत्तरी

- प्रश्न 1. दूसरे णमोत्थु णं में 'ठाणं संपताणं' के स्थान पर क्या कहना चाहिए?
- प्रश्न 2. बच्चे अगर सामायिक सूत्र के साथ कुछ और भी ज्ञान सीख लें तो वे क्या कर सकते हैं?
- प्रश्न 3. धर्मस्थान में प्रवेश करते ही किन शब्दों का उच्चारण करें?
- प्रश्न 4. पुरुषों व बहनों को ध्यान कैसे करना चाहिए?
- प्रश्न 5. सभी बच्चों ने सामायिक लेने व पारने की विधि अच्छे से समझी तथा साथ ही क्या किया?
- प्रश्न 6. सौरभ की माताजी ने आज बच्चों को क्या सिखाया?
- प्रश्न 7. एक सामायिक का समय कितना होता है?
- प्रश्न 8. क्या बोलकर कायोत्सर्ग खोलें?
- प्रश्न 9. जैन संस्कार पाठ्यक्रम में हर उम्र के व्यक्तियों के लिए कौनसी परीक्षाएँ होती हैं?
- प्रश्न 10. तीनों बच्चों ने रास्ते में आते-आते क्या कर लिया?

नोट - 1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी अंक में से देने हैं।
2. उत्तर के साथ पृष्ठ संख्या भी लिखनी अनिवार्य है।
3. उत्तर किसी खाली पेज पर साफ-सुथरे अक्षरों में लिखकर 5 अक्टूबर 2024 से पूर्व WhatsApp No. 9314055390 पर भेजें।
4. सिर्फ उत्तर ही लिखें, प्रश्न नहीं लिखने हैं।
5. इस प्रतियोगिता में 15 वर्ष तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं।



श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला

15-16 अगस्त 2024 अंक से आगे....

संकलनकर्ता - कंचन कांकरिया, कोलकाता

पंचेंद्रिय-तिर्यच योनिक प्रज्ञापना - पद 1

- प्रश्न 90 तिर्यचयोनिक पंचेंद्रिय कितने प्रकार के हैं?
- उत्तर तिर्यचयोनिक पंचेंद्रिय तीन प्रकार के हैं। यथा- जलचर, स्थलचर और खेचर। (उरपरिसर्प और भुजपरिसर्प स्थलचर के ही उपभेद हैं)
- प्रश्न 91 तिर्यच शब्द का क्या अर्थ है?
- उत्तर जो 'तिर्' यानी टेढ़े-मेढ़े या वक्र, 'अंच' अर्थात् गमन करते हैं, उन्हें तिर्यच कहते हैं।
- प्रश्न 92 जलचर कितने प्रकार के हैं?
- उत्तर जलचर पाँच प्रकार के होते हैं - 1) मत्स्य (मछली) - पानी में ही रहते हैं।
2) कच्छप (कछुए) - पानी और स्थल दोनों में रहते हैं।
3) ग्राह (घड़ियाल, Gavial) - भोजन पचाने के लिए पत्थरों को निगलने का इनका स्वभाव है।
4) मगर (मगरमच्छ) - पानी और स्थल दोनों में रहते हैं। ये पानी में श्वास नहीं लेते हैं, किंतु आवश्यकता होने पर ये लगभग 5-6 घंटे तक पानी में बिना श्वास लिए रह सकते हैं। इनके दाँत जीवनभर गिरते रहते हैं और उनके स्थान पर नए दाँत आ जाते हैं।
5) सुंसुमार।
- प्रश्न 93 मत्स्य कितने प्रकार के हैं?
- उत्तर मत्स्य अनेक प्रकार के होते हैं। यथा- श्लक्ष्ण मत्स्य (बल्ब के समान प्रकाश पैदा करने वाली मछली), युग मत्स्य (मछली की एक जाति), रोहित मत्स्य, तंदुल मत्स्य आदि नाम शास्त्र में दिए गए हैं। इसी प्रकार के अन्य अनेक मत्स्य जानना चाहिए।
- प्रश्न 94 श्रीमद् उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 14, गाथा 35 में भगवान महावीर ने रोहित मत्स्य की किस विशेषता की तुलना मोक्षाभिलाषी साधक से की है?
- उत्तर रोहित जातीय मत्स्य तीक्ष्ण पूँछ एवं दाढ़ आदि से जाल को छेदकर निर्भय स्थान में सुखपूर्वक रहता है। उसी प्रकार मोक्षाभिलाषी महापुरुष भी कामभोग रूपी संसार का त्याग करके निर्भयतापूर्वक मोक्षमार्ग में सुखपूर्वक विचरते हैं।
- प्रश्न 95 जैन कथा साहित्य में तंदुल मत्स्य के उदाहरण से क्या बोध दिया जाता है?
- उत्तर तंदुल यानी चावल अर्थात् चावल जितनी अवगाहना वाला तंदुल मत्स्य मात्र अशुभ विचारों के कारण सातवीं नरक में गया। इस उदाहरण से मानसिक हिंसा से बचने एवं अच्छे/शुभ विचारों में रहने का बोध दिया जाता है।

प्रश्न 96 कच्छप (कछुआ - Tortoise) कितने प्रकार के हैं?

उत्तर कच्छप दो प्रकार के होते हैं। यथा-

- 1) अस्थि कच्छप - इनके शरीर में हड्डियों की बहुलता होती है।
- 2) मांस कच्छप - इनके शरीर में मांस की बहुलता होती है। (हिंद महासागर में पाया जाने वाला मांस कछुआ 400 से 700 किलोग्राम तक का होता है। इतना भारी होते हुए भी यह तैरने में अति कुशल व ताकतवर होता है। इनकी लंबाई 4 इंच से 5 फीट तक होती है। अधिकांश कछुए मांसाहारी होते हैं।)

प्रश्न 97 ग्राह कितने प्रकार के हैं?

उत्तर ग्राह पाँच प्रकार के हैं - 1) दिली, 2) वेढ़ल, 3) मूर्धज, 4) पुलक और 5) सीमाकार - लगभग 3 मीटर लंबा होता है एवं इसकी गति बहुत मंद होती है।

प्रश्न 98 मगर (मगरमच्छ) कितने प्रकार हैं?

उत्तर मगर दो प्रकार के होते हैं। यथा- शौंडमगर और मुष्टमगर। (मुष्टमगर की पाचन शक्ति इतनी तीव्र होती है कि निगले हुए जानवरों की हड्डियाँ तक गला देती है।)

प्रश्न 99 सुंसुमार (शिशुमार, Dolphin) कितने प्रकार के हैं?

उत्तर सुंसुमार एक ही प्रकार और आकार के कहे गए हैं। मनुष्य के बाद इसको ही सबसे बुद्धिमान प्राणी माना जाता है। यह 40 से 50 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तैरता है।

प्रश्न 100 उपर्युक्त सभी प्रकार के जलचर कितने प्रकार के हैं?

उत्तर जलचर दो प्रकार के हैं। यथा- 1) सम्मूर्च्छिम - ये नपुंसक होते हैं तथा

- 2) गर्भज - स्त्री, पुरुष, नपुंसक, तीनों वेद वाले होते हैं।

सभी प्रकार के जलचर पर्याप्तक और अपर्याप्तक दो प्रकार के होते हैं। इनकी 12.5 लाख जाति-कुलकोटि योनि प्रमुख हैं।

प्रश्न 101 स्थलचर कितने प्रकार के हैं?

उत्तर स्थलचर दो प्रकार के हैं। यथा- चतुष्पद स्थलचर और परिसर्प स्थलचर।

प्रश्न 102 चतुष्पद स्थलचर कितने प्रकार के हैं?

उत्तर चतुष्पद स्थलचर चार प्रकार के हैं -

- 1) एकखुरा - पैर के बीच में चीरा जैसा लगा हुआ दिखाई देता है, उसे खुर कहते हैं। इनके पैरों में एक हड्डी होती है तथा ये जुगाली नहीं करते हैं। जैसे- घोड़ा, गधा, कंदलक आदि।
- 2) द्विखुरा - इनके पैरों में दो हड्डी होती है तथा ये जुगाली करते हैं। जैसे- ऊँट, गाय, भैंस, मृग, सुअर, बकरी आदि।
- 3) गंडीपद - इनके पाँव सीधे और मजबूत होते हैं, जो भारी शरीर को सहन कर सकते हैं। इनके पैर में खुर नहीं होता है। जैसे- हाथी, गेंडा आदि।
- 4) सनखपद - नख सहित पैरों वाले। जैसे- शेर, भालू, बिल्ली, कुत्ता, लोमड़ी, खरगोश आदि। इनके पंजे बहुत मजबूत होते हैं, जिससे इन्हें तेज दौड़ने और लड़ने की शक्ति मिलती है।

सभी प्रकार के चतुष्पद स्थलचर सम्मूर्च्छिम और गर्भज, ये दो प्रकार के तथा पर्याप्तक एवं अपर्याप्तक होते हैं। इनकी 10 लाख जाति-कुलकोटि-योनि प्रमुख हैं।

साभार- श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला

-क्रमशः 🌸🌸🌸



श्रीमद् उत्तराध्ययनसूत्र

द्वादश अध्ययन : हरिएसिज्ज

15-16 जुलाई 2024 अंक से आगे...

संकलनकर्ता - सरिता बैंगानी, कोलकाता

ग्यारहवाँ अध्ययन 'बहुस्सुयपुज्ज' कहा जा चुका है। प्रस्तुत अध्ययन हरिकेशबल मुनि के संयमी जीवन से संबंधित है, इसलिए इसका नाम 'हरिएसिज्ज' है। पूर्व अध्ययन के साथ इसका संबंध इस प्रकार है- ग्यारहवें अध्ययन में बहुश्रुत के गुणों का वर्णन है और इस बारहवें अध्ययन में भगवान महावीर स्वामी ने यह प्रकट किया है कि बहुश्रुत को हरिकेशबल मुनि की तरह तपस्या की आराधना करने का प्रयत्न करना चाहिए। हरिकेशबल मुनि चांडाल जाति में उत्पन्न हुए थे फिर भी उन्होंने उत्कृष्ट तप एवं त्याग से संयमी जीवन की निर्मल व निर्दोष साधना की थी। इसका तात्पर्य है कि किसी भी कुल में उत्पन्न होकर चारित्र गुणों की विशिष्टता से कोई भी मनुष्य उच्च कुल वालों का पूजनीय हो सकता है। जैन धर्म में जाति का कोई भेदभाव नहीं है। भगवान महावीर स्वामी ने हरिकेशबल मुनि के जीवन की कुछ घटनाओं के माध्यम से दान क्षेत्र के वास्तविक पात्र-अपात्र कौन हैं? उच्च जाति का स्वरूप कैसा होता है? यज्ञ कैसे किया जाता है? सर्वश्रेष्ठ यज्ञ सामग्री क्या है? कौनसे स्नान से आत्मशुद्धि होती है? - ऐसे विषयों पर सम्यक् निरूपण करके मानव जन पर असीम कृपा की है। साथ ही प्रस्तुत अध्ययन में ब्राह्मण धर्म तथा निर्ग्रंथ प्रवचन के तुलनात्मक वर्णन से सत्य तत्त्व का बोध प्राप्त होता है, जिससे पाठकों को इन दोनों संस्कृतियों का सम्यक् अंतर स्पष्ट हो जाता है।

हरिकेशबल मुनि कौन थे? उन्होंने मुनि जीवन कैसे अपनाया? चांडाल कुल में उनका जन्म क्यों हुआ था? इससे पूर्वजन्म में वे कौन थे? इत्यादि विषयों की जिज्ञासा होना स्वाभाविक है। संक्षेप में हरिकेशबल मुनि के जीवन से जुड़ी घटनाओं का वर्णन -

मथुरा नगरी के 'शंख' राजा संसार से विरक्त होकर मुनि बन गए। एक बार विचरण करते हुए वे हस्तिनापुर पधारे। भिक्षा के लिए पर्यटन करते हुए शंख मुनि एक गली के निकट पहुँचे, जिसका नाम 'हुतवह-रथ्या' था। वह गली ग्रीष्म ऋतु के सूर्य के ताप से तपे हुए लोहे के समान अत्यंत गर्म रहती थी। कदाचित् कोई अनजान व्यक्ति उस गली के मार्ग से चला जाता तो वह उसकी उष्णता से मुर्छित होकर वहीं मर जाता था। सोमदत्त पुरोहित को जैन मुनियों से द्वेष था, इसलिए उसने द्वेषवश मुनि को उसी 'हुतवह-रथ्या' का उष्ण मार्ग बता दिया। शंख मुनि निश्चल भाव से ईर्यासमितिपूर्वक उसी मार्ग पर चल पड़े। लब्धिसंपन्न मुनि के प्रभाव से उनका चरणस्पर्श होते ही वह उष्ण मार्ग एकदम शीतल हो गया। इस कारण मुनिराज धीरे-धीरे उस मार्ग को पार कर रहे थे। यह देख सोमदत्त पुरोहित को आश्चर्य हुआ और वह उसी समय अपने मकान से नीचे उतर कर उसी 'हुतवह-रथ्या' गली से चला। गली का चंदन-सा शीतल स्पर्श जानकर उसके मन में बड़ा पश्चात्ताप हुआ। सोचने लगा— "मुनि के तपोबल के प्रभाव से ही यह मार्ग चंदन-सा शीतल हो गया है।" इस प्रकार विचार कर वह मुनि के चरणों में अपने अनुचित कृत्य के लिए क्षमा माँगने लगा। शंख मुनि ने उसे धर्मोपदेश दिया, जिससे वह संसार से विरक्त हो गया और उनके पास दीक्षा ग्रहण कर ली। मुनि बन जाने

पर सोमदत्त ने ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना-साधना में कोई कसर नहीं रखी, किंतु वह बार-बार सोचता था— 'मैं ब्राह्मण हूँ, अन्य जाति का हूँ।' वह हीन जाति-कुल के लोगों से बात करने, उपदेश देने और उनके घर भिक्षार्थ जाने में संकोच करते थे। वह जाति मद और रूप मद करता रहा। अंतिम समय में उसने दोनों मदों की आलोचना-प्रतिक्रमण नहीं किया, किंतु उसने चरित्र पालन किया था, इसके कारण मरकर वह देवलोक में उत्पन्न हुआ।

देव-आयुष्य को पूर्ण करने के पश्चात् वह जाति मद के फलस्वरूप मृतगंगा के किनारे हरिकेशगोत्रीय चांडालों के अधिपति 'बलकोट्ट' नामक चांडाल की पत्नी 'गौरी' के गर्भ से पुत्र-रूप में उत्पन्न हुआ। उसका नाम 'बल' रखा गया। यही बालक आगे 'हरिकेशबल' कहा गया। पूर्वजन्म में उसने रूप मद किया था, इस कारण वह काला-कलूटा, कुरूप और बेड़ोल हुआ। उसके सभी परिजन उसकी कुरूपता को देखकर घृणा करने लगे। साथ ही ज्यों-ज्यों यह बड़ा होता गया, त्यों-त्यों उसका स्वभाव भी क्रोधी व झगड़ालू बनता गया। वह हर किसी से झगड़ा कर लेता और गालियाँ देता था। माता-पिता भी उसके कट्टु व्यवहार और उग्र स्वभाव से परेशान थे।

एक दिन वसंतोत्सव के अवसर पर सभी लोग एकत्रित हुए। वह अनेक बालकों के साथ खेल खेलने लगा। उपद्रवी हरिकेशबल जब बालकों से लड़ने लगा तब सबने उसे वहाँ से निकालकर दूर बैठा दिया। अपमानित हरिकेशबल अकेला, लाचार और दुःखित होकर बैठ गया। इतने में ही वहाँ एक भयंकर काला विषधर सर्प निकला। चांडालों ने उसे 'दुष्टसर्प है' कहकर मार डाला। थोड़ी देर बाद एक अलशिक (दुम्ही) निर्विष सर्प निकला। लोगों ने उसे विषरहित कहकर छोड़ दिया। इन दोनों घटनाओं को दूर बैठे हरिकेशबल ने देखा। उसने चिंतन किया कि 'प्राणी अपने ही दोषों (व्यवहार) से दुःख पाता है। मेरे सामने ही मेरे बंधुओं ने विषैले साँप को मार दिया और निर्विष की रक्षा की, नहीं मारा। यदि मैं सर्प के समान विषैला होता हूँ तो स्वाभाविक ही है कि लोग मुझे मारेंगे और मेरे व्यवहार के कारण ही मुझसे घृणा करेंगे। मैं सबका अप्रीतिभाजन बना हुआ हूँ। यदि मैं भी दोषरहित बन जाऊँ तो सबका प्रीतिभाजन बन सकता हूँ।' यो चिंतन करते-करते उसे जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया, जिससे उसके समक्ष पूर्व के मनुष्यत्व में कृत जाति मद एवं रूप मद का चित्र तैरने लगा। निर्वेद को प्राप्त होकर संसार के भोगों की असारता और तुच्छता को भली-भाँति समझकर संसार से विरक्त हो गए तथा शरीर से संबंधित समस्त पदार्थों से विरक्त होकर आत्मभाव की साधना में लीन हो गए। मुनि बनकर वे देह आसक्ति एवं देहभाव को छोड़कर तप और संयम का आचरण करने लगे। उत्कृष्ट तपस्या के फलस्वरूप उन्हें कई लब्धियाँ प्राप्त हो गईं। उनमें क्षमा, दया, तितिक्षा (सहनशीलता), तप, संयम, मार्दव (मृदुता, दयाभाव), आर्जव (सरलता) आदि अनेक उत्तम गुण प्रकट हो गए।

- क्रमशः 🍀🍀🍀

सच कहा जाए तो ईश्वरत्व को समझे और माने बिना मनुष्य का अपने चरम विकास को पा लेना शक्य नहीं है। पर के सहारे स्व को प्राप्त नहीं किया जा सकता है। स्व को ढूँढ़ने वाला स्व ही होगा और जिस दिन स्व अपने स्व को ढूँढ़कर पा लेगा, तभी उसका चरम विकास होगा। पर के सहारे तो स्व भी परतंत्र होता है और परतंत्रता की अवस्था में अंतिम विकास तो दूर साधारण विकास साधना भी संभव नहीं।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

जन्म-भूमि की ओर

संस्कार सौरभ

धर्ममूर्ति आनंद कुमारी

15-16 अगस्त 2024 अंक से आगे....

(आप सभी के समक्ष 'धर्ममूर्ति आनंद कुमारी' धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हो रहा है जिसमें आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. की प्रथम शिष्या महासती श्री रंगू जी म.सा. की पट्टधर महासती श्री आनंद कँवर जी म.सा. का प्रेरक जीवन-चारित्र्य प्रतिमाह पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।)

आनंद कुमारी जी का संवत् 1955 का चातुर्मास प्रतापगढ़ में ही वयोवृद्धा आर्या चौथा जी म.सा. की सेवा में हुआ। प्रतापगढ़ संघ आपके सदुपदेशों से काफी परिचित था। अतः आप जैसी उदीयमान महासती को उन्होंने बड़ी उच्चश्रद्धा से देखा। इस बार भी आपका उपदेश सुनने के लिए काफी भीड़ इकट्ठा हो रही थी। पूर्वजन्म के संस्कार कहिए या ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम, आनंद कुमारी जी का विकास दिन दूना रात चौगुना होता गया। चातुर्मास पश्चात् आप सहवर्ती साध्वियों सहित सीधे जावरा पधारीं। जावरा संघ में आपकी सेवा-वृत्ति की छाप पूर्व से ही अंकित थी। महासती श्री चंपा जी आदि सब आपको पाकर निहाल हो गई थीं।

एक दिन की बात है। महासती श्री चंपा जी म.सा. ने आपको किसी काम के लिए उपालंभ दिया। आपने उसे मीठे शरबत की तरह पी लिया। हृदय को कठोर तो लगा, पर कड़वी दवा की तरह मन को समझाकर आप हजम कर गईं। बाद में चंपा जी म.सा. को बड़ा पश्चात्ताप हुआ कि मैंने इसे इतने कठोर शब्द कहे तो भी यह चुपचाप

सहन कर गई, पर मुझे तो सोचना चाहिए था। कठोर शब्द बाण की तरह चुभने वाले होते हैं। साधारण आदमी होता तो शायद ही सहन करता। यह सोचकर आप आनंद कुमारी जी से कहने लगीं—“देखो, अमुक दिन मैंने तुम्हें कठोर शब्द कहे थे, क्या तुम्हें कठोर नहीं लगे? मैंने बड़ी भूल की है। उसके लिए मैं तुमसे माफी चाहती हूँ। तुम तो भाग्यवती हो, जो सहन कर गईं।” आनंद कुमारी जी बोलीं—“हाँ, आपका कहना ठीक है। मुझे आपकी बात कड़वी तो लगी थी, पर वह मैंने अपने लिए हितकर समझकर ग्रहण कर ली। आपने मेरे हित को लक्ष्य में रखकर ही ऐसी बात कही थी। इसमें आपका कोई अपराध नहीं है। आप दिल में किसी प्रकार का पछतावा न करें।” यह बात सुनते ही चंपा जी म.सा. ने आपको छाती से लगा लिया और बड़ी प्रसन्न हुईं।

आनंद कुमारी जी के भद्र स्वभाव ने हर किसी के हृदय को मोह लिया। वे गुणग्राहिणी थीं और कठोर बात में से भी गुण छोट लेती। मानो उनका यह सिद्धांत था—

अप्रियक्य च पथ्यक्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः

अर्थात् अप्रिय किंतु कल्याणकर बात कहने वाला और सुनने वाला दोनों दुर्लभ हैं।

महासती श्री चंपा जी म.सा. की प्रकृति में वृद्धावस्था के कारण कुछ उग्रता आ गई थी। अतः बड़ी महासती आनंद कुमारी जी भी उनसे कुछ बात कहते सँकुचाती थी। नवदीक्षिता साध्वी आनंद कुमारी जी को उनकी जन्मभूमि के क्षेत्र में ले जाना आवश्यक था क्योंकि दीक्षा लेने के बाद अभी तक गई नहीं थी। बड़ी आनंद कुमारी जी म.सा. का नवदीक्षिता आनंद कुमारी जी पर बड़ा स्नेह था। आपने एक दिन उनसे से पूछा— “क्या तुम सोजत चलना चाहती हो?” आपने उत्तर दिया— “हाँ, आपकी कृपा हो जाए तो इच्छा तो है जन्मभूमि को स्पर्श करने की। परंतु बड़ी म.सा. (चंपा जी) आज्ञा देंगी तब न?”

बड़ी आनंद कुमारी जी— “आज्ञा लेना तो तुम्हारे हाथ में है। तुम्हारे कहते ही वे मान जाएँगी।”

नवदीक्षिता आनंद कुमारी जी— “अच्छा, जैसी आपकी आज्ञा। मैं प्रयत्न करूँगी।”

दूसरे ही दिन उन्होंने श्री चंपा जी म.सा. के आगे इस बात का जिज्ञास कर निवेदन किया— “अगर आपकी सेवा में किसी तरह का हर्ज न पड़ता हो और आपकी आज्ञा हो तो पूजनीय बड़े आनंद कुमारी जी म.सा. मुझे अपनी जन्मभूमि सोजत ले जाना चाहती हैं।”

चंपा जी म.सा. — “क्या तुम्हारी भी इच्छा है?”

आनंद कुमारी जी— “हाँ, है तो सही, पर इतने दिन आपसे कहते मुझे संकोच हो रहा था। अब आपने पूछ ही लिया तो मैंने अपने हृदय की बात खोलकर आपके सामने रख दी है।”

आनंद कुमारी जी की विनयशीलता और सरलता ने वयोवृद्धा श्री चंपाजी म.सा. का हृदय जीत लिया। उन्होंने उसी समय कहा— “मेरी तरफ से तुम्हें आज्ञा है। मैं जानती हूँ कि तुम जहाँ जाओगी वहाँ अपने व्यक्तित्व की छाप डाले बिना न रहोगी। मुझे आशा है तुम अपनी

मातृभूमि में जाकर जैनधर्म का अपूर्व प्रचार करोगी। अच्छा, कल ही यहाँ से विहार कर देना।”

बस, अब क्या था! आप अपनी जन्मभूमि की ओर जाने के लिए प्रस्तुत हुईं। जावरा संघ दूर तक विहार सेवा का लाभ लेने गया। क्या स्त्री, क्या पुरुष, सभी धर्म के रंग में रंगे हुए थे। सबने आपको गद्गद् होते हुए विदाई दी। आपका श्रद्धेय बड़ी आनंद कुमारी जी म.सा. के साथ जावरा से विहार करके मार्गवर्ती अनेक क्षेत्रों को पावन करते हुए देवगढ़ पदार्पण हुआ। देवगढ़ के पास पिपली की भयंकर दुर्गमघाटी है। वहाँ से होकर मारवाड़ आना पड़ता है। आपने घाटी उतरते समय बड़ी-बुजुर्ग महासतियों के पात्र वगैरह ले लिए और बड़े धैर्य के साथ उन्हें साहस दिलाते हुए घाटी उतरवाई। अब तो मारवाड़ नीचे बड़ी गहराई में दिख रहा था। वहाँ से मारवाड़ ऐसा लगता है, मानो गहरे गड्ढे में पड़ा हो। काफी साहस के साथ साध्वीवृंद सिरियारी, सारण आदि क्षेत्रों को अपने चरणकमलों से पवित्र करती हुईं सोजत पहुँची।

सोजत आनंद कुमारी जी की जन्मभूमि थी। आप सोजत की धूल में खेली थीं। वहाँ के अन्न-जल से बड़ी हुई थीं। आपको वहाँ के लोगों ने बालिका के रूप में, वधू के रूप में और वैरागिन के रूप में देखा था। आज वही बालिका नवीन रूप में सोजत में उपस्थित हुईं। सोजत की जनता ने आपका भव्य स्वागत किया। उन्होंने आपके गौरव को अपना गौरव समझा। आपकी वाणी सुनकर सोजत की जनता रोमांच से भर गई। सोजत निवासी अपने आपको धन्य मानने लगे। अपनी ही भूमि के छिपे हुए रत्न का सान्निध्य पाकर कौन प्रसन्न नहीं होगा! अपने हाथ से सींचे हुए वृक्ष के फूल की सुगंध पाकर किसे हर्ष नहीं होता!

वास्तव में मातृभूमि का उपकार अवर्णनीय है। जिस भूमि-माता की गोद में बालक्रीड़ाएँ की हैं, जहाँ की जीवनदात्री प्राणवायु मिली है, जहाँ की सुवाणी जीभ में भरी है, क्या वह भूमि कभी चित्त से दूर हो सकती है? एक प्राचीन आचार्य ने कहा है—

“जननी जन्मभूमिश्च क्वर्गादिपि भवीयसी”

अर्थात् माता व मातृभूमि स्वर्ग से बढ़कर हैं।

अमेरिका में डॉ. थॉर नामक एक आध्यात्मिक विद्वान थे। सुना है, एक दिन वह अपने शिष्य के साथ हवा खाने गए। प्रसंगवश शिष्य ने डॉक्टर से पूछा— “कौनसी भूमि अच्छी है, यहाँ की या स्वर्ग की?”

डॉ. थॉर— “जिस भूमि पर तू अपने दोनों पैर टिकाकर खड़ा है, अगर उसे स्वर्ग से बढ़कर न माने तो तेरे समान कोई कृतघ्न नहीं और तू इस भूमि पर पैर रखने का अधिकारी नहीं। जिस भूमि से हमारा अपरिमित कल्याण हो रहा हो, उसे तुच्छ मानकर स्वर्ग का गुणगान करना एक प्रकार का व्यामोह ही है।”

यद्यपि आनंद कुमारी जी की मातृभूमि सारा भारतवर्ष है, फिर भी भारतवर्ष में सोजत विशेष है, जो आपका जन्म स्थान था। उसका आप पर विशेष ऋण भी माना जा सकता है। एक कवि ने ठीक ही कहा है—

**मेरी प्यारी जन्मभूमि है, इस विचार से जिसका मन।
नहीं उमंगित हुआ वृथा है, उसका पृथ्वी पर जीवन।**

यद्यपि आप सांसारिक बंधनों को काटकर साध्वी हो चुकी थीं, तथापि मातृभूमि का ऋण अब भी आप अपने ऊपर चढ़ा समझती हैं। साधु-साध्वियों पर भी मातृभूमि का ऋण है। धर्माचरण करने वाले उच्च पुरुषों के लिए पृथ्वीकाय का महान उपकार है, यह बात शास्त्रों में है। मगर इस ऋण को चुकाने का गृहस्थों का तरीका अलग ही है, तो साधुओं का तरीका और ही है। साधु-साध्वी वहाँ की जनता को धर्मोपदेश देकर फैले हुए अन्याय, अधर्म व दुर्व्यसनों को मिटाकर वहाँ का अज्ञान दूर करके उस ऋण से बरी हो जाते हैं।

सोजत शहर पधारने पर आपके उपदेशों से जनता में बहुत धर्म जागृति हुई। जनता के जीवन में धर्म के संस्कार गहरे हो गए। आप सोजत से आस-पास के क्षेत्रों में विहार कर गई थीं, लेकिन सोजत की जनता पर आपने अपनी वाणी का जादू-सा असर छोड़ रखा था। चातुर्मास नजदीक आ रहा था। सोजत की धर्मपिपासु जनता ने और

खासकर आपके सांसारिक माता-पिता वगैरह ने सोजत में चातुर्मास करने का आग्रह किया।

सोजत में चातुर्मास करने की इच्छा थी ही। महासती बड़ी आनंद कुमारी जी म.सा. ने मौका देखकर सं. 1956 के चातुर्मास की विनती स्वीकार कर ली।

सोजत चातुर्मास में अब आप एक साध्वी के रूप में थीं। आपके पूर्व परिचित संबंधी व आस-पास के गाँव के लोग आते और आपकी शांत मुखमुद्रा व विवेकशीलता देखकर श्रद्धा से झुक जाते। आपके ससुराल वाले रामस्नेही होने पर भी अब जैन साधु-साध्वियों पर काफी भक्ति-भाव रखते थे। उन्होंने भी अपने घर की अमूल्य निधि साध्वी आनंद कुमारी जी से काफी सत्संग सुना और आपके वैराग्यमय उपदेशों को सुनकर वे समझते कि हम तो इन्हें पाकर कृतार्थ हो गए हैं। आपकी भावुकता ने सोजत के निवासियों को उपदेश द्वारा जागृत करने में काफी साथ दिया। आपके माता-पिता व बहनें आदि सेवा करने आते। उन्हें जब आपकी मीठी वाणी श्रवण का लाभ मिला तो वे अपना अहोभाग्य समझने लगे। अपने ही घर में लगी हुई बेल को फली-फूली देखकर किसका मन प्रसन्न हुए बिना रह सकता है! आनंद कुमारी जी की माताजी ने इस चातुर्मास में अपना जीवन ही प्रायः निवृत्तिमय बना लिया था। घर का काम-काज करने वाली पुत्रवधुएँ थीं ही। अमृत कुँवर बाई मौका देखकर घर के झंझटों से काफी दूर हो गईं। उन्होंने सोचा— “मेरी पुत्री ने पूर्ण त्याग का मार्ग अपनाया है, वह बड़ा ही सुंदर है, परंतु क्या मेरी इतनी भी शक्ति नहीं कि मैं पूर्णतः त्याग-मार्ग ग्रहण करूँ! अतः जहाँ तक हो सके आश्रव के कार्यों से दूर रहकर अपना जीवन संवर में बिताऊँ।”

इस भावना के अनुरूप अमृत कुँवर बाई प्रायः आनंद कुमारी जी की सेवा व सत्संग में ही दिन बितातीं। उन्होंने चातुर्मास में 70 दया व पौषध आदि किए। मीठी बेल की जड़ भी मीठी होती है। आपकी पुत्री में धर्म की जो मिठास थी वह माताजी से ही तो मिली थी। आपके

कुटुंब वालों ने भी ज्ञान-ध्यान का काफी लाभ उठाया। सोजत तो उस समय धर्म-ध्यान और तपश्चरण का गढ़ बन गया था। सभी लोग आपके गुणों की प्रशंसा करते थे।

एक बार रामस्नेही साधु भी आपके दर्शन करने आए। उन्होंने आनंद कुमारी जी की शांतमूर्ति तथा उनके हृदय में ज्ञान की नदी बहती देखकर बड़ी प्रसन्नता प्रकट की और आपको पहचानकर कहा— “आप तो सोजत की ही हैं। इस भूमि का भी ध्यान रखना। हम आज आप जैसी महासती के दर्शन पाकर कृतार्थ हो गए हैं। धन्य हैं आपके माता-पिता! ऐसी पवित्रात्मा को पुत्री रूप में पाकर उन्होंने अपना जन्म सफल कर लिया। आपकी सदबुद्धि को धन्य है, जो आपने अपने आत्मकल्याण का सुंदर मार्ग अपनाया।”

तात्पर्य यह है कि जैन व अजैन जनता पर आपका प्रभाव पड़ चुका था। आपके निर्मल गुणों की सुगंध सोजत में सर्वत्र फैल चुकी थी।

एक बार कई रामस्नेही साधु, जो आपके परिचित थे, आपके दर्शनार्थ उपाश्रय में आए। उन्होंने देखा कि एक साध्वी एक ओर बैठी हैं और आप दूसरी ओर बैठी हैं। जाने का रास्ता दोनों साध्वियों के बीच में से था। अब वे पेशोपेश में पड़ गए। आखिरकार कहने लगे— “हमें आज आपके दर्शन का महान लाभ हुआ है, पर आप दोनों के बीच में से होकर निकलने की हमारी तो क्या देवों की भी ताकत नहीं है। आप महाभाग्यवती, शीलवती सतियाँ हैं। हम आपके मार्ग को काटकर नहीं जा सकते। कृपया आप हमें मार्ग देकर कृतार्थ कीजिए।” आपने रास्ता छोड़ दिया और महासतीजी के पास आ बैठीं। उनकी खुशी का पार न रहा। उन्होंने आपकी सुख-शांति की पृच्छा की और कुछ मार्गदर्शन लेकर विदा हुए।

इस तरह रामस्नेही साधुओं पर आपकी इतनी छाप पड़ गई कि उन्हें आप जोधपुर, शाहपुरा, ब्यावर आदि में जब कभी मिलतीं तो वे तुरंत आपको पहचान जाते और वंदन करके प्रसन्नता व्यक्त करते।

सोजत का चातुर्मास बड़े ही आनंद से पूर्ण हुआ।

चातुर्मास की पूर्णाहुति में उपदेश सुनने वाले लोगों की संख्या काफी बढ़ गई थी। सोजत के लोग बड़ी श्रद्धा-भक्ति के साथ चातुर्मास उठने के दूसरे दिन विहार का लाभ लेकर दूर-दूर तक पहुँचाने गए। सभी लोगों के मुँह पर आपके गुणों की प्रशंसा सुनाई दे रही थी।

सोजत से विहार करके मारवाड़ के छोटे-छोटे गाँवों में धर्म की दुंदुभि बजाते हुए आप साध्वीवर्याओं का जेठाणा पदार्पण हुआ। जेठाणा के लोगों की धर्म-भावना उच्च थी। उन्होंने महासतीजी की सेवा में चातुर्मास प्रदान करने हेतु विनती की। महासती श्री बड़ी आनंद कुमारी जी ने वहाँ के लोगों में धर्म की लगन देख और उपकार समझकर चातुर्मास करने की स्वीकृति दे दी। इस तरह सं. 1957 का चातुर्मास जेठाणा में किया। छोटा संघ होने पर भी जेठाणा ग्राम की धर्मश्रद्धा और साधु-साध्वियों के प्रति भक्तिभाव सराहनीय रहा। आनंद कुमारी जी जैसी महासती की वाणी का रस पाकर जेठाणा संघ और मजबूत हो गया।

साभार- धर्ममूर्ति आनंद कुमारी
-क्रमशः ❀❀❀

ए आज हम भी चाहते हैं कि धर्म ऐसा कर दे, वैसा कर दे। लेकिन जब परीक्षा में खरे उतरेंगे तभी तो रिजल्ट आएगा। हमको तो वार-त्योहार, शादी-विवाह, बाहर आदि की छूट चाहिए। सालभर पढ़े नहीं, परीक्षा दी नहीं, परीक्षा के समय बीमार होकर सो गए तो उसका रिजल्ट नहीं मिलने वाला है। रिजल्ट उन्हें मिलता है जो मैदान में डट जाते हैं। घर में दुबककर बैठ जाएँ, मैदान में आते संकुचित हों तो रिजल्ट कैसे मिलेगा? ये बातें श्रावक-धर्म के अनुकूल नहीं हैं। श्रावक संवेग लेकर चलता है तो वह घर में दुबककर बैठ नहीं जाता। समय आने पर मैदान में भी उतरता है। ऐसे एक नहीं, अनेक उदाहरण हमारे शास्त्रों में हैं।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.



बालमन में उपजे ज्ञान

-मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

जय जिनेंद्र सा!

‘बालमन में उपजे ज्ञान’ धारावाहिक लंबे समय से आप सभी के सामने प्रस्तुत किया जा रहा है। इसके माध्यम से बच्चों ने कई धार्मिक व सामाजिक बिंदुओं को समझा और उन्हें अपने जीवन में उतारा। जीवन परिवर्तन की इसी कड़ी में आगे का धारावाहिक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है।

(सभी बच्चे सौरभ के घर में प्रवेश करते हुए)

जय जिनेंद्र, आंटी!

सौरभ की माताजी- जय जिनेंद्र, बच्चो! आज तो आप सभी पाठ याद करके आए हो न?

नितिन-

बिलकुल आंटी! तभी तो हम तीनों साथ आए हैं और आते-आते रावते में हमने एक बार Revision भी कर लिया।

सौरभ-

आज जल्दी-जल्दी हम सभी अपने-अपने पाठ सुना देते हैं। फिर मम्मी आज हमें सामायिक लेने एवं पारणे की विधि सिखाने वाली हैं।

नीलिमा-

इसका मतलब आज हमारा सामायिक सूत्र Complete हो जाएगा।

पंकज-

यह सुनकर ऐसा लग रहा है जैसे आज हमने कोई बहुत बड़ा Exam पास कर लिया हो।

सौरभ की माताजी-

अगर आप सभी सामायिक सूत्र के साथ कुछ और भी ज्ञान सामग्री याद कर लें तो आप धार्मिक Exam भी Pass कर सकते हैं।

(सभी बच्चे आश्चर्य से एक-दूसरे को ताकने लगे)

सौरभ की माताजी-

जैन संस्कार पाठ्यक्रम में हर उम्र के व्यक्तियों के लिए लिखित व मौखिक परीक्षाएँ होती हैं, जो आप सभी भी दे सकते हैं।

(सभी बच्चे ये अनुकन बहुत खुश हुए)

सौरभ-

आज हम सब सामायिक लेने और पानने की विधि सीखेंगे, जिससे कि पर्युषण पर्व में हम स्वयं सामायिक ले पाएँ और पाल पाएँ।

सामायिक लेने की विधि

- निस्सीहि-निस्सीहि** : सामायिक स्थान (धर्म स्थान) में प्रवेश करते ही निस्सीहि-निस्सीहि शब्द का उच्चारण करें अर्थात् मैं पाप कर्मों का निषेध करता हूँ।
- प्रतिलेखन** : स्थान पूँज कर आसन, मुखवस्त्रिका, वस्त्र आदि धार्मिक उपकरणों का प्रतिलेखन करें एवं आसन बिछाएँ।
- वस्त्र परिवर्तन** : भाइयों के लिए चोलपट्टा (चोलपट्टे की लंबाई पैर के टखने तक रहे) या धोती व चादर तथा मुँहपत्ती धारण करें और महिलाएँ सादे वस्त्र पहनें एवं मुँहपत्ती लगावें।
- वंदन** : तिक्रुत्तो के पाठ से तीन बार विधि सहित वंदना। संत-सतियाँजी म.सा. विराजमान हों तो उनकी ओर मुँह करके और न हों तो उत्तर या पूर्व दिशा में मुँह करके वंदनीय के दाहिने कान से बाएँ कान की तरफ अर्थात् अपने बाएँ से दाएँ कान की ओर तीन बार प्रदक्षिणा करें।
- नमस्कार महामंत्र, इच्छाकारेणं, तस्स उत्तरी का पाठ** : तस्स उत्तरी का पाठ बोलते समय ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं तक का पाठ उच्चारण पूर्वक बोलें, फिर 'अप्पाणं वोसिरामि' शब्द मन में बोलना चाहिए।
- कायोत्सर्ग** : शरीर की चंचलता से रहित होकर एक लोगस्स का कायोत्सर्ग करें। 'नमो अरिहंताणं' बोलकर कायोत्सर्ग खोलें।

कायोत्सर्ग करने की विधि

:: खड़े होकर कायोत्सर्ग करने की विधि ::

- दोनों पैरों के अग्रभाग में चार अंगुल एवं पीछे के भाग में उससे कुछ कम अंतर रखते हुए घुटनों को बिना मोड़े सीधे खड़े रहना।
- आँखों को बंद करना या थोड़ी-सी खुली रखकर नासिका के अग्र भाग पर टिकाना।
- गर्दन हलकी-सी झुकी हुई रखना।
- हथेलियों को बिना तनाव के खुली रखते हुए हाथों को नीचे लटकाए रखना।
- तस्स उत्तरी का पाठ बोलते हुए ध्यान की मुद्रा बनाना। 'अप्पाणं वोसिरामि' बोलने से पहले काया को स्थिर कर कायोत्सर्ग करना चाहिए।

:: बैठकर कायोत्सर्ग करने की विधि ::

सुखासन में बैठकर रीढ़ की हड्डी को सीधी रखकर नाभि के पास बाँयी हथेली पर दाँयी हथेली रखकर कायोत्सर्ग करना चाहिए।

नोट - पुरुषों को खड़े होकर ही ध्यान करना चाहिए। शारीरिक अनुकूलता न होने आदि कारणों से जो खड़े-खड़े ध्यान न कर सकें वे बैठकर भी कर सकते हैं। बहनों को बैठकर ही ध्यान करना चाहिए।

7. नमस्कार मंत्र, कायोत्सर्ग शुद्धि का पाठ एवं एक लोगरस का पाठ बोलें।
8. **प्रत्याख्यान :** करेमि भंते के पाठ से सामायिक व्रत के प्रत्याख्यान। (साधु-साध्वी या बड़े श्रावक-श्राविका जो सामायिक में हैं, उनसे ग्रहण करें। न हों तो स्वयं लेवें।) यहाँ ध्यान रखने योग्य है कि यदि साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका विशेष ज्ञानार्जन-प्रवचन आदि में संलग्न हों तो उन्हें अंतराय न देते हुए स्वयं प्रत्याख्यान ले लेवें। करेमि भंते के पाठ में जहाँ 'जावनियमं' शब्द आए उसके स्थान पर जितनी सामायिक लेनी हो उतने मुहूर्त्त उपरांत बोलकर आगे का पाठ पूर्ण करें।
9. **णमोत्थु णं (शक्रस्तव) देने की विधि :** आसन से नीचे बैठकर बायाँ घुटना ऊँचा कर, दोनों कोहनियों को पेट पर लगाकर, हाथ जोड़कर, मस्तक झुकाकर, मस्तक पर दोनों हाथों को रखना चाहिए। विराम स्थल का ध्यान रखते हुए भाव सहित दो बार णमोत्थु णं का पाठ बोलना चाहिए। दूसरे णमोत्थु णं में 'ठाणं संपताणं' के स्थान पर 'ठाणं संपाविउकामाणं' कहना। दो णमोत्थु णं के बाद अपने धर्मगुरु धर्माचार्य का स्तुति पाठ कहें।

नोट - एक सामायिक का समय 48 मिनट (1 मुहूर्त्त) का होता है।

सामायिक पारने की विधि

1. नमस्कार महामंत्र, इच्छाकारेणं, तस्स उत्तरी का पाठ (अप्पाणं वोसरामि मन में कहना)।
2. दो लोगरस का ध्यान करें। 'नमो अरिहंताणं' कहकर ध्यान पारना।
3. नमस्कार महामंत्र, कायोत्सर्ग शुद्धि का पाठ बोलकर एक लोगरस का पाठ प्रकट बोलना।
4. दो बार णमोत्थु णं व धर्मगुरु धर्माचार्य का स्तुति पाठ पूर्व विधि के अनुसार। सामायिक पारने का पाठ 'एयस्स नवमस्स' बोलें एवं तीन बार नमस्कार मंत्र बोलकर सामायिक पारना।

सभी बच्चों ने सामायिक लेने व पारने की विधि अच्छी तरह से समझी तथा साथ ही कुछ प्रतिज्ञाएँ भी कीं।

प्र ति ज्ञा

1. कम से कम 21 दिनों तक विधिवत् सामायिक लेना व पालना।
2. सामायिक के दोषों को समझकर टालने की कोशिश करना।
3. उपयोगपूर्वक (मन लगाकर) सामायिक करना।

धर्म के प्रति श्रद्धा, धर्म का आचरण और धर्म की दिशा में पुरुषार्थ - ये तीनों कार्य संवेगों की कुशल संयोजना द्वारा ही संभव हैं। जो ऐसा कर पाता है उसे तो अनुर धर्म की प्राप्ति होती ही है, वह समाज को भी धर्माचरण के अनुशासित मार्ग पर अग्रसर कर जाता है। भगवान महावीर ने संवेगों की इस महिमा का स्वयं ही बखान किया है। जब उनसे प्रश्न किया गया - "संवेगेण भंते, जीवे किं जणयई" अर्थात् संवेग से किस फल की प्राप्ति होती है? तब भगवान ने उत्तर दिया - "अनुत्तर धर्म श्रद्धा की प्राप्ति होती है।" यदि किसी व्यक्ति में धर्म के प्रति अनुत्तर श्रद्धा दिखाई दे तो उसे धर्म की दिशा में पुरुषार्थ करने वाला मान लेना चाहिए। ऐसा पुरुषार्थ परम दुर्लभ है।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.



आत्मयुद्ध से मानवीय चेतना का विकास

- डॉ. आभाकिरण गाँधी, धागड़मऊ

- म - मन् का
- ह - हनन कर
- त्त - तल्लीन बनें
- म - महावीर प्रभु के ध्यान में मनन कर
- नि - निहारें अपने आपको
- र - रहें सदा
- ज - जागरूक
- श - शम तत्त्व के स्वरूप में

हमारी आत्मा अनादिकाल से संसार परिभ्रमण कर रही है। धर्म का सच्चा स्वरूप जब तक हृदयंगम नहीं होता तब तक सकाम निर्जरा नहीं होती। निर्जरा के अभाव में संसार परिभ्रमण नहीं मिटता। संसार को घटाना है तो निर्जरा की प्रक्रिया से चलना होगा। जैसे तालाब का पानी

सूखता है तो मिट्टी सूखकर उसमें दरारें पड़ जाती हैं। वैसे ही जब कर्मनिर्जरा की प्रक्रिया चलती है तो संसार के ममत्व में दरारें पड़ जाती हैं। जब भी हम अपने जीवन तत्त्व को निहारते हैं तब प्रकृति और परमात्मा के प्रति अहोभाव व साधुवाद से भर उठते हैं। जीवन की सफलता, सफलता का बुनियादी लक्ष्य है, पर जीवन की सार्थकता, सफलता की कसौटी है। जीवन सफल भी हो और सार्थक भी। सफलता को जब तक सार्थकता की चेतना नहीं दी जाएगी तब तक सफलता खुदगर्ज हो सकती है। जीवन की सार्थकता एक ऐसी पहल है जो सफलता को स्वार्थ त्याग और निष्काम कर्मयोग की प्रेरणा देती है।

मनुष्य का सबसे उदात्त गुण है पराक्रम। विक्रम और पराक्रम मनुष्य के विशिष्ट गुण हैं। जहाँ विक्रम और पराक्रम होगा, वहाँ अभिक्रम निश्चित होगा। **अभिक्रमो रणे यानम्** अर्थात् युद्ध की दिशा में प्रस्थान। यह पराक्रम का लक्षण है। प्रश्न हो सकता है कि युद्ध कहाँ करें? युद्धभूमि कौनसी हो? युद्ध किनसे करें? युद्ध कैसे करें?

हमारे दो जगत् हैं - भीतरी जगत् और बाह्य जगत्। जिन लोगों ने भीतरी जगत् का साक्षात्कार नहीं किया, वे बाहर की युद्धभूमि में लड़ेंगे, दूसरों से लड़ेंगे, शस्त्रों से लड़ेंगे। जब बाह्य जगत् का आंतरिकीकरण हो जाता है, बाह्य स्थितियों का भीतर स्थानांतरण हो जाता है, तब भी युद्ध चलता रहता है। किंतु वह युद्ध रणभूमि में नहीं, अपनी चेतना की भूमि पर लड़ा जाता है। वह युद्ध बाह्य शस्त्रों से नहीं, अपने ही आंतरिक शस्त्रों जागरूकता और अप्रमाद से लड़ा जाता है।

संघर्ष जीवन से जुड़ा एक चिर सत्य है। जन्म लेना ही संघर्ष का परिणाम है और मृत्यु भी संघर्ष की ही परिणति है। जन्म और मृत्यु के बीच का जीवन पथ संघर्ष की चट्टानों से टकराते हुए ही आगे बढ़ता है तो मृत्यु से जन्म के बीच एक संघर्ष चलता है नई गति, नया जीवन और नया शरीर प्राप्त करने के लिए। जब तक मुक्ति की प्राप्ति नहीं होती तब तक संघर्ष का सिलसिला अंत को

प्राप्त नहीं कर पाता।

सामने हो मंजिल तो रास्ता न मोड़ना,
जो मन में हो वह ख्याब न तोड़ना।
हर कदम पर मिलेगी कामयाबी तुम्हें,
बस सितारे छूने के लिए जमीन मत छोड़ना।।

महान उद्देश्य ही व्यक्ति के जीवन को सार्थक बनाकर हमारी समस्त शक्ति को एक डोर में बाँधता है। हमें जो कुछ दुर्बल, भेदपूर्ण और बिखराव महसूस होता है, इन सबको एक साथ मिलाकर बलवान बना देता है, दृढ़ बना देता है। जिनको अपने आत्मबल पर भरोसा होता है, वे ही सफल होते हैं, अन्य नहीं। शक्तिहीन व्यक्ति किसी क्षेत्र में सफल नहीं होता।

भगवान महावीर ने फरमाया है— ‘**जुद्धारिहं खलु दुल्लहं**’ युद्ध की सामग्री मिलना दुर्लभ है। भाग्यशाली व्यक्ति ही उत्तम युद्ध अथवा आत्मयुद्ध कर सकता है। जैसे भगवान महावीर ने वीतरागता पाने के लिए अपने को तपाया, खपाया और साधा। भगवान ने आत्मयुद्ध का समर्थन किया।

आत्मयुद्ध का पहला प्रकार है **संकल्प**। संकल्प का प्रयोग करना यानी अपनी संकल्पशक्ति को बढ़ा लेना, जिससे व्यक्ति इंद्रियों, संवेगों और कषायों के साथ लड़ सके, युद्ध कर सके। ‘**इयाणि नो**’ अब नहीं करूँगा - यह संकल्प आत्मयुद्ध का पहला अस्त्र है। जिस व्यक्ति को यह अस्त्र प्राप्त होता है वह अपने आपको बचा सकता है।

आत्मयुद्ध का दूसरा प्रकार है **शमन करना**। जैसे मनोविज्ञान में दो प्रक्रियाएँ हैं - एक उपशमन और दूसरी क्षयीकरण। आत्मयुद्ध का तीसरा उपाय है - **ज्ञाता-द्रष्टा भाव**। जैसे-जैसे ज्ञाता-द्रष्टा भाव का विकास होगा, वैसे-वैसे आत्मयुद्ध की लड़ाई अधिक तेज हो जाएगी। मैं भोक्ता नहीं हूँ, मैं द्रष्टा हूँ। इस चेतना का जैसे-जैसे विकास होगा, आत्मयुद्ध अधिक प्रखर बन जाएगा और विजय की संभावना प्रबल बन जाएगी।

आत्मयुद्ध का चौथा उपाय है **सतत स्मृति, सतत जागरूकता**। व्यक्ति निरंतर अपनी स्मृति में रहे, वह अपने प्रति निरंतर जागरूक रहे। आत्मयुद्ध का पाँचवाँ उपाय है **प्रतिक्रमण**। मुड़कर देखना भी जरूरी है। प्रतिक्रमण में व्यक्ति सोचता है कि मैं क्या था, क्या हूँ और मुझे क्या होना है? प्रतिक्रमण का अर्थ है कि जिस स्थिति को स्वीकारा, आत्मयुद्ध को स्वीकारा, उस भूमिका पर पहुँचकर समग्र रूप से अपना विश्लेषण करना। भगवान महावीर के आत्मयुद्ध का यह संदेश मानवीय चिंतन या मानवीय चेतना के विकास का सबसे बड़ा उपक्रम है। निठल्ला बैठना, कायर होकर बैठना महावीर जैसे पराक्रमी व्यक्ति को पसंद नहीं है। वह हमेशा कुछ न कुछ करता रहता है। यह आत्मयुद्ध पराक्रमी व्यक्ति ही कर सकता है। इसमें जो व्यक्ति आता है वह स्वयं सुखी बनता है और दूसरों को भी सुख बाँटता है। ‘**आत्मना युद्धस्व**’ यह अध्यात्म का एक महत्वपूर्ण सूत्र है। इसकी गहराई में जाना, इसको जीना, अपने आपको विजयी बनाना है।

मैं ध्येय हूँ, श्रद्धेय हूँ, मैं श्रेय हूँ, मैं ज्ञान हूँ,
बस एक ज्ञाता भाव हूँ मैं, मैं स्वयं भगवान हूँ।
इस सत्य को पहचानना ही, साधना का सार है,
ध्रुवधाम की आराधना कर, आराधना ही सार है।।



पढ़कर ज्ञान प्राप्त करना है या प्रकट करना है? हम पुस्तकें पढ़ते हैं और कक्षाओं में भी अध्ययन करते हैं। इस प्रकार बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त भी कर लेते हैं। किंतु जब तक राग-द्वेष की गाँठ पड़ी है और उसका विशोधन नहीं किया जाता तब तक सही ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकेगा। जब तक राग-द्वेष आत्मा में रहेंगे तब तक संवेग भी उपस्थित नहीं हो सकते। इस प्रकार जब तक राग-द्वेष की बाँधि का भेदन नहीं होगा तब तक सम्यग्ज्ञान भी प्रकट नहीं हो पाएगा।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

परिवर्तन अर्थात् बदलाव

- सुरेश बोरदिया, मुंबई

एक अवस्था से भिन्न अवस्था में आ जाना ही परिवर्तन है। पुद्गलों में परिवर्तन निरंतर होता ही रहता है। शरीर भी पुद्गलों से ही निर्मित होता है। अतः शरीर में भी प्रति समय परिवर्तन आता रहता है। शरीर में होने वाला परिवर्तन दिखाई दे या न दे, लेकिन परिवर्तन होता रहता है। परिवर्तन ऋतुओं का होता है, मौसम में होता है। एक कालचक्र में उत्सर्पिणी एवं अवसर्पिणी, फिर उत्सर्पिणी, फिर अवसर्पिणी, इस तरह यह क्रम अनादि-अनंतकालीन है। प्रत्येक उत्सर्पिणी या अवसर्पिणी काल में होने वाले छह आरों में भी परस्पर भिन्नता होती है। काल तो प्रतिसमय परिवर्तनशील होता है। काल का सबसे छोटा अंश समय कहलाता है। जो समय अभी वर्तमान है, अगले ही पल वो अतीत बन जाता है। एक समय मात्र में वर्तमान कैसे अतीत बन सकता है, यह एक प्रसंग से समझ सकते हैं।

परम पूज्य आचार्य भगवन् का वर्ष 2002 का चातुर्मास सरदारशहर में था। चातुर्मास समापन के पश्चात् भगवन् का मेवाड़ क्षेत्र में चिलेश्वर पधारना हुआ। सायंकाल चिलेश्वर से निम्बाहेड़ा जाटान के लिए विहार होना था।

विहार की तैयारी थी। श्री नीरज मुनि जी म.सा. ने स्थानक भवन में मौजूद श्रावकों से पूछा— “कितने बजे हैं?” एक श्रावक जी ने तुरंत कहा— “म.सा.! फिक्स चार बजे हैं।” यह सुनकर श्री नीरज मुनि जी म.सा. ने फरमाया— “श्रावकजी! समय कभी फिक्स नहीं रहता। समय तो आगे बढ़ता ही रहता है। आपने कहा था कि फिक्स चार बजे हैं, इतना कहते-कहते तो समय कितना ही आगे निकल गया, तो वह फिक्स कैसे रहा?”

उस समय श्री नीरज मुनि जी म.सा. की दीक्षा हुए लगभग एक वर्ष होने वाला था। मैं स्वयं उस प्रसंग पर स्थानक में मौजूद था। नवदीक्षित एवं अल्पवय होते हुए भी श्री नीरज मुनि जी म.सा. समय व शब्दों के प्रति पूर्ण सजग थे। समय में अनवरत होते रहने वाले परिवर्तन के लिए यह प्रसंग एक सरल व सटीक उदाहरण है।

समता विभूति आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के प्रथम दर्शन का सौभाग्य मुझे राणावास चातुर्मास में मिला। दिव्य महापुरुष के जो अमृत वचन पहली बार मेरे कानों में पड़े थे, वे वचन थे— “परिवर्तन होना चाहिए।”

बाल्यावस्था से मैं बाहर निकला ही था, अतः मैं इन वचनों का अर्थ तो नहीं समझ पाया, लेकिन कानों में पड़े वे शब्द अब तक हृदय में चिरकाल के लिए स्थायी रूप से बसे हैं। ‘महत्तम परिवर्तन’ पर कुछ लिखते हुए मेरी कल्पना इसी निष्कर्ष पर पहुँची कि आचार्यश्री जी ने जो फरमाया था, वह हमारे जीवन में परिवर्तन के लिए फरमाया होगा, क्योंकि उन महापुरुष ने स्वयं अपने जीवन का तो कितना परिवर्तन कर लिया था।

आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. का जन्म नाम ‘गोवर्धन’ था। लाड़-प्यार से ‘नाना’ नाम रख दिया गया। बाल्यकाल में नाना को धर्म के प्रति रुचि कहाँ थी! स्वयं को तो रुचि थी नहीं और माताजी द्वारा की जाने वाली धर्मारधना भी पसंद नहीं थी। ‘होनहार बिरवान के होते चीकने पात’। प्रकृति उन्हीं के लिए परिवर्तन के अवसर निर्मित करती है, जो प्राप्त अवसर का सदुपयोग कर सकें। बालक नाना को मुनिश्री का प्रवचन सुनने का अवसर मिला। चाहते या न चाहते हुए प्रवचन सुन भी

लिया। अब अगले दिन के प्रवचन का जो विषय बताया गया उसके प्रति उत्सुकता बढ़ती गई और अगले दिन का प्रवचन सुनने की रुचि प्रबल हो उठी। अब नाना उस प्रवचन की प्रतीक्षा करने लगे। सही अर्थों में तो प्रवचन का अवसर स्वयं ही नाना की प्रतीक्षा कर रहा था। क्योंकि वह मात्र प्रवचन नहीं, अपितु जीवन परिवर्तन का अवसर था। उस प्रवचन का श्रवण कर नाना ने अपने जीवन का, अपने आपका कितना परिवर्तन कर लिया, यह विषय किसी से अछूता नहीं है। बालक नाना कुछ समय बाद मुनि श्री नानालाल जी म.सा. एवं तदनंतर आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के नाम से महापुरुष के रूप में तीन लोक में वंदनीय बन गए।

उस प्रवचन सभा में कितने श्रोता रहे होंगे? एक अकेले नाना ही नहीं बल्कि अनेक श्रोता थे। परिवर्तन का अवसर सभी के लिए समान था, लेकिन अवसर का लाभ जैसा नाना ने उठाया, वैसा क्या और किसी ने उठाया? नहीं। क्योंकि परिवर्तन के लिए पुरुषार्थ आवश्यक है और पुरुषार्थ भी सही दिशा में करना होता है।

परिवर्तन दो दिशा में हो सकता है – ऊर्ध्व दिशा में और अधो दिशा में, यानी एक परिवर्तन ऐसा जो हमें प्रगति की तरफ बढ़ा दे, वह ऊर्ध्व दिशा में होने वाला परिवर्तन होता है और जो परिवर्तन हमें वर्तमान अवस्था से नीचे की ओर ले जाए, पतन की तरफ ले जाए, वह परिवर्तन अधो दिशा में होने वाला परिवर्तन होता है।

दूध एक मूल अवस्था है, प्रारंभिक अवस्था है। उसे आँच पर तपाया गया तो यहाँ से परिवर्तन की शुरुआत ही है। गरम होने पर दूध फट गया, एक तरह से बेकार हो गया। इस अवस्था में न तो उसका उपयोग बचा और न ही नए परिवर्तन की गुँजाइश ही रही। शुरुआती परिवर्तन के फलस्वरूप ही वह पतन की ओर अग्रसर हो गया और अपनी मूल अवस्था को भी खो दिया। यह परिवर्तन दूध के लिए अधो दिशा में ले जाने वाला बना।



दूसरी तरफ हम अब ऊर्ध्वमुखी परिवर्तन पर चिंतन करते हैं। एक बर्तन में दूध को आँच पर गरम किया जाने लगा। दूध में उबाल आने पर उसे कुछ ठंडा किया गया और उसमें जावण के रूप में कुछ दही या छाछ मिला दी गई। दूध ने उसे अपने अंदर समाहित कर लिया। कुछ घंटों बाद उस दूध में परिवर्तन हुआ। वह दूध अब दही के रूप में परिवर्तित हो गया। यह परिवर्तन ऊर्ध्वमुखी बना, लेकिन परिवर्तन की गुँजाइश बरकरार थी। अब दही को मथनी द्वारा मथा जाने लगा। इस प्रकार मथने से समर्पण के परिणाम में एक नए निखार के साथ एक और परिवर्तन आया। अब जो परिवर्तन हुआ वह दूध व दही से भी उन्नत रूप मक्खन के रूप में उभर कर आया। सार्थक व ऊर्ध्वमुखी परिवर्तन से दूध उत्तरोत्तर अपनी अवस्थाओं का क्रमिक विकास करता रहा।

परिवर्तन का क्रम अभी तक थमा नहीं और आगे जारी रहा। नरम, सफेद मक्खन को छाछ से अलग करके एक बर्तन में भरकर चढ़ा दिया आँच पर तपने के लिए। आँच पर तपकर मक्खन पिघलकर घी बन चुका था। एक और सार्थक परिवर्तन।

परिवर्तन की अब भी गुँजाइश थी। उस पिघले हुए घी में अभी कुछ अशुद्धियाँ भी विद्यमान थीं। **‘बहुत गई थोड़ी रही, थोड़ी भी अब जाय’** बस, अब तक अधिकांश परिवर्तन तो हो ही चुका था, लेकिन फिर भी स्पर्धा में जिस तरह कई किलोमीटर की दौड़ लगा देने पर भी अंतिम कदम जो लक्ष्य को छू लेता है, तभी विजयी कहा जाता है। हजारों कदमों की दौड़ से भी वह अंतिम एक कदम अत्यधिक महत्त्वपूर्ण बन जाता है, क्योंकि वही अंतिम कदम निर्णायक होता है।

पिघले हुए घी को और तपाया गया तो उसमें विद्यमान अशुद्धियाँ धीरे-धीरे जलकर नष्ट हो गईं और घी शुद्ध से शुद्धतर होता जा रहा था। अब तक बस एक ही परिवर्तन शेष था, जो उसे श्रेष्ठ अवस्था में पहुँचाने

वाला था। वह था 'महत्तम परिवर्तन' और धीरे-धीरे घी में से सारी अशुद्धियाँ नष्ट होती गईं। अंत में घी ने अपनी सर्वश्रेष्ठ अवस्था को प्राप्त कर लिया।

शुद्ध, सर्वश्रेष्ठ अवस्था प्राप्त कर लेने के पश्चात् अब किसी परिवर्तन की आवश्यकता या गुंजाइश नहीं रही। कारण कि दूध ने घी बनने तक अग्नि, मथनी आदि के प्रति अपने आपको समर्पित कर दिया था। हर परिवर्तन ने ऊर्ध्वमुखी और श्रेष्ठतम अवस्था को प्राप्त कर लिया। यह था 'महत्तम परिवर्तन'।

यहाँ हम चिंतन कर सकते हैं कि इतने परिवर्तन के बाद घी आया कहाँ से। वह घी कहीं बाहर से तो आया नहीं। घी तो दूध के अंदर ही मौजूद था। उसे वास्तविक, उन्नत स्वरूप को प्राप्त करने के लिए परिवर्तन की ही आवश्यकता थी। परिवर्तन भी सही एवं ऊर्ध्व दिशा में हुआ तभी यह अवस्था प्राप्त हुई, नहीं तो जो दूध मात्र एक परिवर्तन अर्थात् गरम करने पर फटकर बेकार बन गया, वह परिवर्तन उसके लिए पतन का कारण बना और दूध अपनी मूल अवस्था को भी खो बैठा।

परिवर्तन के लिए निमित्त की आवश्यकता रहती है। आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. द्वारा फरमाए

गए शब्द 'परिवर्तन होना चाहिए' हमारे लिए प्रेरक हैं। सदगुरु एवं जिनवाणी का संयोग दुर्लभ है और सौभाग्य से ऐसा दुर्लभतम संयोग हमें प्राप्त हुआ है। गुरु की महिमा अपरंपार है। चिंतामणी रत्न एवं कल्पतरु भी माँगने पर ही देते हैं, लेकिन गुरु तो बिना माँगें वो सब कुछ दे देते हैं, जिसकी कल्पना तक हम नहीं कर सकते। पारस पत्थर लोहे को सोना बना सकता है, अपने जैसा पारस नहीं बना सकता। इसी संदर्भ में गुरु के लिए कहा गया है—'वो तो लोह कंचन करे, गुरु आप सरीखा होय' अर्थात् गुरु तो अपने सान्निध्य में आने वाले को अपने जैसा बना देते हैं।

आवश्यकता है ऐसे दुर्लभतम संयोग का लाभ उठाने की। महत्तम महोत्सव जैसा अद्भुत अवसर मिला है। हर गुरुभक्त अपनी अभिलाषा को इन शब्दों में व्यक्त कर रहा है—'मन में संयम के भाव जगे, मेरे नाम के आगे राम लगे।' संयम शतक के 100 अंकों में से एक अंक पर मेरा नाम लगे तो ही वास्तविक परिवर्तन 'महत्तम परिवर्तन' होगा। आत्मा से महात्मा और महात्मा से परमात्मा के बीच का अंतर सदा-सदा के लिए दूर हो, यही शुभभावना हमारे मन में बसे।



Sole Searching: Discover benefits of barefoot walking

—Romika Navlakha, Bardoli

We, as a community, have always seen our monks and nuns walking without any footwear, and have often associated the activity to non-violence, to avoid harming small insects or animals that maybe present in under shoes or socks, or to that of non-possessiveness. It is said to cultivate humility and is seen as a means of purification and self-mortification. Apart from the above facts, there are several other advantages to walking barefoot. It helps develop a sense of detachment and equanimity by enduring minor discomforts. It leads us to focus on the present moment and sensation of each step. Walking barefoot improves posture, reduces inflammation underneath the feet, strengthens foot muscles, and mechanics of hips, knees and core as well as aids in appropriate range of motion in foot and ankle joints. Feet directly on earth also helps in releasing stress and relaxation while grounding us to one of the elements of the universe and helps in healing and reducing fatigue. The elements earth represents stability, confidence and groundedness and is associated with our Root Chakra, located at the base of our spine, which relates to our feelings of safety and security. Walking barefoot also allows you to connect with the natural world and is a free and easy way to improve your health and well-being. Allow yourself to enjoy the sensation of earth and increase your barefoot walking time. Happy walking.



संस्कार सौरभ
संस्कार सौरभ



क्षमा वीरस्य भूषणम्

- प्रो. सुमेरचंद जैन, बीकानेर

**क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल हो।
उसका क्या जो दीन-हीन, विषहीन, बहुत सरल हो।।**

क्षमा वीरों का आभूषण है। क्षमा महानता का सूचक है। दूसरों के अनुचित व्यवहार को क्षमा रूपी बाण से छेद देने से सुख और संतोष मिलता है। क्षमा हृदय का धर्म है। **वेदव्यास जी** लिखते हैं— “क्षमा ब्रह्म है। क्षमा सत्य है। क्षमा भूत-भविष्य है। क्षमा तप एवं पवित्रता है।” **महाभारत** में कहा गया है— “क्षमा धर्म है। क्षमा यज्ञ है। क्षमा वेद और शास्त्र है। जो इसका ज्ञान रखता है वह सब कुछ क्षमा करने में सक्षम हो सकता है।”

जैन धर्म में संवर तत्त्व के अंतर्गत क्रोधादि के निरोध हेतु बताए गए दस धर्मों में एक है **क्षमा**। कषाय आत्मा के लिए सर्वाधिक घातक है और कर्म आश्रव के मुख्य कारण हैं। इनके द्वारा होने वाले कर्म आश्रव को रोकने के लिए क्षमता का अवलंबन लेना जरूरी है। क्रोध की आग क्षमा से बुझती है। क्षमा का अर्थ है सहनशील होना अर्थात् क्रोध पैदा न होने देना एवं उत्पन्न क्रोध को विवेक और नम्रता से निष्फल कर देना। अपकार करने वाले के उपकार का बदला लेने की शक्ति होते हुए भी जो क्षमा करता है वही क्षमाशील है। इसीलिए कहा गया है - **‘क्षमा वीरस्य भूषणम्’**।

अपनी कमजोरी के कारण प्रतिकार न कर पाना क्षमा नहीं है। ऐसे कायर व्यक्ति के मन में बदले की भावना तो होती है, लेकिन वह ऊपरी तौर पर क्षमा

का कृत्रिम चोला ओढ़ लेता है। जैन दर्शन में इसे क्षमा नहीं कहा गया है। अपकार करने वाले के प्रति किंचित् भी दुर्भाव न रखते हुए सहनशीलता रखी जाती है, वही सच्ची क्षमा है।

पूर्व के राजा-महाराजा क्षमा पर्व की पवित्रता के लिए वर्षा आरंभ से दशहरे तक युद्ध बंद रखते थे, जिससे अहिंसा का पालन होता था। अतः क्षमा अहिंसा का अंग है। राजा उदायन ने चंद्रप्रद्योत को बंदी बनाया, लेकिन क्षमापर्व पर प्रतिक्रमण करने के पश्चात् उसे आजाद कर उसे उसका राज्य पुनः प्रदान करते हुए क्षमा का विशेष प्रसंग उपस्थित किया। यही वीरता का सूचक है।

हृदय में धधकती क्रोधाग्नि को शांत करने के लिए मौन रूपी जल का सहारा लेना पड़ता है। यह मौन तब ही धारण किया जाता है जब हमारे अंदर क्रोधित व्यक्ति के कटु वचनों को सहन करने की शक्ति हो। इसके लिए हमारे हृदय में क्षमा रूपी संजीवनी आवश्यक है।

क्षमा करने वाले पर कभी आरोप लगाया जाता है कि इनमें असमर्थता का दोष है, क्योंकि वे अन्यायी को दंड देने में भय खाते हैं। यह आरोप पूर्णतया निराधार है। क्षमा में बहुत बड़ा बल है। क्रोध और प्रतिशोध की धधकती ज्वाला को शांत करने के लिए क्षमा शीतल जल के समान है।

मुंशी प्रेमचंद ने अपने उपन्यास में एक जगह लिखा है कि क्षमा मानवीय भावों में सर्वोपरि स्थान

रखती है। दया का स्थान इतना ऊँचा नहीं है। दया का मार्ग सीधा और सरल है। इसके विपरीत क्षमा का मार्ग टेढ़ा और कठिन है। **कुरान** में भी क्षमा को एक महान साहस भरा कार्य बताया गया है। जो व्यक्ति धैर्य रखकर क्षमा कर देता है, निश्चय ही वह साहस का कार्य करता है।

महात्मा गाँधी ने लिखा है कि दंड देने की शक्ति होने पर भी दंड न देना क्षमा है। क्षमा और उदारता वही सच्ची है जहाँ पर स्वार्थ की बलि दी जाती है। जिनका

हृदय क्षमा से रहित है, जो दूसरों को क्षमा करना नहीं जानते, ऐसे लोगों का क्रोध चांडाल की तरह होता है। सज्जन व्यक्ति का क्रोध जल की तरंग के समान उठते ही शांत हो जाता है।

महात्मा कबीर क्षमा को ईश्वर का रूप बताते हुए कहते हैं—

जहाँ ज्ञान वहाँ धर्म है, जहाँ झूठ वहाँ पाप।
जहाँ क्रोध वहाँ काल है, जहाँ क्षमा वहाँ आप।।



मिले राम से आकार

भक्ति रस

- गगन दत्त, देवगढ़

विचारों की कशमकश में, मेरा सुकून हो तुम।
अष्ट कर्मों की उलझी गुथी हूँ मैं,
अष्टाचार्यों से सुलझी गुण सुमनों की माला हो तुम।।
जिस महात्मा को न जान पाई कोई भी आत्मा, तो मेरी क्या हैसियत।
फिर भी इन चरणकमल में, तुच्छ कलम से भावार्पण को हूँ लालायित।।
इंतजार भी हुआ ये स्वप्न, खुली आँखों से संजोया था जो स्वप्न।
वस्त्रनगरी ने बदली है अपनी सूरत और सीरत।।
रामसागर में लगा गोते हो रहे हैं सब राममय।
निर्बाध हो गतिमान रामरथ, चढ़ रहा महत्तम से शिखर।।

कहीं जम के होगी तप की मूसलाधार,
तो कई अश्रद्धा से श्रद्धा को राममाला से होंगे प्रेरित।
जगा अपना आत्मज्ञान, पाएँगे गुरुमुख से समकित।।
तो कुछ तोड़ मोहनीय कर्म स्पर्श करेंगे चारित्र।
धरती की सूखी फसलों पर होगी अम्बर से बौछार,
तो पूर्व संस्कारों के बीज होंगे प्रस्फुटित।।
हरे-भरे हो फिर भी लहराएँगे हो संयमित,
कई नदियों में आएँगे उफान तो कहीं समुद्रों में ज्वारभाटा।
हे जीव! क्या अब तक भी न थका तू, चौरासी में लगाते-लगाते आँटा।।
खोल आत्मचक्षु, देख देव विमान आया है निज द्वार।
गर रह गया अब भी वंचित, तो होगा पछतावा, कर विचार बार-बार।।





संस्कार सौरभ
संस्कार सौरभ

महत्तम निर्जरा

-तृप्ति सांखला, जगदलपुर

सौरभ को धार्मिक पुस्तकें पढ़ने का बहुत शौक था। खासकर उसे श्रमणोपासक पढ़ना बहुत पसंद था। श्रमणोपासक में विभिन्न विषयों पर आधारित जो रचनाएँ आती थीं उन्हें पढ़कर सौरभ जैन धर्म के सिद्धांतों को और अच्छे से समझ पाता था। उसे जो भी समझ में आता, उसे वह अपने जीवन में उतारने की पूरी कोशिश करता था। एक बार वह श्रमणोपासक पढ़ रहा था। इस बार का विषय था महत्तम निर्जरा, जिसे पढ़कर सौरभ को कुछ समझ नहीं आया कि इसका अर्थ क्या है। वह सोच ही रहा था कि पाठशाला जाने का टाइम हो गया और वह पाठशाला जाने के लिए निकल गया। पाठशाला पहुँचने के बाद भी सौरभ के मन में उस विषय को लेकर उथल-पुथल चल रही थी कि इसका अर्थ क्या है? उसे विचारमग्न देखकर पाठशाला की टीचर ने उससे चर्चा की।

टीचर—क्या हुआ सौरभ तुम क्या सोच रहे हो?

सौरभ—आंटी! महत्तम निर्जरा का अर्थ क्या है?

टीचर—महत्तम का अर्थ है - महान (सबसे बड़ा) और निर्जरा का अर्थ है - आत्मा में लगे हुए कर्मों का

क्षय करना।

रोहन—तो आंटी, वह कौनसी चीज है, जिससे महान कर्मों की निर्जरा हो सकती है?

टीचर—वह है श्रावक के 14 नियम।

पायल—इन नियमों का पालन कैसे करते हैं?

सौरभ—क्या इन नियमों का पालन हम बच्चे भी कर सकते हैं?

टीचर—बिलकुल! आप सभी इन नियमों का पालन अच्छे से कर सकते हो। चलो आज की क्लास में मैं आपको बताती हूँ कि ये 14 नियम कौन-कौनसे हैं, इन नियमों का पालन कैसे करते हैं और इन नियमों को पालने से हमारे कितने पाप कम हो सकते हैं।

इतना सुनते ही सभी बच्चों की आँखों में चमक आ गई और सारे बच्चे टीचर की बात बहुत ध्यान से सुनने लगे।

टीचर—सबसे पहले तो हम यह जानते हैं कि श्रावक के 14 नियम क्यों चितारने चाहिए?

बच्चो, मान लो कि एक डॉक्टर है और उस डॉक्टर के हाथ में एक इंजेक्शन है। उस इंजेक्शन को देखकर आप सबको कैसा लगेगा?

सारे बच्चे एक साथ—डर लगेगा।

टीचर—लेकिन अगर वह डॉक्टर बोले कि यह इंजेक्शन उस बच्चे के लगाऊँगा जिसे बुखार है तो आप में से जिन-जिन को बुखार नहीं है उन सबको कैसा महसूस होगा?

फिर से सारे बच्चे एक साथ—रिलेक्स महसूस होगा।

टीचर—ठीक ऐसे ही इस संसार में बहुत सारी चीजें हैं, जिनमें से शायद कई चीजों को तो हम जानते भी नहीं। फिर भी हमें उन सब चीजों को उपयोग किए बिना भी उपयोग करने जितना ही पाप लगता है। जैसे डॉक्टर के हाथ में इंजेक्शन को देखकर आप सबका मन

उरा कि क्या पता यह इंजेक्शन मुझे लग जाए। ठीक वैसे ही इस संसार में इतनी सारी हरी सब्जियाँ हैं, हम सारी सब्जियों को तो नहीं खाते। हम दिन में ज्यादा से ज्यादा 5 सब्जी भी नहीं खा सकते। लेकिन जब तक हम 14 नियम नहीं चितारते तब तक इस दुनिया में जितनी भी हरी सब्जियाँ हैं, उतना हमको पाप लगता है। जब हम 14 नियम सीखते हैं तब हम चीजों की एक-एक मर्यादा निश्चित करते हैं कि आज मैं 10 हरी सब्जियों से ज्यादा हरी सब्जी नहीं खाऊँगा। इससे 10 हरी सब्जियों को खाने में जितना पाप हमें लगना चाहिए उतना ही पाप लगता है। एक तरीके से बाकी के जीवों से हम वादा करते हैं कि आज के दिन हम इतनी ही चीजें उपयोग करेंगे, जिससे हमें सिर्फ उन्हीं चीजों को उपयोग करने का पाप लगता है, समझे!

सारे बच्चे एक साथ—हाँ आंटी!

टीचर—अब देखते हैं कि वे 14 नियम कौन-कौनसे हैं!

1. **सचित्त** : सचित्त अर्थात् कच्चा नमक, कच्चा पानी, फल-फूल बीज के साथ आदि कोई भी सचित्त वस्तु जो छेदन-भेदन होकर तथा अग्नि आदि का संयोग पाकर अचित्त नहीं हुई हो उसकी मर्यादा करना।
2. **द्रव्य** : रोटी, दाल, भात आदि जितनी चीजें दिनभर में खाने-पीने में आएँ उनकी जाति की मर्यादा करना।
3. **विगय** : दूध, दही, घी, तेल, मिठाई ये पाँच विगय हैं। इनकी मर्यादा करना तथा मक्खन, शहद आदि महाविगय का त्याग करना।
4. **उपावह (पन्नी)** : जूते, चप्पल आदि जोड़ी की मर्यादा, चमड़े का त्याग या मर्यादा।
5. **तांबूल** : मुखवास, पान, सुपारी आदि जाति की मर्यादा।
6. **वस्त्र** : पहनने-ओढ़ने के सब वस्त्रों की मर्यादा।

7. **कुसुम** : शौक से सूँघने की वस्तु फूल, इत्र आदि की मर्यादा।
8. **वाहन** : घोड़ा, हाथी, जहाज, मोटरसाइकिल, ताँगा आदि की सवारी की मर्यादा।
9. **शयन** : पलंग, खाट, कुर्सी आदि फर्नीचर की मर्यादा।
10. **वित्नेपन** : चंदन, तेल, उबटन, पाउडर, क्रीम आदि की मर्यादा।
11. **भोजन** : समय की मर्यादा।
12. **दिशा** : अपने स्थान से ऊँची, नीची, तिरछी दिशा का परिमाण। तार, चिट्ठी, टेलीफोन आदि स्वयं करने की मर्यादा।
13. **स्नान** : स्नान के जल का परिमाण। नदी, तालाब, समुद्र में स्नान का त्याग।
14. **भत** : मिष्ठान, भोजन, दूध, फल आदि की मर्यादा।

ये हैं वे 14 नियम। अब देखते हैं कि 14 नियम कब करना चाहिए और इसे चितारने से कितने पाप कम होते हैं।

टीचर—मर्यादित जीवन जीने के लिए जहाँ तक हो सके व्यक्ति को प्रतिदिन 14 नियम ग्रहण करने चाहिए। नोट करिए कि 14 वस्तुओं की आवश्यकता इतनी मर्यादा संख्या अथवा मात्रा में रखते हैं, इनके उपरांत त्याग है। 14 नियम धारण करने से समुद्र जितना पाप घटकर बूँद के बराबर रह जाता है।

इस तरह हम महान कर्मों का क्षय कर सकते हैं यानी महत्तम निर्जरा कर सकते हैं।

इतना सुनते ही **सारे बच्चे एक साथ**—सच में आंटी, अब से हम सभी रोज 14 नियम चितारेंगे और अपनी आत्मा में लगे हुए कर्मों की निर्जरा करेंगे यानी महत्तम निर्जरा करेंगे।

सारे बच्चे एक साथ—थैंक यू, आंटी! ❀❀❀

घटती मानवता, बढ़ती क्रूरता आखिर क्यों?



-भाविन जैन 'सजग', नीमच

- 1. मानव के मुख्य गुण :** अहिंसा, दया, करुणा, संवेदना, सदाचार।
- 2. मानवता का अर्थ :** सदाचरण तथा सभी जीवों के प्रति दया रखना। अपने द्वारा किए जा रहे प्रत्येक कार्य में विवेक रखना, जिससे अन्य जीवों को हानि न पहुँचे। हिंसा तथा क्रूरता से दूर रहना।
- 3. क्रूरता का अर्थ :** जब मानव अपने मानवीय गुणों को छोड़कर हिंसा करता है या अन्य जीवों को निर्दयतापूर्वक शारीरिक तथा मानसिक रूप से प्रताड़ित करता है तो इसे क्रूरता कहते हैं।
- 4. क्रूरता में वृद्धि :** हम सभी को अनेक ऐसी घटनाओं और गतिविधियों के समाचार प्राप्त होते रहते हैं, जिनसे हमें लगता है कि मानव में क्रूरता बढ़ती जा रही है। क्रूरता (हिंसक वृत्ति) में वृद्धि के अनेक कारण हैं, जिनमें से मुख्य कारण नीचे उल्लेखित हैं।
- 5. क्रूरता वृद्धि के मुख्य कारण :**
 - (i) आधुनिक जीवनशैली
 - (ii) पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण
 - (iii) भोजन संबंधी विकृतियाँ (जंक फूड का अधिक उपयोग)
 - (iv) मशीनों पर बढ़ती निर्भरता
 - (v) भौतिक सुख तथा संसाधनों को अधिक महत्त्व
 - (vi) सदाचार के स्थान पर प्रदर्शन (Show-off) को महत्त्व
 - (vii) आभासी (Virtual) दुनिया को अधिक महत्त्व
 - (viii) हिंसक मोबाइल गेम का उपयोग
 - (ix) मनोरंजन के लिए हिंसक तथा असामाजिक वेब सीरिज देखना
 - (x) पाँचों इंद्रियों के विषयों पर बढ़ती आसक्ति
 - (xi) स्क्रीन टाइम में वृद्धि, स्मार्टफोन का बढ़ता उपयोग



आधुनिक युग ने हमारे जीवन को आसान बनाने के लिए अनेक आविष्कार किए तथा नई-नई मशीनें तथा सुविधाएँ प्रदान की हैं। इन आविष्कारों तथा मशीनों का उपयोग करते-करते इनके साथ अधिक समय व्यतीत करने के चलते मानव भी मशीनों की भाँति संवेदनहीन होता जा रहा है। जिसके परिणामस्वरूप मानवता घटती जा रही है तथा क्रूरता बढ़ती जा रही है।



महावीरसम राम महान

तर्ज : पुच्छिंशु णं स्तोत्रम्

- गणेश इंगरवाल, चित्तौड़गढ़

साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका, त्यागी महात्मा और विद्वान।
सब जन मन की यही पुकार, महावीरसम राम महान॥1॥
सत्यदर्शी है सम्यक् ज्ञानी, शुद्धाचारी तपस्वी महान।
महावीर के पाट विराजे, महावीरसम राम महान॥2॥
विषय-कषायों से है दूरी, निंदा स्तुति एक समान।
मेरुसम दृढ़ संयमी हैं, महावीरसम राम महान॥3॥
उत्तम धर्म के उपदेशक हैं, धर्मसंघ के नेता महान।
देवाधिपति इंद्र है जैसे, महावीरसम राम महान॥4॥

तीक्ष्ण बुद्धि है प्रज्ञा निर्मल, उज्ज्वल ज्ञान ज्योति महान।
निर्वद्य वाणी जनकल्याणी, महावीरसम राम महान॥5॥
सूरजसम है ज्ञान प्रकाशक, निर्मल ध्यानी चंद्र समान।
पृथ्वीसम है महाधैर्यवान, महावीरसम राम महान॥6॥
वनों में नंदन, नदियों में गंगा, फूलों में है कमल समान।
क्षत्रियों में जैसे चक्रवर्ती हैं, महावीरसम राम महान॥7॥
मृगों में सिंह, खगों में गरुड़, हाथियों में ऐरावत समान।
आचार्यों में रामाचार्य महान, महावीरसम राम महान॥8॥

तपों में उत्तम ब्रह्मचर्य और दानों में जैसे अभयदान।
धर्मों में जैसे जैन धर्म है, महावीरसम राम महान॥9॥
परम अनासक्त अभयंकर हैं, निराकांक्षी और है निष्काम।
अन्यमति भी श्रद्धे जिनको, महावीरसम राम महान॥10॥
अष्टकर्म और पाप विनाशक, ध्यावे जो भी राम का ध्यान।
बने इन्द्र या मोक्ष पधारे, महावीरसम राम महान॥11॥
जन-जन की आँखों के तारे, हम भक्तों के हैं भगवान।
दर्शन, वंदन अति सुखकारी, महावीरसम राम महान॥12॥



सच्चा रिश्ता गुरुभक्ति का

- डॉ. लक्ष्मी जैन, उदयपुर

गुरु जीवन के निर्माता हैं,
गुरु सबके भाग्य विधाता हैं।
गुरु के उपकार से होता है जीवन का नवनिर्माण है।
गुरु प्रेरणा हैं, गुरु विश्वास हैं,
गुरु संसार की सभी वस्तुओं में दृश्यमान हैं।
गुरु दर्पण हैं, गुरु के उपदेशों में जीवन समर्पण है।
गुरु भक्ति हैं, गुरु में शक्ति हैं
गुरु आश्रय हैं, गुरु उपासना है।
गुरु पूजा हैं, गुरु आराधना हैं,
भव अटवी से निकलने का गुरु एकमात्र सहारा है।।

गुरु सुबह की धूप हैं, गुरु शाम की शीतलता हैं,
गुरु सूर्य से तेजस्वी, गुरु चंद्र से शीतल हैं।
गुरु सागर से गंभीर, नदियों से निर्मल हैं,
गुरु धरतीसम धीर, आकाशसम असीम हैं।
गुरु में प्रकृति की धैर्यता है,
गुरु में माँ-सी वात्सल्यता है।
गुरु में पितासम प्रेम है,
गुरु मोह, माया, कपट से निर्लेप हैं।।

गुरु ज्ञान के दाता हैं, गुरु जीवन निर्माता हैं,
गुरु असार में सार दिखाने वाले हैं।
गुरु भोग से योग तक ले जाने वाले हैं,
गुरु अमुक्त को मुक्त कराने वाले हैं।।
गुरु के बिन जीवन की कल्पना भी नहीं,
क्योंकि संसार के रिश्ते स्वार्थ के, इसमें उलझना नहीं।
सच्चा रिश्ता गुरुभक्ति का,
इस रिश्ते को दिल से अपनाना भूलना नहीं।।



भीलवाड़ा चातुर्मास्य श्रमणाचार्य

तप संयम की जय-जयकार।
राम गुरु की जय-जयकार ॥

नवदीक्षित चारित्रात्माओं की बड़ी दीक्षा
संपन्न, मुमुक्षु हर्षाली जी कोठारी की दीक्षा
7 दिसंबर 2024, मुमुक्षु ज्योति जी
(दिशा) कांठेड़ की दीक्षा 7 फरवरी
2025 और मुमुक्षु संगीता जी पितलिया
व मुमुक्षु वीरांश जी पितलिया की दीक्षा
7 अक्टूबर 2024 के लिए घोषित
देशभर में खुशी की लहर

अशांति का
मूल कारण
स्वार्थ वृत्ति है
- आचार्य भगवन्
आत्महित वाला
मान-सम्मान नहीं देखता
- उपाध्याय प्रवर

पर्युषण पर्व के प्रारंभ में 1008 तैले करने का आह्वान

श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. के मासखमण तप पूर्ण,
श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. के 21 उपवास का पारणा एवं
साध्वी श्री निर्जरा श्री जी म.सा. मासखमण की ओर अग्रसर

अरिहंत भवन, आर.के. कॉलोनी, भीलवाड़ा।

जन-जन के मुख पर राम गुरु का नाम है,
लाखों के जीवन का आधार आपका पैगाम है।
किन-किन गुणों का वर्णन करूँ गुरु रामेश आपके,
इस कलिकाल में आप ही हमारे सच्चे भगवान हैं॥

स्व-पर कल्याण की साधना में अहर्निश रत रहने वाले युगनिर्माता, युगपुरुष, साधना के शिखर पुरुष, मानवता के मसीहा, ज्ञान व क्रिया के बेजोड़ संगम, उत्क्रांति प्रदाता, जन-जन के भाग्यविधाता, नानेश पट्टधर, आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-23 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि ठाणा-43 का 'शिखर महोत्सव' चातुर्मास आध्यात्मिक आलोक से आलोकित हो रहा है। जन-जन में महापुरुषों की उच्च साधना एवं जीवन निर्माणकारी प्रवचनों की गहरी छाप पड़ रही है। संकल्प सूत्र शिविर, जैन संस्कार पाठ्यक्रम शिविर, राष्ट्रीय युवा शिविर, राष्ट्रीय महिला शिविर स्वर्ण कुंभ, कर्म बंध और हमारा जीवन शिविर, उच्चारण विशुद्धि शिविर, बच्चों का धार्मिक संस्कार शिविर आदि के माध्यम से ज्ञान व आध्यात्मिक जीवन का विकास हो रहा है। देश-विदेश से दर्शनार्थियों का ताँता लगा हुआ है। 'लोच में क्या सोच' कार्यक्रम के अंतर्गत अब तक 143 गुरुभक्तों ने लोच करवा कायाक्लेश तप कर

कर्मनिर्जरा का अद्भुत लाभ लिया है।

मुमुक्षु संगीता जी पितलिया व **मुमुक्षु वीरांश जी पितलिया** की जैन भागवती दीक्षा **7 अक्टूबर 2024**, **मुमुक्षु हर्षाली जी कोठारी** की जैन भागवती दीक्षा **7 दिसंबर 2024** तथा **मुमुक्षु ज्योति (दिशा) जी कांठेड़** की जैन भागवती दीक्षा **7 फरवरी 2025** को आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर के सान्निध्य में होनी संभावित है। एकासना, आर्यंबिल, उपवास, तेला की लड़ी के साथ अन्य दीर्घ तपस्याएँ जारी हैं। बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर के 7 उपवास का पारणा सानंद संपन्न हुआ। साध्वीवर्याओं में पचरंगी तप एवं श्रावक-श्राविकाओं में नवरंगी तप प्रारंभ हो गया है। श्री हैमगिरी मुनि जी म.सा. के मासखमण तप संपन्न हुआ। श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. एवं साध्वी श्री निर्जरा श्री जी म.सा. मासखमण तप की ओर अग्रसर हैं। अन्य कई तपस्याएँ गतिमान हैं। चातुर्मास को सफल बनाने में श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल, समता युवा संघ, समता बहू मंडल, समता बालिका मंडल एवं सकल जैन समाज, भीलवाड़ा का योगदान उल्लेखनीय है।

शांति-अशांति का संबंध हमारे विचारों से

16 अगस्त 2024 | मंगलमय प्रार्थना में **‘मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान’** की मधुर स्वर लहरी प्रवाहित हुई। तत्पश्चात् जैन सिद्धांत बत्तीसी का ज्ञानार्जन श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने करवाया।

प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा में उपस्थित अपार जनसमूह की ज्ञानपिपासा को आत्मतृप्त करते हुए शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **“शांति व अशांति का संबंध हमारे विचारों से है, अर्थात् हमारी सोच पर निर्भर है। किसी एक घटना से कोई व्यक्ति अशांत और कोई शांत हो सकता है। वास्तव में घटना व्यक्ति को शांत व अशांत नहीं बना सकती। व्यक्ति को केवल उसकी सोच, उसका चिंतन, उसका विचार ही शांत व अशांत बनाता है। एक व्यक्ति भोजन का स्वाद लेकर उपभोग कर रहा है, लेकिन मुनि तटस्थ रहने का प्रयत्न करते हैं और वीतरागी के कोई आकर्षण नहीं होता। उनके भीतर कोई प्रतिक्रिया पैदा नहीं होती। सभी पदार्थों में समान स्वाद था, किंतु तीनों की सोच में अंतर हो गया। जो स्वाद के लिए ख्यालगा वह स्वाद पर आसक्त बनेगा, अशांत बनेगा। वह कर्मों का ज्यादा बंध, उपार्जन करेगा। सोच बदलने से बहुत कुछ परिवर्तन हो जाता है।”** संयति राजा का सुंदर विवेचन आचार्य भगवन् ने फरमाया।

श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जो-जो रात्रियाँ बीत रही हैं, वे पुनः लौटकर आने वाली नहीं हैं। चाहे कैसी भी स्थिति आ जाए, हमें अपनी समाधि नहीं खोनी चाहिए। हमारे भीतर गुरु वचनों को सार्थक करने की ताकत होनी चाहिए। छोटे-छोटे लक्ष्य पूर्ण करते जाएँगे तो बड़े लक्ष्य हासिल होंगे। महान सौभाग्योदय से गुरुदेव के वचनों को सुनने का अवसर मिलता है।

शरीर और आत्मा एक नहीं

17 अगस्त 2024 | प्रातः मंगलमय प्रार्थना में पंच परमेष्ठी को समर्पित **‘हे प्रभु पंच परमेष्ठी दयाला’** के संगान से जीवन धन्य बनाया। प्रार्थना पश्चात् प्रवचन स्थल पर सैकड़ों गुरुभक्तों की विशाल उपस्थिति के मध्य चतुर्विध संघ की उपस्थिति में उच्च पाट पर विराजित संयम सुमेरु आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में भगवान महावीर की अमृतवाणी का रसपान कराते हुए फरमाया कि **“शांति की प्राप्ति कैसे होगी? भगवान महावीर**

फरमाते हैं — सबसे पहले आत्मज्ञान व अपनी पहचान होनी चाहिए। मैं कौन हूँ? मैं आत्मा हूँ इसका अनुभव होना चाहिए। तर्कबल से आत्मा को सिद्ध किया जा सकता है, किंतु वह अनुभूति का विषय नहीं बनेगा। गौतम स्वामी को आत्मा के विषय में संशय चलता था कि आत्मा अमूर्त है। उसको इंद्रियों के द्वारा ग्रहण नहीं किया जा सकता। कुछ बातें ज्ञानियों के ज्ञान के आधार पर माननी होती हैं। हमने जो चीज नहीं देखी वह नहीं होती, ऐसा निर्णय करना गलत है। भगवान महावीर कहते हैं कि मैं कौन हूँ यहाँ से तुम्हारी साधना प्रारंभ होती है। तुम खोज करो कि मैं कौन हूँ। मैं शरीरमय हूँ क्योंकि अभी संवेदनशील हूँ, परंतु मृत कलेवर में कोई संवेदना नहीं होती है। शरीर व आत्मा एक नहीं हैं। यदि शरीर व आत्मा एक होते तो उसका संवेदन मृत कलेवर को होना चाहिए। भगवान ने बताया कि कर्म करने वाली आत्मा है, शरीर नौका है और आत्मा नाविक। जो इस शरीर के माध्यम से संसार सागर को पार करती है और मोक्ष तक पहुँच जाती है।’

श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि क्षमता के आधार पर संसार की संरचना होनी चाहिए। गुण कर्मों के आधार पर कार्यों का विभाजन होना चाहिए। जिसमें जो क्षमता हो उसको वही कार्य करना चाहिए। यदि ऐसा किया जाए तो सुंदर संसार की संरचना हो सकती है। जब तक इच्छाओं का पर्दा पड़ा है तब तक भीतर का वैभव नहीं दिखेगा। साध्वीवृंद ने ‘*धन्य है जिनवाणी गुरुवर*’ गीत प्रस्तुत किया। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, जिज्ञासा-समाधान आदि कार्यक्रम हुए।

धर्म ही हमार साथ देने वाला है

18 अगस्त 2024 चातुर्मास प्रारंभ से ही आचार्य भगवन् के पावन सान्निध्य में रविवारीय समता शाखा में श्रद्धालुओं का हुजूम उमड़ रहा है। आज भी वही पावन प्रसंग उपस्थित हुआ। अवकाश के दिन का विशेष लाभ लेने हेतु प्रातःकाल से ही गुरुभक्तों के कदम स्थानक की ओर गतिशील बन रहे थे। सभी ने सामूहिक रूप से रविवारीय समता शाखा में समता आराधना कर आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त आयाम को सार्थक बनाया।

समता शाखा पश्चात् आयोजित धर्मसभा में तरुण तपस्वी आचार्य भगवन् ने आगमों का सार बताते हुए अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि “नरक में विभिन्न प्रकार से वेदनाएँ दी जाती हैं। काटना, पीटना, मारना, तोड़ना आदि रूप में भयंकर वेदना भोगनी पड़ती है। पहली, दूसरी, तीसरी नरक तक परमाधर्मी देव यातना देते हैं और आपस में लड़ाते हैं। उसके नीचे की नरकों में परस्पर आपस में संकलेश करते हैं, मारपीट करते हैं, छीना-झपटी करते हैं। भयंकर दुःख मिलता है वहाँ पर। चिल्लाते हैं, कोई नहीं बचाता। एकमात्र धर्म व पुण्य ही हमारा साथ निभाने वाले हैं। हमने जो भी अच्छे कर्म किए होंगे वे कर्म ही हमारा साथ निभाएँगे। बाकी कोई भी हमारा साथ नहीं निभाएगा। हमें अकेले ही जाना होगा और अकेले ही सारे दुःखों को भोगना होगा। हम जितने सुविधा में रहेंगे उतनी दुविधा बढ़ती जाएगी। उस सुविधा के कारण हमारे शरीर की प्रतिरोधात्मक क्षमता कम हो जाती है। सर्दी-गर्मी सहन करना हमारे लिए कठिन हो जाता है। तपस्या करने से हानि नहीं होती, अपितु मनोबल मजबूत होता है। हम काम नहीं करते इस कारण शारीरिक बल कमजोर होता है। आर्य धर्म की आराधना करने वाले यहाँ भी सुखी रहते हैं और परलोक में भी सुखी रहते हैं। आर्य धर्म का अर्थ है गलत कार्य नहीं करने वाले। चोरी

करना, हिंसा करना, झूठ बोलना - ये गलत व अनार्य कार्य हैं। आर्य धर्म के लोग देवगति को प्राप्त करते हैं। इसलिए मिथ्या मत को त्याग देना चाहिए और आर्य धर्म को स्वीकार करना चाहिए।”

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि “‘पढमं नाणं तओ दया’ - पहले ज्ञान फिर दया। आँखें हैं तो पैर सही चलेंगे। हम जीवन में खाना, पीना, व्यापार आदि जो कुछ भी कर रहे हैं उन सबमें एक ही चीज काम कर रही है, वह है आपका ज्ञान। 50 साल पहले जिन चीजों का आकर्षण नहीं था, आज मीडिया प्रचार के कारण उनका आकर्षण बढ़ गया है। हमारी क्रिया ज्ञान से है। हमारे जीवन को चलाने वाला तत्त्व शुद्ध, निर्मल रहना चाहिए। ज्ञान दूषित हो गया तो इनसान नहीं हैवान हो जाएँगे, जो अपने जीवन का विकास नहीं विनाश करेगा। अच्छे-अच्छे लोग गले में फँदा लगाकर मर जाते हैं। जैसे ही ज्ञान प्रदूषित हुआ वैसे ही दिशा बदल जाती है। जैसा ज्ञान वैसी क्रिया। हमारे दिमाग में क्या-क्या घुसा हुआ है। ज्ञान के खजाने में हीरे-पत्थर, माणक-मोती हैं या जहर, बारूद भरा है? सारी दुनिया ज्ञान दे रही है और हमारे खजाने में जहर भर रही है या अमृत? जहरीला तत्त्व यानी मिथ्यात्व। जब तक विचार निर्मल, विशुद्ध नहीं बनते तब तक आचरण अच्छा नहीं होगा। हम अपने ज्ञान को सही बनाएँ। महापुरुषों के वचन हीरे, जवाहरात हैं।”

प्रयास ऐसा करें कि समस्या आए ही नहीं

19 अगस्त 2024 प्रातः मंगलमय प्रार्थना में प्रभु व गुरुभक्ति के पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा में उपस्थित श्रद्धालुओं को अपनी पावन वाणी से सराबोर करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “दुःख से मुक्ति सभी प्राणी चाहते हैं। विभिन्न दुःखों से प्राणी आक्रांत है। कारण किसी का पुत्र आज्ञा में नहीं, किसी को रोगों से परेशानी है तो किसी के अन्य कोई दुःख है। व्यक्ति संघर्ष करता है और अपनी पूरी ताकत लगाता है। हार मानना मूल स्वभाव नहीं है। शरीर में चाहे बड़े रोग का आक्रमण हो तो भी शरीर उससे युद्ध करता है। शरीर के साथ यही काम मन करता है। जैसे ही भावना पर प्रहार होता है मन विरोध करता है। अनंत जन्म हो गए भटकते-भटकते और अनंत जन्मों तक भटकते रहेंगे। हम ऐसा प्लान बनाएँ कि दीर्घ काल तक के दुःख नष्ट हो जाएँ। आज समस्या है तो समाधान करो, लेकिन ऐसा कार्य करो कि समस्या आए ही नहीं। बहुत कम लोग दीर्घकालीन समस्या कम करते हैं। स्थायी दुःख दूर करने के लिए संघर्ष करें।”

श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि बंधन, जन्म से होते हैं। कुछ बंधन पसंद से मिलते हैं। समझने की जरूरत है। आज रक्षाबंधन है, पर इसका स्वरूप भी पहले जैसा नहीं है। आज भाई से प्यार है या पैसे से प्यार है। जिस पैसे को महत्त्व दिया जा रहा है उसके विषय में विचार करो कि भरत चक्रवर्ती के पास कितना पैसा था।

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत

20 अगस्त 2024 भोर के आगाज के साथ ही मंगलमय प्रार्थना के माध्यम से भक्तिभाव प्रस्फुटित हुए। प्रवचन सभा में आयोजित विशाल धर्मसभा में चतुर्विध संघ के मध्य भगवान महावीर के पावन संदेशों को संक्षिप्त में विवेचित करते हुए प्रशांतमना आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “अज्ञानी प्राणी विषय वासनाओं से स्नेह करता है और उनका सेवन करता है। ऐसा व्यक्ति सदा दुःखी रहेगा और दुःखों के चक्कर में फँसता रहेगा। पाँच इंद्रियों के विषयों से आकर्षित होने वाले के मन में उनके प्रति कौतूहल पैदा होता है।

द्रष्टाभाव-आत्मभाव में जीने वाला इंद्रियों के विषयों में लिप्त नहीं होता। स्थूलिभद्र मुनि के भावों में गणिका के यहाँ चातुर्मास करने के बावजूद भी कोई बदलाव नहीं आया। षट्स भोजन करते हुए भी कोई विचार पैदा नहीं हुआ। कोशा गणिका बारह व्रतधारी श्राविका बन गई। चातुर्मास के बाद स्थूलिभद्र मुनि गुरुचरणों में पहुँचे तो गुरुदेव ने कहा कि बड़ा दुष्कर तप किया। दूसरे मुनियों को यह बात नहीं जमी। षट्स भोजन करते हुए मन को साधे रखना बहुत कठिन है। किसी भी पदार्थ के प्रति इंद्रियों की चपलता नहीं होना बहुत कठिन है। स्थूलिभद्र मुनि कहते हैं — कोई कठिन नहीं। ‘मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।’ मन को संकल्पित कर लेंगे तो सारी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। विषय एवं पाँच इंद्रियाँ जन्म-जन्मांतर तक परेशानी देने वाले हैं। ऐसी स्थिति में बेदाग निकल पाना कठिन है। छह दिन नमक का त्याग, छह दिन मिठाई का त्याग, छह दिन दूध-दही का त्याग (षट्स तप) के लिए कौन-कौन तैयार है?’ तुरंत कई भाई-बहनों ने खड़े होकर षट्स तप करने का संकल्प लिया। संयति राजा चरित्र भाग का सुंदर विवेचन आचार्य भगवन् ने फरमाया।

श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संयम जीवन सार है। इस सत्य को जिसने समझ लिया वो संयम मार्ग में स्वयं आगे बढ़ेगा और दूसरों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगा। संयम शतक में अपनी संतानों को गुरुचरणों में समर्पित करें। धन्य हैं वे माता-पिता, जो अपनी संतानों को वीतराग पथ पर आगे बढ़ाते हैं। शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

उच्चारण विशुद्धि शिविर में चारित्रात्माओं का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। सुश्राविका सुनिता जी चंडालिया, कांकरोली के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया।

नवदीक्षित चारित्रात्माओं की बड़ी दीक्षा हर्षोल्लास के साथ अंपन्न

बपश्विनी हेमलता जी बांठिया के 60 उपवास के प्रत्याख्यान

21 अगस्त 2024 प्रातःकाल मंगल प्रार्थना में ‘जय राम गुरु री बोलो सा’ भजन के साथ प्रार्थना की गई। आगम आधारित प्रवचन धारा में सार रूप अमृतदेशना में परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि “आत्मवान अनुकरणीय हो जाता है। अनात्मवान कर्मों से भारी रहता है। उसको पूजा-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान चाहिए। जैसे पंछी के पंख भारी हो जाते हैं तो वह उड़ नहीं पाता, वैसे ही यश, पूजा, प्रतिष्ठा की चाह भारी बनाने वाली है। वह विकास नहीं कर पाएगा। आज छेदोपस्थापनीय चारित्र का प्रसंग है। जो मन हिंसा, आरंभ-समारंभ में था, वह मन वहाँ से हट गया तो यह दृष्टि का परिवर्तन है। दृष्टि का परिवर्तन नहीं होगा तब तक हिंसा से उपरत नहीं हो पाएगा। चाहे वो सूक्ष्म बादर छोटे से छोटा प्राणी क्यों न हो। अहिंसावान के लिए भगवान ने सूत्र दिया है कि मैत्रीभाव का कितना विकास हुआ। प्राणीमात्र के साथ हमारा मैत्रीभाव होना चाहिए। यह अहिंसा की पराकाष्ठा है। निंदा, द्वेष करने वाले के साथ भी दुश्मनी न हो। मैं सबका हित चाहता हूँ। मेरे मन में सबके लिए हित की भावना है। मन, वचन, काया से असत्य न हो। एक बार झूठ बोलने की आदत पड़ जाए तो हर बार झूठ बोलना पड़ता है। गुस्से से, लालच से, मान से, विनोद से झूठ बोला जाता है। सत्यवान सबका विश्वासपात्र हो जाता

है। भद्रतादान यानी चोरी नहीं करना। भगवान की आज्ञा की भी चोरी नहीं करना। भगवान ने जो बात जैसी कही है वैसी ही स्वीकार करनी चाहिए। मैथुन का मन, वचन, काया से सेवन नहीं करना चाहिए। परिग्रह संग्रहवृत्ति का त्याग कर भासक्ति से अलग होना चाहिए। आत्महित के लिए साधु जीवन स्वीकार किया है। इसके विपरीत भाव न हो जाएँ। बस एक सूत्रीय कार्यक्रम से आगे बढ़ना है।”

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी तेजस्वी वाणी में फरमाया कि “आज बिजली कड़कने से दशवैकालिक सूत्र के चार अध्ययन के पठन का प्रसंग नहीं रहेगा। मात्र छेदोपस्थापनीय चारित्र के पाठ विधि से बोले जाएँगे। गुरु हमारे दुःखों को दूर करने वाले हैं। दुःखों को दूर करने का उपाय बताने वाले हैं। सिद्ध भगवान के लिए जो विश्लेषण है – तिण्णाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोयगाणं, स्वयं बोध प्राप्त है और दूसरों को बोध प्रदान करते हैं। आत्मवान को छह चीजें मिलने से वह ऊँचा उठता है। आत्मवान साधक आत्मभाव में रमण करता है। शब्द, रूप, गंध, स्पर्श में जो आसक्त होता है वह आत्मा को नीचे गिराने वाला है। आत्मा का हित देखने वाला मान, सम्मान, पूजा, प्रतिष्ठा को नहीं देखता है। साधक अपनी आत्मा में जीता है। जो कार्य आत्मा के हित का नहीं है, वो नहीं करता है।”

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि अनादिकाल से समस्याओं में घिरे हुए हैं। हमारा स्वार्थ पूरा होता है तो हमें समाधान लगता है। जिनशासन में हर समस्या का समाधान है। जिनेश्वर देव कहते हैं कि संयम ही समाधान है। संसार में एक सुख के पीछे सौ दुःख हैं।

शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा., साध्वी श्री अरुणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री दिव्यप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री कल्पना श्री जी म.सा., साध्वी श्री मनीषा श्री जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने ‘यही मंजिल यही है तेरा रास्ता, शासन के गौरव को आगे बढ़ाना’ भक्तिगीत प्रस्तुत किया।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने बड़ी दीक्षा की विधि पूर्ण करवाई। नवदीक्षितों को तीन करण तीन योग से हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन, परिग्रह का त्याग करवाकर पंच महाव्रत में आरूढ़ किया एवं शुद्ध संयम पालन की अद्भुत प्रेरणा दी।

नवदीक्षित संत श्री रामनंदन मुनि जी म.सा., नवदीक्षिता साध्वी श्री रामबिंदु श्री जी म.सा., नवदीक्षिता साध्वी श्री रामदीपिका श्री जी म.सा. ने अपने संकल्प-पत्र का पठन करते हुए फरमाया कि आपश्री ने महान उपकार करके हमें संयम रत्न प्रदान किया है। संयम और पाँच महाव्रतों का सजग रहकर पालन करेंगे। पाँच समिति तीन गुप्ति का पूर्ण ध्यान रखेंगे। हर आदेश-निर्देश की आराधना हेतु समर्पित रहेंगे। आपकी आज्ञा की हम सदैव आराधना करेंगे और सेवा के लिए सदैव तत्पर रहेंगे। पाँच इंद्रियों और चार कषायों पर विजय प्राप्त कर हम अपनी परम मंजिल को प्राप्त करेंगे।

तपस्विनी हेमलता जी बांठिया (नोखामंडी) ने आज 56 उपवास पर 60 उपवास के प्रत्याख्यान आचार्य भगवन् के मुखारविंद से ग्रहण किए। संपूर्ण सभा हर्ष-हर्ष, जय-जय एवं जयवंता-जयवंता की मधुर ध्वनि से गुंजायमान हो उठी। हेमलता जी बांठिया ने 10 और 18 को छोड़ 1 से 20 तक की लड़ी पूर्ण की है। इसके साथ ही 30 से 36, 51, 61, 71, 121, 142, 151, 161 की दीर्घ तपस्याएँ गुरुकृपा से पूर्ण की हैं।

एक अलग कार्यक्रम में तपस्विनी हेमलता जी बांठिया का श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल, समता युवा संघ, समता बहू मंडल, भीलवाड़ा द्वारा माल्यार्पण व शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। संघ मंत्री व महेश नाहटा ने तपस्वी एवं वीर परिवारों से प्रेरणा लेने का निवदेन किया।

तपस्विनी हेमलता जी बांठिया ने अपने भावोद्गार में कहा कि तपस्या के लिए अगर लक्ष्य बना लें और गुरुकृपा हो जाए तो दीर्घ तपस्या करने में कोई बाधा नहीं आती।

इस अवसर पर वीर पोखरना व नाहटा परिवार सहित ब्यावर, मायावरम्, नगरी आदि अनेक क्षेत्रों से श्रद्धालु बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

मोह को नष्ट करने से मिलेगी मुक्ति

22 अगस्त 2024 प्रभु व गुरुभक्ति से ओत-प्रोत प्रार्थना से जीवन पावन करने के पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं व आबाल-वृद्ध को प्रभु महावीर के वचनों से पावन करते हुए ज्ञान व क्रिया के बेजोड़ संगम आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “कोई भी पद, कोई भी अवस्था, कोई भी पोशाक बंधन से मुक्त कराने वाली नहीं है। हम सोच लें कि साधु की पोशाक पहनेंगे तो बंधन से मुक्त हो जाएंगे। मुक्ति पोशाक से नहीं, अपितु हमारी विचारधारा, भावधारा में साधुता आएगी तो मिलेगी। कुशल व्यक्ति न बँधा हुआ है और न मुक्त है। कुशल का अर्थ होता है जिसने आठ कर्मों एवं घाती कर्मों को नष्ट कर लिया वह कुशल माना गया है अर्थात् शरीर में रहते हुए अखिंड भगवान न बँधे हुए हैं और न ही मुक्त हैं। जिसने मोह को नष्ट कर दिया वह मुक्त हो जाएगा। संसार में बोकने वाला मोह कर्म है। मोह कर्म दूर हो जाता है तो ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, अंतराय - ये तीनों कर्म नष्ट हो जाएंगे। आरंभ व परिग्रह बंधन के कारण हैं। श्रावक के तीन मनोरथों में यह पहला मनोरथ है - वो दिन मेरा धन्य होगा जिस दिन मैं आरंभ-परिग्रह का त्याग करूँगा। आरंभ-परिग्रह कीचड़ हैं, जिनमें पाँव फँस जाता है तो निकलना बहुत मुश्किल हो जाता है। ये संसार में फँसाने वाले होते हैं। कुशल प्राणी तटस्थ भाव रखते हैं। जो धर्म तत्त्व को जान लेता है वह उसको कीमत दे पाता है। जिसने धर्म तत्त्व को नहीं जाना वह धर्म तत्त्व को महत्त्व नहीं दे पाएगा।” संयती राजा चारित्र भाग की सुंदर व्याख्या आचार्य भगवन् ने फरमाई।

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने ‘धन्य-धन्य वो क्षण कब आए’ वैराग्य गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि हमें जिनशासन मिला है, महान गुरु राम मिले हैं तो इस अवसर का लाभ उठाएँ और अपनी आध्यात्मिक शक्ति का विकास करें। संसार में सब पुद्गल हैं। इनके आकर्षण से बचें।

नाई गाँव संघ ने उत्क्रांति का संकल्प लेकर अपना नाम उत्क्रांति ग्राम के रूप में स्वर्णाक्षरों में अंकित करवाया। धर्मपरायणा 99 वर्षीय सुश्राविका मोहनी देवी मूलचंद जी बुच्चा के निधन पर परिवारजनों ने गुरुचरणों में आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। अन्य अनेक शुभ संकल्प हुए। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्रीगण सहित सैकड़ों गुरुभक्तों ने दर्शन-सेवा का लाभ लिया। षट्स तप में कई भाई-बहन बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं।

मुनि सदा जागृत रहते हैं

23 अगस्त 2024 प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना में पंच परमेष्ठी का गुणगान कर उपस्थित जनों ने अपना मन पावन किया। तत्पश्चात् प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा में ज्ञानालोक से चेतना को जागृत करने हेतु व्यसनमुक्ति के प्रणेता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “जो भ्रमुनि है अर्थात् मुनि नहीं है, वो सोया हुआ है। मुनि सदा जागृत रहते हैं। शयन दो प्रकार का माना गया है। एक तो द्रव्य से शयन

और दूसरा भाव से शयन। अज्ञान में जीना भाव से शयन है। प्रमाद में जीना भाव से शयन है। आत्मा का विस्मरण व भाव से शयन वाला अच्छा मुनि नहीं है। वह अमुनि है। वह प्रमाद व अज्ञान में जीता है। मुनि का जागृत होना अर्थात् मन में, विचारों में क्या घटित हो रहा है, मन में क्या प्रतिक्रिया चल रही है, उन सभी के प्रति जागृत होना है। भगवान ने बहुत सुंदर बात कही है कि आप देखो, प्रतिक्रिया मत करो। अगर अपने दोषों को देखोगे तो धीरे-धीरे वह दोष वहाँ से हट जाएँगे। मुनि इसलिए जागृत है कि वह अपने मन की अवस्था को देखने की कोशिश कर रहा है कि मेरे मन में क्या चल रहा है। हमारे भीतर समभाव नहीं है, क्षमाभाव नहीं है तो हम कितना भी विचार करेंगे तो भी अपने भीतर पड़े हुए दागों को धोने में समर्थ नहीं होंगे। धर्म मार्ग व कल्याण मार्ग को सुनकर जानना कि मेरा धर्म और मेरा पाप क्या है। यह जिसको ज्ञात हो जाता है वह सदा जागृत रहता है। मुनि सदा जागृत रहते हैं क्योंकि वे किसी का अहित नहीं सोचते। जो किसी का अहित नहीं सोचते वे अपना व दूसरे का भी हित सोचते हैं। दूसरों का अहित सोचने से अपना अहित होता है। सबके हित एवं सभी जीवों को सुखी बनाने की कामना या उत्कृष्ट भावना तीर्थकर नाम कर्म का उपार्जन करने वाला बना सकती है।” आचार्य भगवन् ने संयंती राजा के चारित्र भाग की सुंदर व्याख्या प्रस्तुत की।

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि गुरु दर्शन व सान्निध्य से मन शांत, पवित्र और निर्मल बन जाता है। जिनके मात्र दर्शन से संयम का बोध होता है। समता संस्कार पाठ्यक्रम शिविर में साध्वीश्री जी ने विशेष मार्गदर्शन दिया।

मुमुक्षु हर्षाली जी कोठारी की दीक्षा 3 दिसंबर 2024 एवं मुमुक्षु ज्योति जी कांठेड़ की दीक्षा 7 फरवरी 2025 के लिए घोषित

आत्मा की आवाज को सुनकर संयम मार्ग पर अग्रसर होने वाली 28 वर्षीय सॉफ्टवेयर इंजीनियर **मुमुक्षु बहन हर्षाली जी कोठारी** सुपुत्री अशोक कुमार जी-ऊषा देवी कोठारी, सुपौत्री हीरालाल जी-प्रकाश बाई कोठारी, ब्यावर की जैन भागवती दीक्षा हेतु पारिवारिकजनों ने परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् व बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर के पावन चरणों में अनुज्ञा-पत्र समर्पित किया। संपूर्ण सभा हर्ष-हर्ष, जय-जय एवं जयवंता-जयवंता के साथ ‘राम गुरु विराट हैं, दीक्षाओं का ठाठ है’ आदि जयघोषों से गूँज उठी। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके समस्त आगारों सहित **3 दिसंबर 2024** के लिए दीक्षा प्रदान करने की स्वीकृति प्रदान की।

इसी क्रम में 26 वर्षीय **मुमुक्षु बहन कु. ज्योति (दिशा) जी कांठेड़** सुपुत्री राजमल जी-टीना जी, सुपौत्री बाबूलाल जी-चंदा जी कांठेड़, गाँव बाड़ी, निम्बाहेड़ा की दीक्षा हेतु परिजनों ने गुरुचरणों में अनुज्ञा-पत्र समर्पित किया। पुनः संपूर्ण धर्मस्थल जय-जयकारों से गूँज उठा। आचार्य भगवन् ने महत्ती कृपा कर दीक्षा हेतु रखे जाने वाले आगारों सहित **7 फरवरी 2025** के लिए स्वीकृति प्रदान की।

एक अलग कार्यक्रम में साधुमार्गी जैन संघ, भीलवाड़ा व शाखाओं द्वारा मुमुक्षु बहनों एवं परिजनों का शॉल व माला आदि से बहुमान किया। मुमुक्षु बहनों ने कहा कि संयम में जो आनंद है वो और किसी चीज में नहीं है। संयम में सच्चा सुख है। भौतिक चीजों में मात्र सुखाभास है। आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर व परिजनों के आशीर्वाद से हम इस महान संयम पथ पर आगे बढ़ रहे हैं।

हम दीर्घदृष्टा बनें

24 अगस्त 2024 भीलवाड़ा का कण-कण गुरुवचनों से पावन हो रहा है। प्रातःकाल से ही हर कोई अपने जीवन को धर्म के मार्ग पर अग्रसर करने हेतु धर्मस्थान में उपस्थित हो गुरु सान्निध्य का लाभ ले रहा है। मंगलमय प्रार्थना पश्चात् धर्मसभा का आयोजन किया गया। विहंगम धर्मसभा की छटा अपने आप में निराली प्रतीत हो रही थी। उपस्थित सैकड़ों गुरुभक्तों की दृष्टि एकटक आचार्य भगवन् के पावन श्रीमुख के दर्शनों हेतु अटकी हुई थी। उस पावन विभूति के दर्शन कर सभी अपने आपको धन्य महसूस कर रहे थे।

धर्मसभा को अपनी पीयूषवर्षिणी वाणी से पावन करते हुए ज्ञान-ध्यान के बेजोड़ संगम आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “साधु भ्रागम की भ्राँख वाला होता है। जो भ्रागम की भ्राँखों से देख चुका है वो उत्तम होगा, श्रेष्ठ होगा। यदि अपने जीवन में शांति-समाधि चाहते हैं तो तीर्थकर भगवान की वाणी का श्रवण करें। वही शांति व समाधि देने वाली है। उस वाणी का बोध हमारे भीतर जागृत होना चाहिए। हमारा चिंतन-मनन होना चाहिए। यदि उसको समझकर स्वीकार करने की दिशा में गतिशील नहीं होते हैं तो वह सूत्र कितना ही महत्त्वपूर्ण क्यों न हो, हमारे काम का नहीं है। हम उसको उपयोग लेने में समर्थ नहीं होंगे। यतना, धर्म, ज्ञान की भ्राँख से देखा जाएगा तो उस समय वह दिव्य विचार के रूप में प्रकट होंगे। यदि हमारे विचारों में दिव्यता नहीं हो तो भ्राँखें कैसी हों? ‘भायत चक्खु, दीर्घ दृष्टि’। भागे की बात को जानने वाले को हम दीर्घ द्रष्टा कहते हैं। भाने वाले समय में क्या होने वाला है, उसको पहले ही जान लेता है वह दीर्घ द्रष्टा है। भगवान कहते हैं कि तुम जितने कम साधन रखोगे उतने ही ज्यादा सुखी रहोगे। हमारी विचारधारा साधनों की तरफ ज्यादा दौड़ेगी तो हमारा मन बिखरेगा। कम विकल्प होंगे तो मन कम बिखरेगा। हमारी दृष्टि दीर्घ बने, हम लंबी दृष्टि से सोचें कि संसार में जन्म-मरण के प्रवाह में चलना है या इससे बाहर निकलना है।”

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि धन, परिवार कोई भी हमें बचाने वाला नहीं है। आपका आयुष्य बल ही आपको बचा सकता है। हम छोटी-सी जिंदगी में श्रेष्ठ कार्यों को अंजाम दें। माता-पिता को प्रणाम किए बिना पानी ग्रहण नहीं करने का संकल्प हजारों गुरुभक्तों ने लिया।

राष्ट्रीय युवा शिविर समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष के नेतृत्व में एवं ‘स्वर्ण कुंभ’ महिला शिविर महिला समिति की राष्ट्रीय अध्यक्ष के नेतृत्व में देश के अनेक स्थानों से पधारे हजारों युवकों व महिलाओं ने भाग लेकर महापुरुषों से नई ऊर्जा प्राप्त की। आलोक सेकेंडरी स्कूल में व्यसनमुक्ति संस्कार जागरण कार्यक्रम संपन्न हुआ।

सबसे बड़ा ऊर्जा स्रोत गुरु हैं

25 अगस्त 2024 आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त विशेष आयाम रविवारीय समता शाखा में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लेकर समता शाखा की आराधना की। तत्पश्चात् प्रवचन सभा में जन-जन के जिज्ञासु मन को आगम तथ्यों से सरल करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी सिंहगर्जना में फरमाया कि “जो भी ऊर्जा के स्रोत हैं, उनमें सबसे बड़ा स्रोत गुरु हैं। गुरु जो ऊर्जा देते हैं वह कायम रहती है। पाँवर हाउस में जितना उत्पादन होता है उतनी ही बिजली आएगी। धन से प्राप्त ऊर्जा भी धन खर्च होते ही खत्म हो जाती है।

गुरु जो ऊर्जा हमें प्रदान करते हैं वो ऊर्जा बढ़ती रहती है। गुरु द्वारा प्राप्त ऊर्जा सम्यग्ज्ञान की ऊर्जा है, जिससे हम अपने जीवन को अच्छे से समझ सकें। हमारी समझदारी से बड़ी समझ गुरु से प्राप्त होती है। आत्मा का कल्याण कैसे हो? आत्मा का महत्त्व ज्यादा या शरीर का महत्त्व ज्यादा? परिवार का महत्त्व ज्यादा या मान-प्रतिष्ठा, धन का महत्त्व ज्यादा? कीमत किसकी ज्यादा है? हमारी शक्ति, समय कहाँ लग रहे हैं? हमारी धर्म क्रियाएँ आत्मा के लिए हैं या मात्र लोगों पर प्रभाव डालने के लिए? हमारे विचारों की जड़ों में क्या है? हम वैराग्य की भावना में जी रहे हैं या दुनिया की देखादेखी में जी रहे हैं?”

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने ‘**मन मंदिर आप विराजो**’ भक्ति गीत के साथ फरमाया कि संघ सेवा एक साधना है। जो व्यक्ति अपने अहंकार को छोड़कर संघ सेवा कर सकता है, वही धन्य है। यह न सोचें कि संघ ने हमारे लिए क्या किया। 1 सितंबर (पर्युषण पर्व प्रारंभ दिवस) से तेला करने और **1008 तेला तप** का अर्पण गुरुचरणों में करने का आह्वान आपश्री जी ने दोहराया। अनेक भाई-बहनों ने तुरंत ही तेला तप करने के प्रत्याख्यान लिए।

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने ‘**संयम के भाव आज जगो, मेरे नाम के आगे राम लगे**’ भजन प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि अनाथी मुनि की तरह वैराग्य भाव जागृत करें।

राष्ट्रीय युवा शिविर एवं महिला शिविर में उपाध्याय प्रवर व अन्य चारित्रात्माओं ने प्रतिभागियों को विशेष मार्गदर्शन दिया। बच्चों के रविवारीय शिविर में चारित्रात्माओं और शिक्षक-शिक्षिकाओं द्वारा सुंदर संस्कार प्रदान किए गए।

राष्ट्रीय युवा शिविर में बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने युवाओं को संबोधित करते हुए अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि “हमें ऊर्जावान बनना है। हमेशा ऊर्जा बनाए रखने के लिए अपनी इच्छाशक्ति को मजबूत रखना होगा। आगमों की हर गाथा में महान चमत्कार है।”

दुनिया में सबसे कठिन है अपने आपको बदलना

26 अगस्त 2024 | मंगलमय प्रातःकालीन प्रार्थना में प्रभु व गुरुचरणों में वंदन कर जीवन धन्य बनाने का सुअवसर प्राप्त किया। प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा में बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी-तेजस्वी वाणी में फरमाया कि “हमारा दुःख सुख में कैसे बदले और हमारा मन सदैव प्रसन्न भाव में कैसे रहे – इस हेतु उपाय खोजने और जीवन उत्थान का लक्ष्य प्रथम होना चाहिए। हमें सिर्फ अपने परिवार के बारे में विचार नहीं करना है। बचपन से लेकर आज तक हमने अपने शरीर और परिवार के लिए क्या नहीं किया, लेकिन क्या हमारे जीवन में शांति प्रकट हुई? क्या हमारे भीतर वैराग्य की भावना और प्रेरणा पैदा हुई? हम सुख में रहते हैं या तनाव में? तनाव, दबाव, चिंता, भय का दुष्परिणाम कैसर है। विज्ञान ने सुविधाएँ तो दी, लेकिन सुख नहीं दे पाया। सुख केवल हमारी आत्मा दे सकती है। भगवान व गुरुजनों की वाणी के आधार पर सुख व दुःख के कर्ता हम स्वयं हैं। हमें अपने आप पर भरोसा होना चाहिए। परिस्थितियों को बदलने में नहीं, अपितु अपने आपको बदलने हेतु शक्ति लगानी है। दुनिया में सबसे कठिन काम अपने आपको बदलना है। क्या हमारा स्वयं पर पूर्ण नियंत्रण है? हम जिस बात को अच्छा समझेंगे वही करेंगे, जिसे अच्छा नहीं समझेंगे वह नहीं करेंगे। सुखी वह है जो जैसा कहता है वैसा करता है। आज जन्माष्टमी है। श्रीकृष्ण की तरह हम भी धर्म दलाली (दीक्षा दलाली) में आगे आएँ।”

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संसार असार है। इसमें से हमें सार निकालना है। लोग कहते हैं कि जवानी कमाने-खाने के लिए है, बुढ़ापे में धर्म करेंगे। परंतु मौत कब आ जाएगी कोई पता नहीं है। देव, गुरु, धर्म की शरण लेकर जीवन का कल्याण करें। साध्वीवर्याओं ने 'बहुश्रुत पूज्य महान' भक्ति गीत प्रस्तुत किया।

माँ-बेटा अंशुम के षष्ठ षष्ठ मैरापन अशांति का मूल

मुमुक्षु संगीता जी पितलिया व मुमुक्षु वीरांशु जी पितलिया की
जैन भागवती दीक्षा 7 अक्टूबर के लिए घोषित

27 अगस्त 2024 | प्रातः मंगलमय प्रार्थना 'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान' स्वरों के साथ श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. ने करवाई। विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए उत्कृष्ट क्रिया के धारी आगमज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि "अशांति का मूल कारण मेरेपन की बुद्धि है। मेरेपन की बुद्धि का जो त्याग करता है उसके मेरेपन का भाव दूर होता है। इससे मन शांत हो समाधि में आ जाता है। मेरेपन का त्याग करने वाला मुनि ही मोक्षमार्ग को देखता है। जिसमें मेरेपन का भाव जमा रहता है, उसको मोक्षमार्ग दिखाई नहीं देता। कोई पदार्थ पास होने से मेरेपन की बुद्धि पैदा नहीं होती। जब उस पर अपना स्वामित्व स्थापित किया जाता है तो मेरेपन की बुद्धि पैदा होती है। जब यह भावना आती है कि यह मेरा है तो मेरेपन की बुद्धि जन्म लेती है। भगवान महावीर ने बताया कि सबसे पहले आरंभ एवं परिवग्रह का त्याग करो। जिस दिन इनको घटाने का ठान लेंगे उस दिन 'इदं न मम' 'यह मेरा नहीं है' का भाव सुदृढ़ हो जाएगा। जब तक बढ़ाएँगे तब तक 'यह भी मेरा है, वह भी मेरा है' करते रहेंगे, जिसका कोई अंत नहीं है। जिसने संयोगों का त्याग कर दिया, जिसने मेरेपन की बुद्धि का त्याग कर दिया, वह मुनि है।" 'वैराग्य ज्योत को प्रकटित करना है ज्ञानालोक से' में संयति राजा चारित्र भाग के माध्यम से प्रतिदिन आचार्य भगवन् नई-नई प्रेरणा प्रदान कर रहे हैं।

जैसे ही आचार्य भगवन् ने 50 वर्षीय मुमुक्षु श्रीमती संगीता जी विजयेंद्र जी पितलिया, हैदराबाद एवं मुमुक्षु वीरांशु जी पितलिया सुपुत्र विजयेंद्र जी संगीता जी पितलिया, हैदराबाद की जैन भागवती दीक्षा 7 अक्टूबर के लिए उद्घोषणा की, संपूर्ण सभा जयघोषों से गुंजायमान हो गई। एक अलग कार्यक्रम में मुमुक्षुओं एवं रमेश जी पितलिया सहित परिजनों का आत्मीय बहुमान तिलक लगाकर श्री साधुमार्गी जैन संघ, भीलवाड़ा द्वारा किया गया।

'जीतो' के प्रमुख पदाधिकारीगण एवं अन्य सदस्यगणों ने आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर के पावन चरणों में उपस्थित हो विशेष मार्गदर्शन प्राप्त किया। उपाध्याय प्रवर ने जीतो के स्थापना दिवस को 'विश्व नवकार दिवस' मनाने की प्रेरणा दी, जिसे सभी ने सहर्ष स्वीकार किया। जीतो इंटरनेशनल के साथ ही श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री एवं भीलवाड़ा चातुर्मास संयोजक आदि अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे। जीतो के प्रमुख सुखराज जी नाहर, सुभाष जी गुणवाल, प्रदीप जी राठौड़, पृथ्वीराज जी कोठारी, मनोहर जी मेहता, प्रकाश जी जैन, अभील जी वोहरा, कांतिलाल जी ओस्तवाल, मानक जी नाहर, विमल जी सिंघवी, राकेश जी मेहता, पंकज जी शाह, विनोद जी दुग्गड़, महेंद्र जी चोरड़िया आदि का भीलवाड़ा संघ द्वारा साहित्य आदि भेंट के साथ स्वागत-सत्कार किया गया। 'कर्म बंध और हमारा जीवन' शिविर में श्री गौरव मुनि जी म.सा. एवं साध्वी श्री छविप्रज्ञा जी म.सा. ने विशेष बोध प्रदान किया।

स्वार्थवृत्ति का करें त्याग

28 अगस्त 2024 प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना 'सुबह शाम की प्रभुजी के नाम की' की मधुर स्वरलहरी के साथ हुई। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए दया एवं करुणा के सागर आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि "अशांति का मूल कारण हमारी स्वार्थवृत्ति है। हमारी स्वार्थ भावना रहती है कि मेरा काम हो जाना चाहिए, मुझे साता मिलनी चाहिए। अपनी स्वार्थ दृष्टि ही अशांति का कारण है। दुनिया में जितनी भी आत्माएँ हैं, उनमें से एक भी आत्मा ऐसी नहीं है जो हमारे माता-पिता, पुत्र-पुत्री, पति-पत्नी नहीं बनी हो, ऐसा कोई भी रिश्ता नहीं है जिसके साथ हमने संबंध स्थापित नहीं किए हैं और एक भी ऐसा रिश्ता नहीं है जो उस आत्मा के साथ नहीं जुड़ा हो। अनंतानंत बार ये रिश्ते हमारी आत्मा के साथ हो चुके हैं। हम सिर्फ एक माता-पिता मान लेते हैं। बाकी सारी आत्माएँ भी हमारे माता-पिता बने हैं। किसको तारें, किसको मारें, किसको पार उतारें, यह दृष्टि जब जागृत होती है तो उसके भीतर सहज ही यह बोध होता है कि कोई भी मेरा नहीं है। यह यथार्थ है कि मेरा कोई अपना नहीं है। संयोग का वियोग निश्चित है। ज्ञाता द्रष्टा भाव उसका अपना है। शरीर भी पदार्थ है, पुद्गलों के संयोग से शरीर का निर्माण हुआ है।" संयति राजा चारित्र भाग की सुंदर व्याख्या आचार्य भगवन् ने फरमाई।

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि धन्य हैं वे माता-पिता जो बचपन में अपनी संतानों में सुंदर संस्कारों का बीजारोपण करते हैं। गुरु की आँखों में चक्रवर्ती, कलक्टर, कमिशनर, मिनिस्टर, इंजीनियर, सी.ए. की वैल्यू नहीं हैं, संयम की वैल्यू है। साध्वी मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। वीर माता केशर बाई जेठमल जी दुगड़ (सोमेसर/मल्कानगिरी) ने आत्मबल का परिचय देते हुए मासखमण तप का प्रत्याख्यान आचार्य भगवन् के श्रीमुख से लिया।

चातुर्मास पश्चात् आगामी दीक्षा प्रसंग की विनती श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, विजयनगर ने गुरुचरणों में प्रस्तुत की। दोपहर में आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, जिज्ञासा-समाधान आदि कार्यक्रम हुए। 'कर्म बंध और हमारा जीवन' शिविर का क्रम जारी रहा।

श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. के 25 की तपस्या, श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. के 18 की तपस्या, साध्वी श्री निर्जरा श्री जी म.सा. के 24 की तपस्या सहित कई तपस्याएँ गतिमान हैं। बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के 7 उपवास का पारणा सानंद संपन्न हुआ।

मुनित्व राग-द्वेष शिथिल करवा है

29 अगस्त 2024 प्रातः मंगलमय प्रार्थना में प्रभु व गुरु आराधना की गई। तत्पश्चात् 'कर्म बंध और हमारा जीवन' शिविर में श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने कर्मों के बंधन तथा उनसे दूर होने के उपायों की महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए साधना के शिखर पुरुष आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि "भगवान महावीर का उपदेश आगमों में उपलब्ध है। झट्टाई हजार वर्ष व्यतीत होने के बावजूद भी आज, कल और आने वाले समय में प्रासंगिक रहेगी। एक-एक वचन बड़े महत्त्वपूर्ण हैं। उनमें रहे हुए भावों को आत्मसात करने की जरूरत है। आचार्यांग सूत्र में वर्णित है कि मौन क्या है। यहाँ मौन का अर्थ मुनित्व व ज्ञान से लिया गया है। मुनि कर्म शरीर को धुनो। औदारिक शरीर का जन्म

श्री कार्मण शरीर से होता है। यदि कार्मण शरीर नहीं रहा तो मोक्ष हो जाएगा। धन-संपत्ति, वैभव साथ में जाने वाले नहीं हैं। हमारे शुभाशुभ कर्म साथ में जाने वाले हैं। जीव चारों गति में हो कार्मण शरीर उसके साथ में रहेगा। मोक्ष गति में कार्मण साथ में नहीं रहेगा। मुनित्व के लिए बताया गया है कि वह राग-द्वेष को शिथिल करे। क्रोध, मान, माया, लोभ का दमन करे। हमारे भीतर समभाव विकसित हो जाए तो आत्मा की सैनिक भ्रमल ही होगी।”

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि देव, गुरु, धर्म पर हमारी अटूट श्रद्धा होनी चाहिए। गुरुभक्ति कामना रहित होनी चाहिए। ‘पूज्य गुरुवर करते हैं शत-शत नमन’ गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत कर सबको भावविभोर कर दिया। शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने ‘मेरे गुरुवर महान’ गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

श्री साधुमार्गी जैन संघ, रतलाम ने चातुर्मास, दीक्षा, स्थिरवास आदि विनतियाँ गुरुचरणों में प्रस्तुत की। परम गुरुभक्त श्री सोभागमल जी मुणोत, रतलाम के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि अनेक कार्यक्रम हुए। ‘कर्म बंध और हमारा जीवन’ शिविर में साध्वी श्री छविप्रज्ञा जी म.सा. ने विशेष मार्गदर्शन प्रदान किया। स्थानीय विधायक अशोक जी कोठारी ने गुरुदर्शन सेवा का लाभ लेते हुए विभिन्न विषयों पर चर्चा की तथा विशेष मार्गदर्शन प्राप्त किया।

लोक संयोग अनुरक्ति का काण्ड

30 अगस्त 2024 | मंगलमय प्रार्थना ‘मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान’ भक्ति भावपूर्वक की गई। विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए करुणानिधि आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “वे वीर प्रशंसनीय हैं, जिनमें संयम से विलग भाव पैदा नहीं होता है। जो संयोग आपके दिमाग में बने रहते हैं उनसे आप उद्वेलित होंगे। लोक संयोग का मतलब है जो मेरे संस्कार में हैं, वे आगे आएँगे। मेरा परिवार, मेरे माता-पिता, मेरे भाई-बहन, मेरा पति, मेरी पत्नी जो भी लोक संयोग रहे, वे संयोग मेरे दिमाग में आएँगे तो मन विचलित होगा। मान-सम्मान, पूजा, प्रतिष्ठा, पद - ये सबारे लोक संयोग हैं। वे लोक संयोग हमारे संयम के प्रति भ्रति पैदा कराने वाले और विषयों के प्रति लगाव पैदा कराने वाले होते हैं। फिर संसार के प्रति अनुरक्ति पैदा होने लगती है। जब कोई मेरा नहीं है तो अनुरक्ति पैदा नहीं होगी। इसलिए लोक संयोग का त्याग करना जरूरी है। जो अपने में स्थित हो जाता है उसका मन रति-भ्रति में नहीं जाएगा। ईर्ष्या, द्वेष व मन की बीमारी को दूर करें।”

श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि यह मानव जीवन खाने, कमाने और परिवार चलाने व बढ़ाने के लिए नहीं मिला है, अपितु आत्मा से महात्मा, महात्मा से परमात्मा बनने के लिए मिला है। महान सद्गुरु राम गुरु के सान्निध्य में पर्युषण पर्व मनाने का हमें सौभाग्य मिला है। हम आठ दिन तक शुद्ध धर्मारधना करें। दुकान, व्यापार का त्याग करें। 1008 तैले का लक्ष्य पर्युषण पर्व के पहले, दूसरे, तीसरे दिन को पूरा कर गुरुचरणों में तपस्या समर्पित करें।

साध्वी श्री अरुणा श्री जी म.सा., साध्वी श्री मनीषा श्री जी म.सा., साध्वी श्री दिव्यप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री उपासना श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। समता महिला मंडल, ब्यावर ने विभिन्न प्रसंगों की विनती गुरुचरणों में अर्पित की। ‘कर्म बंध और हमारा जीवन’ शिविर में श्री गौरव मुनि जी म.सा. एवं साध्वी

श्री छविप्रज्ञा जी म.सा. ने विशेष ज्ञानार्जन करवाया। साध्वीवर्याओं में पचरंगी एवं श्रावक-श्राविका वर्ग में नवरंगी तप (उपवास, दया) का आगाज हुआ। षट्स तप निरंतर जारी है।

अनर्थ हिंसा से बर्ने

31 अगस्त 2024 | प्रातः मंगलमय प्रार्थना में 'मेरे प्यारे देव गुरुवर श्री जिनधर्म महान' की मधुर स्वरलहरी में गुरु गुणगान किया गया। विशाल धर्मसभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी को आत्मतत्त्व का सार समझाते हुए उत्क्रांति प्रदाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि "कर्म के मूल को जानो। कर्मों के नाम हमने जान लिए किंतु कर्मों के बंध के हेतु मिथ्यात्व, अविरत, प्रमाद, कषाय और योग हैं। ये कर्मों के पाँच निमित्त हैं। इन कर्मों के बंध से हिंसा का संबंध जुड़ा हुआ है। एक अर्थ हिंसा, एक अनर्थ हिंसा। प्रयोजन से जो हिंसा की जाती है वह अर्थ हिंसा है। जिस हिंसा की कोई आवश्यकता नहीं, जो शौक और मनोरंजन के लिए की जा रही है वह अनर्थ हिंसा है। मिथ्यात्व अवस्था में आदमी बहुत ज्यादा कर्मों के बंध करने वाला होता है। मिथ्यात्व के साथ अज्ञान, क्रोध, मान, माया, लोभ होते हैं। इस कारण से भारी कर्मों का आयात होता है। दूसरा यदि व्रत-प्रत्याख्यान नहीं करते हैं तो अव्रत की क्रिया लगती है। संसार में जितने प्राणी हैं उनमें हम भी एक भाग हैं। इसलिए जो भी पाप क्रिया होती है, अविरत के कारण हमें भी क्रिया लगती है। 'मानव का तन अनमोल मिला, व्रतधारी बनो, व्रतधारी बनो'। प्रमाद, कषाय एवं अशुभ योग से बर्ने।"

श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि छोटे-छोटे नियम, त्याग-प्रत्याख्यान से दैनिक साधना को आगे बढ़ाने में बल मिलता है। पर्युषण पर्व के अवसर पर अधिक से अधिक दया, संवर, पौषध, बेला, तेला, अठाई करने का लक्ष्य रखें।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि सिद्ध बनें और हर कार्य सिद्ध हो हमारी यही कामना रहती है। सिद्धि प्राप्त होगी आत्मशुद्धि से। आत्मशुद्धि के इस महान पर्व पर संसार के सभी जीवों के प्रति मैत्री भावों को आगे बढ़ाएँ। संसार के सभी प्राणी सुखी बनें ऐसी मंगल भावना भाएँ। 1008 तेले के लक्ष्य को पूर्ण कर गुरुचरणों में तप की अनुपम भेंट चढ़ाएँ।

साध्वी श्री कल्पना श्री जी म.सा., साध्वी श्री जयघोषा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने 'भक्ति में विभोर हो, भक्तों का मन बोल' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। चारित्रात्माओं के अलावा श्रावक-श्राविका वर्ग में तप-त्याग के अनेक प्रत्याख्यान हुए। स्कूलों में व्यसनमुक्ति कार्यक्रम करवाए गए। दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि धार्मिक आयोजन किए गए। 'कर्म बंध और हमारा जीवन' शिविर में साध्वी श्री छविप्रज्ञा जी म.सा. ने आठ कर्मों का विवेचन व उनसे बचने के उपाय बताए। 1 सितंबर से महापर्व पर्युषण की आराधना महापुरुषों के सान्निध्य में करने हेतु जन-जन में अपूर्व उत्साह बना हुआ है। 200 पच्चक्खाण और महत्तम शिखर महोत्सव के अंतर्गत अभिरामम् आनंदम् आदि कई कार्यक्रमों के प्रति लोगों में उत्साह व उल्लास चरम पर है।

महावीर भवन, भीलवाड़ा शहर संघ की विनती को ध्यान में रखते हुए आचार्य भगवन् ने पर्युषण पर्व के अवसर पर महावीर भवन में साध्वीवर्याओं के प्रवचन आदि कार्यक्रम की स्वीकृति प्रदान कर अपूर्व कृपा का वर्षण किया। संपूर्ण भीलवाड़ा एवं आस-पास तथा देश के अनेक भागों से आगत गुरुभक्त आध्यात्मिक रंग में रंगा हुआ है।

तपस्या सूची

संत-सती वर्ग

| | | |
|--------------------------------------|-----------------------------------|-----------------|
| बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर | श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. | 21 उपवास |
| श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. | साध्वी श्री निर्जरा श्री जी म.सा. | 28 उपवास (जारी) |
| श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. | 7 उपवास | 30 उपवास |

श्रावक-श्राविका वर्ग

| | | |
|----------------------|---|--|
| आजीवन शीलव्रत | डालचंद जी बसंता जी खारीवाल-बड़ामहुवा, निर्मल जी कांकरिया-गोगेलाव, प्रेमचंद जी प्रेम देवी खींवसरा, मंजू जी सुरेंद्र जी पोखरना-चेन्नई, कैलाश जी बापना-उदयपुर, जीवनलाल जी शांति कँवर जी-पाली, इंदरचंद जी बुच्चा-कूचबिहार, सुरेंद्र जी चंदा देवी कोठारी-नाई गाँव, कमलचंद जी लक्ष्मी देवी रांका-लाला बाजार, सतीश जी प्रमिला जी पारख, नेमीचंद जी उर्मिला जी जैन-कोटा, सुनील जी सुनीता जी कोठारी-इंदौर, हनुमानमल जी निर्मला देवी डागा-गंगाशहर, ओमप्रकाश जी इंदिरा देवी जैन-इंदौर, तेजपाल जी जारोली-चित्तौड़गढ़, पुखराज जी कांति बाई संचेती, डॉ. सुरेंद्र जी चंद्रकला जी मनोत-बीकानेर/सूरत, अशोक कुमार जी बच्छावत-कोलकाता, ओमप्रकाश जी शर्मा-अजमेर, संपत सिंह जी पगारिया-जोजवा, दलपत सिंह जी हींगड़ | |
| पौषध | वर्ष में 120 - विजय जी सांड-देशनोक | |
| संवर | 100 - मंजू जी नागौरी-मुंबई/भीलवाड़ा | |
| पक्की नवकारसी | आजीवन - कंचन जी आँचलिया-दिल्ली 300 - किशोर जी राठौड़-नागदा 250 - दिलीप जी बोहरा-नागदा | |
| सामायिक | वर्ष में 3100 - लालचंद जी रांका-सारोठ | |
| वर्षांतप | हर्षा जी बंब-बूँदी, सुरेश जी आशा जी मालवीय-रतलाम | |
| उपवास | 51 - अजय जी दक-उदयपुर 31 - पुलकित जी गुलगुलिया-पुणे, अंजु जी लोढ़ा-बड़ीसादड़ी 30 - पिंकी जी मेहता-उदयपुर 24 - मयंक जी सोनावत-गंगाशहर 23 - रीता जी गोखरू 21 - वीर पिता इंदरचंद जी बोथरा-सूरत (35 के प्रत्याख्यान), रंजिता जी कांकरिया 17 - किरण कुमार जी हिंगड़-रायपुर (भीलवाड़ा) (31 के प्रत्याख्यान) 13 - विजय कुमार जी सांड-देशनोक (जारी) 11 - कैलाश बाई बलाई-बाड़ी अठार्ह - नीलू जी ओरडिया, मोतीलाल जी गोलछा | |

अन्य कई गुप्त तपस्याएँ जारी...

-महेश नाहटा ❤️❤️❤️

संक्षिप्त परिचय

| | |
|---------------------|---|
| निवास स्थान | : हैदराबाद (तेलंगाना) |
| जन्म दिनांक | : 10 जुलाई 2007 |
| वैराग्यकाल | : लगभग 1 वर्ष |
| व्यावहारिक शिक्षा | : ग्यारहवीं |
| धार्मिक शिक्षा | : सामायिक, प्रतिक्रमण, जैन सिद्धांत बत्तीसी, श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र 1-4 अध्ययन, पुच्छिसु णं एवं कुछ अन्य थीकड़े। |
| धार्मिक परीक्षाएँ | : जैन संस्कार पाठ्यक्रम 1-3 |
| पदयात्रा | : लगभग 100 कि.मी. |
| संभावित दीक्षा तिथि | : 7 अक्टूबर 2024 |

मुमुक्षु श्री वीरांश जी पितलिया



पारिवारिक परिचय

| | |
|-------------------|---|
| दादाजी-दादीजी | : 'शासन गौरव' स्व. श्री पारसमल जी-स्व. श्रीमती सुंदर सरला देवी पितलिया |
| पिताजी-माताजी | : विजयेंद्र जी-मुमुक्षु संगीता देवी पितलिया (7 अक्टूबर 2024 को दीक्षा संभावित) |
| चाचाजी-चाचीजी | : रमेश जी-नीलम जी, दिलीप जी-विभा जी पितलिया |
| भुआजी-फूफाजी | : शोभा देवी-स्व. श्री प्रकाशचंद जी कटारिया (हुबली), स्व. श्रीमती मंजू देवी-प्रकाशचंद जी गाँधी (मैसूर), प्रतीक्षा देवी (पद्मा देवी)-रमेश जी गाँधी (मनमाड़), संगीता देवी-रीहित कुमार जी कटारिया (विजयवाड़ा) |
| भाई-बहन | : खुशी, वंश, मुस्कान, दिशा, चाहत पितलिया |
| नानाजी-नानीजी | : मंगलचंद जी-स्व. श्रीमती तारा देवी भलगट |
| मामाजी-मामीजी | : स्व. श्री गौतमचंद जी-स्व. श्रीमती चंद्रा देवी, अशोक कुमार-इंद्रा देवी, महावीर जी-विजया देवी भलगट (बेंगलुरु) |
| मौंसीजी-मौंसाजी | : चंद्रा देवी-अमृतलाल जी पटवा (मारवाड़ जंक्शन), संतोष देवी-सिद्धार्थ जी बोहरा (बेंगलुरु) |
| परिवार से दीक्षित | : साध्वी श्री कौमुदी श्री जी म.सा., साध्वी श्री रामांजना श्री जी म.सा. (संसारपक्षीय बहनें) |

विशेष : आपके साथ ही आपकी माताजी श्रीमती संगीता देवी पितलिया की दीक्षा भी संभावित

संक्षिप्त परिचय

| | |
|---------------------|---|
| जन्म स्थान | : बंगलुरु (कर्ना.) |
| मूल निवासी | : हैदराबाद (तेलंगाना) |
| जन्म दिनांक | : 11 जून 1974 |
| वैराग्यकाल | : लगभग 3 वर्ष |
| व्यावहारिक शिक्षा | : सातवीं |
| धार्मिक शिक्षा | : सामायिक, प्रतिक्रमण, जैन सिद्धांत बतीसी, श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र 1-4 अध्ययन, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र 1, 4, 9, 10, 11 व 28वाँ अध्ययन, श्रीमद् सुखविपाक सूत्र, तत्त्व का ताला ज्ञान की कुँजी तथा कुछ अन्य थोकड़े। |
| धार्मिक परीक्षाएँ | : जैन संस्कार पाठ्यक्रम भाग 1-11, श्रुत आराधक 1-2 |
| संभावित दीक्षा तिथि | : 7 अक्टूबर 2024 |

पारिवारिक परिचय

| | |
|------------------------|---|
| दादा ससुरजी-दादी सासजी | : स्व. श्री चंदनमल जी-स्व. श्रीमती रुकमनी देवी पितलिया |
| ससुरजी-सासजी | : 'शासन गौरव' स्व. श्री पारसमल जी-स्व. श्रीमती सुंदर सरला देवी पितलिया |
| धर्मसहायक | : विजयेंद्र जी पितलिया |
| देवर-देवरानी | : रमेश जी-नीलम जी, दिलीप जी-विभा जी पितलिया |
| ननद-ननदोई | : शोभा देवी-स्व. श्री प्रकाशचंद जी कटारिया (हुबली), स्व. श्रीमती मंजू देवी-प्रकाशचंद जी गाँधी (मैसूर), प्रतीक्षा देवी (पद्मा देवी)-रमेश जी गाँधी (मनमाड़), संगीता देवी-रोहित कुमार जी कटारिया (विजयवाड़ा) |
| पुत्र | : मुमुक्षु वीरांश जी पितलिया (7 अक्टूबर 2024 को दीक्षा संभावित) |
| देरुता, देरुती | : खुशी, वंश, मुस्कान, दिशा, चाहत पितलिया |
| दादाजी-दादीजी | : स्व. श्री हस्तीमल जी-स्व. श्रीमती सुंदर देवी भलगट |
| पिताजी-माताजी | : मंगलचंद जी-स्व. श्रीमती तारा देवी भलगट |
| चाचाजी-चाचीजी | : स्व. श्री अमरचंद जी-पवन देवी, स्व. श्री देवीचंद जी-रतन देवी भलगट |
| भुआजी-फूफाजी | : पिस्ता देवी-ताराचंद जी चनोदिया (हैदराबाद) |
| भाई-भाभी | : स्व. श्री गौतमचंद जी-स्व. श्रीमती चंद्रा देवी, अशोक कुमार-इंद्रा देवी, महावीर जी-विजया देवी भलगट (बंगलुरु) |
| बहन-बहनोई | : चंद्रा देवी-अमृतलाल जी पटवा (मारवाड़ जं.), संतोष देवी-सिद्धार्थ जी बोहरा (बंगलुरु) |
| नानाजी-नानीजी | : स्व. श्री राजमल जी-स्व. श्रीमती सायर देवी गुगलिया |
| मामाजी-मामीजी | : स्व. श्री अमरचंद जी-जेठी देवी (चेन्नई), स्व. श्री मूलचंद जी-सावित्री देवी (बंगलुरु), स्व. श्री मेघराज जी-लता देवी गुगलिया (चेन्नई) |
| मौंसीजी-मौंसाजी | : पुष्पा देवी-शांतिलाल जी भलगट (हैदराबाद), मंजू देवी-उत्तमचंद जी तपरावत (चेन्नई) |
| परिवार से दीक्षित | : साध्वी श्री कौमुदी श्री जी म.सा., साध्वी श्री रामांजना श्री जी म.सा. (संसारपक्षीय सुपुत्रियाँ) |

विशेष : आपके साथ ही आपके सुपुत्र मुमुक्षु वीरांश जी पितलिया की दीक्षा भी संभावित

मुमुक्षु श्रीमती संगीता देवी पितलिया



अंक्षिप्त परिचय

- जन्म स्थान : केतु कल्लां, जोधपुर (राज.)
जन्म दिनांक : 13 सितंबर 1999
वैराग्यकाल : लगभग 4 वर्ष
व्यावहारिक शिक्षा : एम.कॉम., सी.ए. फाइनल
धार्मिक शिक्षा : पुच्छिसु णं, श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र के 8 अध्ययन, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र के कुछ अध्ययन, रत्नाकर पच्चीसी, भक्तामर स्तोत्रम्, थोकड़े- जैन सिद्धांत बतीसी, अष्ट प्रवचन माता, 67 बोल, लघुदंडक, गति-आगति, जीवधड़ा, श्रीमत् प्रज्ञापना सूत्र व श्रीमद् भगवती सूत्र के कुछ थोकड़े, कर्म प्रज्ञप्ति तथा अन्य थोकड़े।
धार्मिक परीक्षाएँ : जैन सिद्धांत भूषण,
जैन सिद्धांत कोविद (एक प्रश्न-पत्र)
पदयात्रा : लगभग 300 कि.मी.
संभावित दीक्षा तिथि : 7 अक्टूबर 2024

मुमुक्षु सुश्री करुणा जी गुलेच्छा



पारिवारिक परिचय

- पड़दादाजी-पड़दादीजी : स्व. श्री पृथ्वीराज जी-स्व. श्रीमती हवा बाई गुलेच्छा
बड़े दादाजी-दादीजी : स्व. श्री मूलचंद जी-धाऊ बाई, स्व. श्री धनराज जी-जेठी बाई गुलेच्छा
दादाजी-दादीजी : रेखचंद जी-स्व. श्रीमती कमला देवी गुलेच्छा
छोटे दादाजी-दादीजी : मलूकचंद जी-चंचल देवी गुलेच्छा
पिताजी-माताजी : हीरालाल जी-उषा देवी गुलेच्छा
चाचाजी-चाचीजी : मोतीलाल जी-गीता देवी, जसराज जी-कविता देवी, प्रकाश जी,
नरेश जी-श्रीदेवी गुलेच्छा
भुआजी-फूफाजी : संतोष देवी-भींवरज जी मालु, मोहिनी देवी-पारसमल जी मालु,
ललिता देवी-ललित जी सांखला
बहन-बहनोई : ललिता जी-आशीष जी कंवाड़
भाई, बहनें : रविंद्र, कपिल, विकेश, जिनेश, कनिष्क, दिव्यांश, पूजा, दिव्या, रिद्धी,
सिद्धी, रिवा गुलेच्छा
नानाजी-नानीजी : स्वरूपचंद जी-नारायणी देवी कीचर
मामाजी : वीरचंद जी, राजेंद्र कुमार जी, सुमेरमल जी, पारस जी कीचर, फलसुंड
परिवार से दीक्षित : मुख्य मुनि श्री महावीर कुमार जी - मामा (अन्य संप्रदाय)
पूज्य श्री संयम मुनि जी - भाई (अन्य संप्रदाय)
महासती श्री प्रथमा श्री जी - मौंसी (अन्य संप्रदाय)

संक्षिप्त परिचय

| | |
|---|--|
| निवास स्थान | : रोड अतरिया, खैरागढ़ (छ.ग.) |
| मूल निवासी | : भुगरा (राज.) |
| जन्म दिनांक | : 18 नवंबर 2005 |
| वैराग्यकाल | : 7 माह |
| व्यावहारिक शिक्षा | : बी.एससी. (प्रथम वर्ष) |
| धार्मिक शिक्षा | : पुच्छंसु गं, श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र |
| प्रथम अध्ययन, जैन सिद्धांत बत्तीसी, लघुदंडक, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र का नौवाँ अध्ययन, कर्म प्रज्ञप्ति का छठा अध्ययन एवं अन्य कई थोकड़े आदि। | |
| धार्मिक परीक्षाएँ | : समता संस्कार पाठ्यक्रम 1, 2, 3 |
| संभावित दीक्षा तिथि | : 7 अक्टूबर 2024 |

पारिवारिक परिचय

| | |
|-------------------------|--|
| पड़दादाजी-पड़दादीजी | : स्व. धूरचंद जी-स्व. श्रीमती धापू बाई नाहटा |
| दादाजी-दादीजी | : स्व. बिसनलाल जी-स्व. श्रीमती पोनी बाई नाहटा |
| पिताजी-माताजी | : स्व. दिलीपचंद जी-प्रमिला बाई नाहटा |
| बड़े पिताजी-बड़ी माताजी | : भंवरलाल जी-राधा बाई, घेवरचंद जी-स्व. श्रीमती कमला बाई, केवलचंद जी-स्व. श्रीमती गंगा बाई, स्व. माणकलाल जी-पेपो बाई, झुमरमल जी-शीभा बाई, हमीरमल जी-नगीना बाई, कैवललाल जी-पुष्पा बाई, रामलाल जी-उर्मिला बाई, राजेन्द्र जी-अनुपा बाई, गौतमचंद जी-निर्मला बाई नाहटा |
| चाचाजी-चाचीजी | : नारायणमल जी-सुवा बाई, रमेशचंद जी-चादेका बाई, रावलचंद जी-करिश्मा बाई, हेमराज जी-हीरो बाई नाहटा |
| भाई-भाभी | : नवीन जी-पूजा देवी, ललित जी-संजू बाई, नितेश जी-पायल जी, मिथलेश जी-पूर्वी जी नाहटा |
| बहन-बहनीई | : ऊषा बाई-संतोषचंद जी (गण्डई), कविता बाई-रावल कुमार जी (जगदलपुर), लक्ष्मी जी-राहुल जी (कुई) |
| भाई, बहन | : विजय, महेश, संतोष, महावीर, रोहित, श्रियांस, मनीष, रेखचंद, यतीष, गौरव |
| भतीजा, भतीजी | : रौनक, हर्षिता, रिद्धि, भव्य, तकक्ष |
| भांजा-भांजी | : अभिषेक, आस्था, यश, यन्तु |
| भुआजी-फूफाजी | : सुशीला बाई-इंदरचंद जी कीचर (फलसुण्ड), चमेली बाई-स्व. श्री संतोष जी बैद (खैरागढ़) |
| नानाजी-नानीजी | : स्व. श्री मनहरण जी-स्व. श्रीमती राजवती बाई |
| मामाजी-मामीजी | : प्रकाशचंद जी-सुनीता बाई |
| मौंसीजी-मौंसाजी | : स्व. श्रीमती निर्मला बाई-द्वारकालाल जी, ममता बाई-कृष्णचंद जी, दीपिका बाई-स्व. संजय जी (राजनांदगाँव) |

मुमुक्षु सुश्री काजल जी नाहटा



संक्षिप्त परिचय

| | |
|---------------------|---|
| निवास स्थान | : बेंगलुरु (कर्ना.) |
| मूल निवासी | : देवगढ़, राजसमंद (राज.) |
| जन्म दिनांक | : 12 मार्च 2007 |
| वैराग्यकाल | : लगभग डेढ़ साल |
| व्यावहारिक शिक्षा | : दसवीं |
| धार्मिक शिक्षा | : पुच्छिसु णं, श्री दशवैकालिक सूत्र 1-4 अध्ययन, श्री उत्तराध्ययन सूत्र 3, 4, 9, 10, 11, 17, 20, 31 अध्ययन, थोकड़े- जैन सिद्धांत बत्तीसी, लघुदंडक, गति-आगति, जीवधड़ा, भिक्षा के 110 दोष, 67 बोल, अष्ट प्रवचन माता आदि। |
| धार्मिक परीक्षाएँ | : जैन संस्कार पाठ्यक्रम 1-4, जैन सिद्धांत भूषण |
| तपाराधना | : नौ एवं तेला |
| पदयात्रा | : 100 कि.मी. |
| संभावित दीक्षा तिथि | : 7 अक्टूबर 2024 |

मुमुक्षु सुश्री जिया जी कोठारी



पारिवारिक परिचय

| | |
|-------------------------|--|
| पड़दादाजी-पड़दादीजी | : स्व. श्री मेघराज जी-स्व. श्रीमती गटू बाई कोठारी |
| बड़े दादाजी-बड़ी दादीजी | : स्व. श्री शांतिलाल जी-कंचन बाई कोठारी |
| दादाजी-दादीजी | : स्व. श्री प्यारेलाल जी-मंजू बाई कोठारी |
| पिताजी-माताजी | : प्रकाश जी-कविता जी कोठारी |
| बड़े पिताजी-बड़ी माताजी | : स्व. श्री भंवरलाल जी-प्रेमा बाई, पुखराज जी-कमला बाई, लादुलाल जी-ममता बाई, मूलचंद जी-कांता बाई, राजमल जी-संगीता बाई, मुकेश जी-विजेता बाई कोठारी |
| भाई, बहन | : यश, इशिका |
| भुआजी-फूफाजी | : संगीता जी-महेंद्र जी मांडीत, सपना जी-सुनील जी सामरा, रिंकू जी- देवेंद्र जी गन्ना |
| नानाजी-नानीजी | : भंवरलाल जी-कंचन बाई गन्ना |
| मामाजी-मामीजी | : अनिल जी-डिंपल जी, नरेश जी-मनीषा जी गन्ना |
| मौंसीजी-मौंसाजी | : वनिता जी-राकेश जी पितलिया, ममता जी-गौतम जी दक |

॥ जय गुरु नाना ॥

॥ जय महावीर ॥

॥ जय गुरु राम ॥



संघ समर्पण महोत्सव एवं 62वाँ वार्षिक अधिवेशन-2024



दिनांक : 2-4 अक्टूबर 2024

कार्यक्रम विवरण

स्थान : भीलवाड़ा

2 अक्टूबर 2024

बुधवार

दोपहर 11.45 बजे से

संघ विकास - सर्वांगीण विकास

संयुक्त बैठक

आमंत्रित : भारत के समस्त स्थानीय संघ अध्यक्ष-
मंत्रियों व क्षेत्रों के प्रतिनिधि

2 अक्टूबर 2024

बुधवार

रात्रि 7.30 बजे से

महत्तम शिखर सम्मेलन

आमंत्रित : साधुमार्गी परिवार एवं
सकल जैन समाज

3-4 अक्टूबर 2024,

गुरुवार-शुक्रवार

दोपहर 11.45 बजे से

सत्र-1 व सत्र-2

संयुक्त वार्षिक अधिवेशन

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

आमंत्रित : साधुमार्गी परिवार एवं सकल जैन समाज

4 अक्टूबर 2024

शुक्रवार

दोपहर 2:30 बजे से

वार्षिक आम सभा

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

आमंत्रित : समस्त साधारण-आजीवन सदस्य,
शीर्ष पदाधिकारी, पूर्व अध्यक्ष-महामंत्री-कोषाध्यक्ष,
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष-मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, कार्यसमिति
सदस्य, संयोजक मंडल सदस्य, विशेष आमंत्रित एवं
अंतर्गत संस्थाओं के सदस्य व पदाधिकारी

3 अक्टूबर 2024

गुरुवार

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

कार्यसमिति बैठक

सायं 7.30 बजे से

आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी,
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री,
प्रवृत्ति संयोजक, सह संयोजक,
संयोजन मंडल सदस्य,
आंचलिक प्रभारी, कार्यसमिति सदस्यगण
एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति

कार्यसमिति बैठक

सायं 7.30 बजे से

आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष/मंत्री,
प्रवृत्ति संयोजिका, सह संयोजिका, संयोजन मंडल सदस्य,
आंचलिक प्रभारी, संभाग प्रमुख, कार्यसमिति सदस्याएँ एवं
विशेष आमंत्रित सदस्याएँ

वार्षिक आम सभा

रात्रि 8.30 बजे से

आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष/मंत्री,
प्रवृत्ति संयोजिका, सह संयोजिका, कार्यसमिति सदस्याएँ,
पूर्व अध्यक्ष-महामंत्री, महिला समिति आजीवन-साधारण
सदस्याएँ, विशेष आमंत्रित सदस्याएँ

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

कार्यसमिति बैठक

दोपहर 3.45 बजे से

आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व मंत्री,
प्रवृत्ति संयोजक, राष्ट्रीय प्रभारिगण, कार्यसमिति सदस्यगण,
स्थानीय संघ एवं शाखा प्रमुख, लीड मंबर, विशेष
आमंत्रित सदस्य

वार्षिक आम सभा

सायं 7.30 बजे से

आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व मंत्री,
प्रवृत्ति संयोजक, कार्यसमिति सदस्यगण, स्थानीय संघ एवं
शाखा प्रमुख, लीड मंबर, विशेष आमंत्रित सदस्य
एवं समस्त युवा साथी

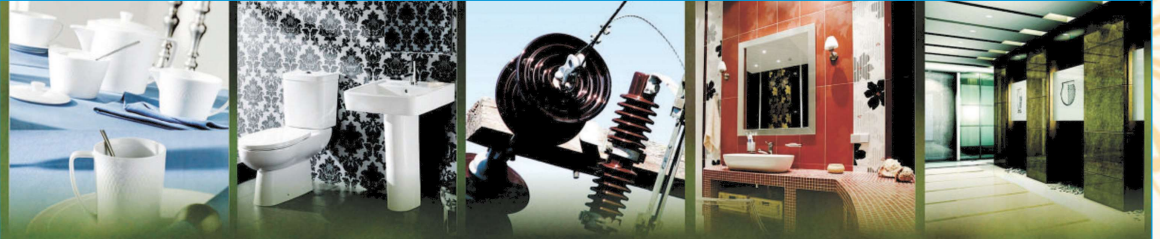
निवेदक

राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

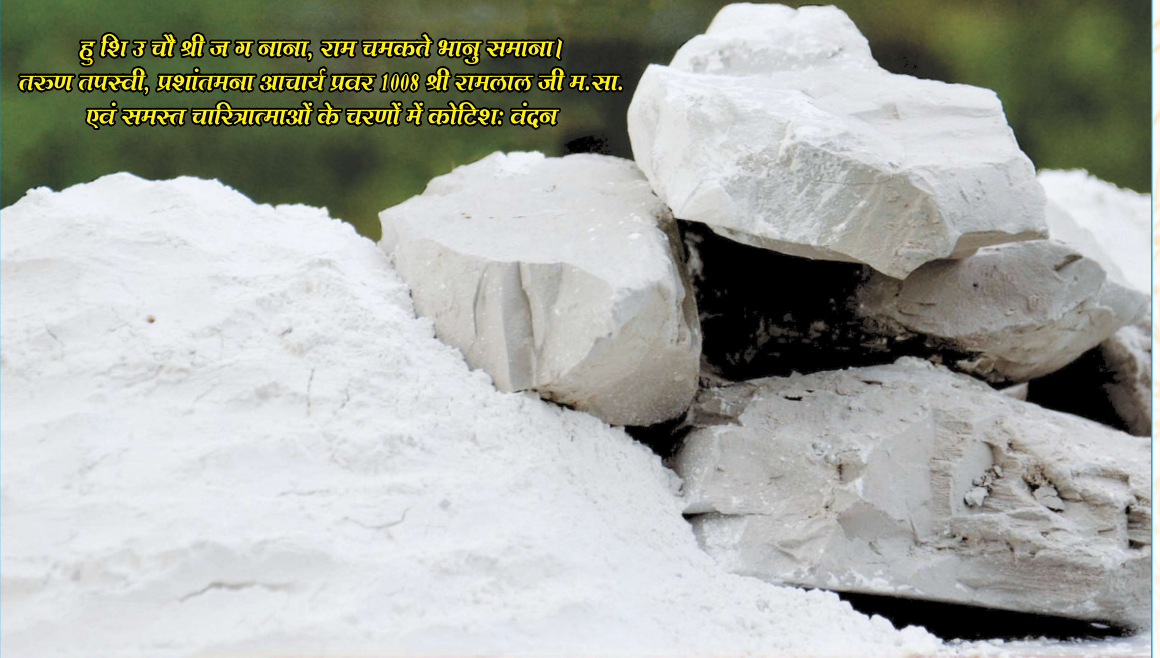
श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन समता युवा संघ



Serving Ceramic Industries Since 1965

हु शि उ चौ श्री ज न बाना, राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कीर्तिशः वंदन



A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

15-16 सितंबर 2024
www.sadhumargi.com

श्रमणोपासक

65



SIPANI MARBLES

STRONG - STYLISH - SOPHISTICATED

Royal Italian Marbles

AS PER ISI STANDARDS



WWW.SIPANIMARBLES.COM

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशान्तमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिश: वंदन!

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में 1,000/- (15 वर्ष के लिए)

विदेश हेतु 15,000/- (10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक 50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता 500/-

आजीवन सदस्यता 5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष (केवल भारत में) 3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से

कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

Account No. : 31264126681

IFSC Code : SBIN0003401

Branch : G.S. ROAD, Bikaner

Mob. : 7073311108

E-mail : accounts@sadhumargi.com

SCAN & PAY



व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

| | | |
|---|--------------|--|
| श्रमणोपासक | : 9799061990 | } news@sadhumargi.com |
| श्रमणोपासक समाचार | : 8955682153 | |
| साहित्य | : 8209090748 | : sahitya@sadhumargi.com |
| महिला समिति | : 6375633109 | : ms@sadhumargi.com |
| समता युवा संघ | : 7073238777 | : yuva@sadhumargi.com |
| धार्मिक परीक्षा | : 7231933008 | } examboard@sadhumargi.com |
| कर्म सिद्धांत | : 7976519363 | |
| परिवारांजलि | : 7231033008 | : anjali@sadhumargi.com |
| विहार | : 8505053113 | : vihar@sadhumargi.com |
| पाठशाला | : 9982990507 | : pathshala@sadhumargi.com |
| शिविर | : 7231833008 | : udaipur@sadhumargi.com |
| ग्लोबल कार्ड अपडेशन | : 6265311663 | : globalcard@sadhumargi.com |
| सामाजिक, संघ सदस्यता, सहयोग, समृद्धि, जन सेवा, जीव दया आदि अन्य प्रवृत्तियां | : 9602026899 | |
| शैक्षणिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, साहित्य संबंधी प्रवृत्तियां | : 7231933008 | |

-- सूचना --

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए संबंधित विभाग से ही संपर्क करें।

इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय - प्रातः 10:00 से सायं 6:30 बजे तक

लंच - दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर दें।

इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

जय गुरु नाना

जय महावीर
YOUR TRUST

जय गुरु राम



RAKSHA[®]

PIPES

OUR GUARANTEE

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND



FIRST IN INDIA

ISI FITTINGS WITH ADVANCED
CO-MOULDED DURO RING SEAL

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिशः वंदन!

Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand
SHAND GROUP OF INDUSTRIES

No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com



RAKSHA FLO

P.T.M.T TAPS & ACCESSORIES

Diamond
Dureflex

Diamond
DUROLON



Now with new
M.R.O.
Technology
Resists high impact



IS 15778:2007

CM/L NO: 2526149



LUCALOR
FRANCE

www.shandgroup.com

रक्षा – जीवन भर की सुरक्षा

www.rakshapipes.com

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।
प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25,000

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, बोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261

@absjainsangh



www.facebook.com/HOSadhumargi

